

ॐ
चीन की लोककथाएं



विचित्र
पंछी

H
33
V

चीन से हिन्दी में प्रकाशित लोकसाहित्य व बाल साहित्य

हिमकण याङ श्वो

आफन्ती के किस्से

तीन घमण्डी बिलियां येन वनचिड

बाल गड़ेरिया हाए वा ह्वा शान

चमकता लाल सितारा ली शिनथ्येन

इन्द्रधनुषी सड़क हू छी

जादू की तुम्बी चाङ थ्येनई

घुड़सवार मेढ़क

— चीन की लोककथाएं (भाग 1)

भैंसा और बाघ

— चीन की लोककथाएं (भाग 2)

मयूरकुमारी

— चीन की लोककथाएं (भाग 3)

सूर्य की ओर अभियान

— चीन की लोककथाएं (भाग 4)

जादुई खंजर

— चीन की लोककथाएं (भाग 5)

सात बहिनें

— चीन की लोककथाएं (भाग 6)

पुस्तकालय नगर परिषद
महु गौंव, महु जिला-इन्दौर, (म.प्र.)

प्रगति पुस्तक भण्डार
चिमन बाग चौराहा,
जेलरोड, इन्दौर-452 003

विचित्र पंद्धी

-चीन की लोककथाएं (भाग 7)

दाज से प्राप्त
स. क्रमांक 28389
म. प्र. की पु. इन्दौर

891.433 / IN
Story

ACC N. 249 250

विदेशी भाषा प्रकाशन गृह, पेइचिङ

प्रथम संस्करण 1988

अनुवादक : ह्वा इन
संपादक : पो ली

SKN

ISBN 7-119-00529-4

प्रकाशक : विदेशी भाषा प्रकाशन-गृह
24 पाएवानच्चाङ मार्ग, पेइचिङ

मुद्रक : विदेशी भाषा मुद्रणालय
19 पश्चिमी छकुङच्चाङ मार्ग, पेइचिङ

वितरक : चीन अंतरराष्ट्रीय पुस्तक व्यापार निगम
पो. आ. बाक्स 399, पेइचिङ

चीन लोक गणराज्य में मुद्रित

कथाक्रम

ली पाओ और छेछे	1
शहनाज और नूर	14
मछुए का बेटा शाऊतुङ	26
शिकारी हाएलीपू	43
चतुर लाल लोमड़ी	49
विचित्र पंछी	58
शंखवाला	65
चुकूइनेफाइ और खाड्मेइ चुमड्ची	76
हड्मेइ और सुनहरा हिरन	88
श्वे ता और इन लिङ	102
बहादुर गादवाई	111
लंबे वालों वाली बहन	125
मोला	135

SKV

ली पात्रो और छ्वेछ्वे

(हान जाति की लोककथा)

बहुत पहले एक लड़का था। उसका नाम था ली पात्रो। बचपन में ही उसकी मां चल बसी। वह सौतेली मां के साथ रहने लगा। देखते ही देखते ली पात्रो बड़ा हो गया। उसकी सौतेली मां की खाहिश थी कि घर की सारी जायदाद उसके सगे बेटे को ही मिले। इसलिए वह ली पात्रो पर अत्याचार करते हुए उसे मौत के मुंह में धकेलना चाहती थी।

एक दिन सौतेली मां ने झूठी दयालुता दिखाते हुए कहा, “पात्रो बेटे, अब तुम जवान हो गए हो, तुम्हें जल्दी ही शादी कर लेनी चाहिए। लेकिन हम बहुत गरीब हैं, किस की लड़की हमारे यहां आना पसंद करेगी? हमें ज्यादा धन जमा करने का उपाय सोचना चाहिए, ताकि तुम्हारी शादी हो सके।”

ली पात्रो का जवाब सुने बिना ही सौतेली मां ने आगे कहा, “आज मैं तुम्हें एक गाय और एक बैल दे रही हूं। तुम उन्हें चराने पहाड़ पर चले जाओ! एक सौ बछड़े पैदा होने तक वहीं रहना! उन्हें बेचकर उस पैसे से हम तुम्हारी शादी कर सकेंगे।... एक भी बछड़ा कम होने पर घर मत लौटना! अगर तुम लौटे, तो मैं तुम्हें घर के अंदर पांव तक न रखने दूंगी!”

यह सुनकर ली पात्रो की आंखों से आंसू टपकने लगे और दिल में संगीन चुभो देने जैसा दर्द हुआ। उसने सोचा कि ये गाय-बैल न जाने कितने अरसे में एक सौ वछड़े पैदा कर सकेंगे। पहाड़ पर भेड़ियों, बाघों, चीतों और शेरों के झुंड के झुंड इधर-उधर घूमते रहते हैं। पता नहीं, कब मैं और ये गाय-बैल उन खूंखार जानवरों का शिकार बन जाएं। उसे यह समझने में देर न लगी कि यह सौतेली मां की उसको मार डालने की साजिश है। लेकिन उसने सोचा कि उसे चले जाना चाहिए, बाघों या भेड़ियों का शिकार बनना इस घर में रहने से कहीं बेहतर होगा। इसलिए उसने दांत पीसकर पहाड़ पर जाने का फैसला कर ही लिया।

उसी दिन ली पात्रो कंधे पर वहंगी उठाकर गाय-बैल को चाबुक से हांकते हुए पहाड़ की ओर चल दिया। वहंगी में एक ओर खाना पकाने का सामान और दूसरी ओर एक फटी-पुरानी रजाई रखी हुई थी। वह चलते चलते एक पहाड़ की तलहटी में पहुंचा। वहां सूर्य की रोशनी काफी थी और हरी हरी घास उगी हुई थी। चश्मे का साफ पानी पत्थरों की दरारों के बीच से कलकल वह रहा था। चश्मे के आसपास हरे-भरे चीड़ों और देवदारों का घना जंगल था। जंगल के बीचोंबीच पत्थरों से बना एक पहाड़ी देवमंदिर था। मंदिर के अंदर दरवाजे और खिड़कियां सब ठीक-ठाक थे, लेकिन ऐसा लगता था कि वहां कोई नहीं रहता है। ली पात्रो ने कुछ तिनके बीनकर एक झाड़ू बांधा और मंदिर में सफाई की, सोने के लिए सूखी घासपत्तियों को दीवार के पास विस्तर के रूप में बिछा लिया, खाना पकाने के लिए तीन पत्थरों से एक चूल्हा बनाया और गाय-बैल को मंदिर के अंदर ही पश्चिमी ओर बांध दिया। बड़ा दरवाजा बंद कर देने से कोई जानवर अंदर नहीं आ सकता था। ऐसी अच्छी जगह मिलने से ली पात्रो शांति के साथ वहां रहने लगा।

एक दिन ली पात्रो नाश्ता करने के बाद गाय-बैल चराने के लिए पहाड़ की ढलान पर चला गया। वह चाबुक अपने पास ही रखकर जमीन

पर लेट गया और गाय-बेल की निगरानी करते हुए उसे नींद आ गई। वह जगा तो लगभग दोपहर हो चुकी थी। उसने उठकर एक अंगड़ाई ली और गाय-बेल साथ लेकर दोपहर का खाना पकाने के लिए मंदिर में लौटना चाहा। अचानक उसने एक बड़े पत्थर के पास सफेद सांप और सव्ज सांप को लड़ते देखा। दोनों सांपों के बीच इतनी भीषण लड़ाई हो रही थी कि



हार-जीत का पता नहीं चल पा रहा था। ठीक उसी मौके पर ली पात्रो ने छलांग मारकर निशाना साधते हुए चाबुक से दोनों सांपों के बीचोंबीच वार किया। दोनों सांप डरकर भाग गए। सब्ज सांप दक्षिणपश्चिम की ओर और सफेद सांप उत्तरपूर्व की ओर चला गया। देखते ही देखते दोनों सांप ओझल हो गए।

अगले दिन नाश्ता करने के बाद ली पात्रो फिर गाय-बेल चराने गया। एक पत्थर पर बैठते ही उसने अचानक किसी के चिल्लाने की आवाज सुनी, “ली पात्रो! ली पात्रो!” उसने सिर उठाकर देखा तो उसे वहां कोई भी नजर नहीं आया। उसने मन में सोचा कि इस वीरान पहाड़ पर आकर भेड़िये का शिकार बनने की किस में हिम्मत है? शायद गलतफहमी हुई है। लेकिन थोड़ी देर बाद फिर किसी ने उसका नाम लेकर आवाज दी।

ली पात्रो ने खड़े होकर कहा, “कौन है भैया! सामने आओ! मेरा मजाक न उड़ाओ!” उसका इतना कहना था कि उसके पीछे की ओर से एक आदमी ने उसके कंधे थपथपाते हुए कहा, “मैं यहां हूं!” ली पात्रो ने मुड़कर देखा तो वहां एक आदमी सब्ज कमीज, सब्ज पाजामा, सब्ज जूते और सब्ज टोपी पहने खड़ा था और वह ली पात्रो की ओर देखते हुए हंस्ता ही चला गया। इस पर ली पात्रो को बहुत हैरानी हुई, क्योंकि इस वीरान पहाड़ पर तो आदमी का नामोनिशान न था। आज कम से कम एक आदमी उससे बातचीत करने वाला तो हुआ। ली पात्रो की खुशी का ठिकाना न रहा।

“ली पात्रो! क्या तुम मुझे नहीं पहचानते हो! मेरा नाम छिड़छिड़ है। कल मैंने यहां पाएपाए के साथ लड़ाई लड़ी। अगर तुम मुझे न बचाते तो पाएपाए ने मुझे मार डाला होता। मैंने यह बात घर लौटकर अपने मां-बाप को बताई। आज मैं तुम्हें अपने घर चलने के लिए बुलाने आया हूं। अब मेरे साथ चलो!” छिड़छिड़ ने स्नेह से कहा।

“मैं नहीं जाऊंगा! मेरी गेरमौजूदगी में गाय-बेल की देखभाल कौन करेगा? अगर मेरे गाय-बेल बाहर भागकर बाघ या भेड़िये का शिकार

वन गए तो मैं क्या करूंगा ?” ली पात्रो ने कहा ।

“अगर तुम्हारे गाय-बेल गायब हो गए, तो मैं तुम्हें एक सौ गधे दूंगा,” छिड़छिड़ बोला ।

ली पात्रो को कोई जवाब न सूझा । उसने गाय-बेल को खूटे पर बांध दिया और वह छिड़छिड़ के साथ दक्षिणपश्चिम की ओर चल पड़ा । दोनों चलते समय बातचीत भी करते जा रहे थे । चलते चलते वे पहाड़ की एक गुफा के सामने पहुंच गए । छिड़छिड़ ने रुककर गुफा की ओर इशारा करते हुए कहा, “ली पात्रो ! यही मेरा घर है । आज मेरे पिता दावत के बाद तुम्हें कुछ उपहार भी देंगे । इस पहाड़ में चांदी और सोने का तो कोई उपयोग नहीं है । अगर कुछ लेना ही चाहो, तो दरवाजे के पीछे टंगा हुआ बेर के पेड़ का डंडा मांग लेना । वह जादुई डंडा मेरे खानदान की बहुत कीमती चीज है । तुम्हारा चीते, शेर, बाघ, भेड़िये या डाकू से सामना हो जाए तो तुम उस डंडे को आकाश की ओर फेंककर कहना, ‘जादू के डंडे ! जादू के डंडे ! रोव दिखाओ ! ली पात्रो की हिफाजत करो !’ इस पर वह डंडा उस खूंखार जानवर या डाकू को तुरंत मार डालेगा ।”

ली पात्रो छिड़छिड़ के साथ गुफा में गया । अंदर से गुफा बहुत विशाल और रोशनीदार थी । सामने एक बड़ा आंगन था । उसकी सब्ज ईंटों से बनी ऊंची दीवारें बहुत साफ-सुथरी थीं और आंगन का फाटक भी काफी बड़ा और ऊंचा था । फाटक के दोनों ओर पत्थर के दो बड़े रोवदार शेर बैठे थे । वे दोनों रोगन किए हुए फाटक के सामने पहुंचे ही थे कि फाटक एक झटके के साथ खुल गया । अंदर से सफेद दाढ़ी वाला बूढ़ा बाबा और सफेद वालों वाली एक बुढ़िया निकली और उन्होंने मुस्कराते हुए कहा, “ली पात्रो आए हैं ! हमारे बेटे को बचाने के लिए हम आपको बहुत बहुत धन्यवाद देते हैं ।” फिर वे बड़े स्नेह के साथ ली पात्रो को अपने अतिथि-कक्ष में ले गए ।

ली पात्रो हाथ-मुंह धोकर चाय पीने के बाद दावत में शामिल हुआ ।

दावत में तरह तरह के स्वादिष्ट पकवान थे। ऐसे पकवान भी थे जिन्हें ली पात्रो ने पहले कभी देखा तक भी न था। जमकर खा-पी लेने के बाद ली पात्रो विदा लेकर जाना चाहता था। वह बूढ़ा एक तश्तरी में चांदी के कुछ विस्कुट और एक तश्तरी में सोने के कुछ विस्कुट लाया तथा उसने ली पात्रो से कहा, “आपने मेरे बेटे की जान बचाई है। आपको धन्यवाद देने के लिए कोई बड़िया चीज तो नहीं है, सिर्फ यही छोटा सा उपहार स्वीकार करें!”

ली पात्रो बोला, “दूसरे की जान बचाना तो मेरा फर्ज है। आपने जो शानदार दावत दी, वह मैंने स्वीकारी है। फिर आपका उपहार मैं कैसे ले सकता हूं?”

“आपने हमारे बेटे को बचाया है, हमें आपके प्रति कृतज्ञता प्रकट करनी ही चाहिए।”

फिर भी ली पात्रो उपहार लेने के लिए तैयार न हुआ तो बूढ़े ने लाचार होकर कहा, “आप खुद ही देखें, हमारे यहां की कौन सी चीज आपको पसंद है और दो चीजें चुन लें। इससे आपके प्रति कृतज्ञता प्रकट करने की हमारी इच्छा पूरी हो जाएगी!”

ली पात्रो ने चारों ओर नजर दौड़ाई और देखा कि दरवाजे के पीछे वाकई एक चमचमाता डंडा टंगा हुआ था। उसने शर्माते हुए कहा, “आप मुझे वह डंडा दे सकते हैं! पहाड़ में अगर कोई जानवर टकरा जाए तो इससे अपनी हिफाजत कर सकूंगा।”

उस बूढ़े ने रुक-रुककर कहा, “अच्छा! इसे ले लें! यह आपकी हिफाजत करेगा, लेकिन आप इससे किसी बेकसूर की जान न लें! छिड़-छिड़ अपने आभारी को विदा करो!”

छिड़-छिड़ और ली पात्रो दोनों एक साथ चौराहे पर पहुंचे। छिड़-छिड़ ने हिचकिचाते हुए कहा, “ली पात्रो भैया! अब मैं सच बात तुम्हें बताता हूं। कल मेरी पाएपाए से लड़ाई इसलिए हुई कि मैं उसके घर से खीचान फूल का पौधा लेना चाहता था। उसने वह मुझे नहीं दिया और ‘काला

भूत' कहकर गाली भी दी। इस पर हम दोनों में लड़ाई हुई। मेरा ख्याल है कि पाएपाए तुम्हें दावत पर जरूर बुलाएगा। उसके घर वाले तुम्हारे प्रति कृतज्ञता प्रकट करने के लिए उपहार देना चाहें, तो उनके यहां से सिर्फ खीचान का पौधा ही लेना। उस पौधे का रहस्य मैं अभी तुम्हें नहीं बताऊंगा। वाद में तुम खुद ही समझ जाओगे। सिर्फ मेरी बात याद रखना। फिर मिलेंगे!" इतना कहकर छिड़छिड़ ने सिर घुमाया और फिर सब्ज सांप वन गया और हवा के झोंके की रफ्तार से दक्षिणपश्चिम की ओर चल दिया।

अगले दिन ली पाओ नाश्ता करने के वाद मंदिर से गाय-बैल को चराने बाहर ले जा रहा था तो उसने देखा कि काफी फासले पर एक नौजवान उसकी ओर चला आ रहा है। नौजवान के कुछ नजदीक आने पर पता चला कि वह सफेद कमीज, सफेद पाजामा, सफेद जूते और सफेद टोपी पहने हुए है। वह ली पाओ की ओर हाथ हिलाते हुए चिल्लाया, "ली पाओ! ली पाओ!"

ली पाओ ने मन ही मन सोचा कि यह शायद वही पाएपाए होगा जिसके बारे में छिड़छिड़ ने बताया था। उसने फौरन पूछा, "तुम कौन हो? तुम कैसे जानते हो कि मैं ली पाओ हूं?"

"मेरा नाम पाएपाए है। परसों आपने मुझे बचाया, क्या आप भूल गए? कल मैं आपको अपने घर आने के लिए आमंत्रित करने आया था। लेकिन आपसे नहीं मिल सका, सिर्फ आपके गाय-बैल यहां थे। आज फिर आपको बुलाने आया हूं। आइए, चलें!"

"मैं नहीं जा सकता। अगर मेरे गाय-बैल बाघ का शिकार बन गए तो मेरी सौतेली मां मुझे मारेगी!"

"डरें मत, अगर गाय या बैल में से एक भी गायब हुआ, तो मैं आपको एक सौ घोड़े दूंगा!" इस पर ली पाओ कोई बहाना न कर सका और वह पाएपाए के साथ उत्तरपूर्व की ओर चल पड़ा। पहाड़ों और चोटियों को पारकर वे एक गुफा के सामने पहुंचे। पाएपाए ने कहा, "यह मेरा घर है।"

वे दोनों गुफा के अंदर गए। थोड़ी दूर जाने पर ही एक विशाल मैदान नजर आया जहां तरह तरह के अजीबोगरीब फूल और पौधे उगे हुए थे। आकाश में दुर्लभ पक्षी उड़ रहे थे और जमीन पर अजीब जानवर चल-फिर रहे थे। वे रंगीन पत्थरों से बनाई गई एक पगडंडी पर चलते हुए कमल के फूलों से घिरे एक मंडप में पहुंचे। मंडप की खिड़कियों पर मरकत हरे रंग के रेशमी परदे लगे हुए थे। उन दोनों ने दरवाजे का परदा उठाया और अंदर जाकर बैठ गए। पाएपाए ने एक क्रिस्टल ग्लास में ठंडी चाय पेश करते हुए कहा, “ली पाओ भैया ! जरा बैठिए, मैं मां-बाप को बुला लाऊं !”

पाएपाए के चले जाने के बाद ली पाओ ने इधर-उधर नजर दौड़ाई — फर्श पर अमरपक्षी की ओर उड़ते सौ पक्षियों के डिजाइन वाली रंगीन टाइलें बिछी हुई थीं। मेज, कुर्सियों और स्टूलों समेत सभी फर्नीचर चमकदार लाल चंदन का बना हुआ था। मेज पर रखी सुराही और रंगबिरंगे प्यालों पर बने लाल लाल फूल और हरी हरी पत्तियां एकदम असली लगती थीं।

कदमों की आवाज सुनाई देने के साथ ही दरवाजे का परदा उठा और सफेद दाढ़ी वाला एक कुवड़ा बूढ़ा तथा सफेद बालों वाली एक कुवड़ी बुढ़िया अंदर आई। वे हंसते हुए बोले, “हमारा बेटा पाएपाए आपको बुलाने दो बार आपके यहां गया। अब आप आए हैं, बैठिए ! अगर आपने पाएपाए को न वचाया होता तो वह दो दिन पहले ही मर गया होता। बेटे ! जल्दी से शराब और पकवान लाओ !”

पहले दो दासियां आईं। उन्होंने मेज को ठीक-ठाक किया। थोड़ी देर बाद शराब तथा तरह तरह के स्वादिष्ट पकवान परोसे गए।

खाना खाने के बाद ली पाओ अपने गाय-बैल की देखभाल के लिए वापस जाना चाहता था। उसी समय पाएपाए के पिता ने ली पाओ को सोने के विस्कुटों से भरी एक तश्तरी और मोतियों से भरा एक डिब्बा देने की पेशकश की।

ली पाओ ने छिड़छिड़ के कहने के अनुसार ये चीजें लेने से विनम्रता

से मना कर दिया। उसने शर्माते हुए ग्वीचान के पौधे की ओर इशारा करते हुए कहा, “यह पौधा मुझे पसंद है, क्या मुझे इसे दे सकते हैं?”

यह सुनकर वह बूढ़ा किंकर्तव्यविमूढ़ हो गया और बुढ़िया की आंखों से आंसू टपकने लगे। पाएपाए अपने मां-बाप को खामोशी से देखता रहा। तभी ली पाओ बोला, “आप फिक्र न कीजिए। मैं यह पौधा नहीं लूंगा। मुझे जाना है।”

यह कहकर ली पाओ कदम बढ़ाते हुए जाने लगा तो पाएपाए ने तेजी से आगे जाकर उसका रास्ता रोक दिया। फिर उसने अपने मां-बाप से कुछ कानाफूसी की। उसके मां-बाप ने खुशी से सहमति प्रकट करते हुए ली पाओ से कहा, “ली पाओ! नाराज होकर न जाएं! इसका कारण है, लेकिन अभी आपको बता नहीं सकते। बाद में आपको खुद-व-खुद मालूम हो जाएगा। आपको यह पौधा पसंद है, तो ले लें!... हमें आशा है कि आप इसकी अच्छी तरह देखभाल करेंगे!” वे यह कहकर पाएपाए से बोले, “तुम पौधा लेकर ली पाओ को पहुंचाने जाओ!” उन्होंने एक बार फिर ली पाओ से कहा, “हरचंद कोशिश करके उसकी हिफाजत करें! यह पौधा आंधी और तूफान में मुरझा न जाए!”

पाएपाए पौधा उठाए ली पाओ के साथ गुफा से बाहर निकला। ली पाओ ने बार बार उसे वापस जाने की सलाह दी। वे दोनों चलते चलते उसी जगह पहुंच गए, जहां पाएपाए और छिड़छिड़ के बीच लड़ाई हुई थी।

पाएपाए ने पौधा ली पाओ को देते हुए कहा, “मुझे आशा है कि आप मेरे मां-बाप के कहने के मुताबिक इसकी अच्छी तरह देखभाल करेंगे!” पाएपाए ने इतना कहकर जेब से रुमाल निकालकर अपने आंसू पोंछे और बोला, “ली पाओ! फिर मिलेंगे!” उसने सिर घुमाया और फिर सफेद सांप बन गया और बड़ी तेजी से उत्तरपूर्व की ओर चल दिया।

ली पाओ अभी तक यह समझ नहीं पा रहा था कि इस पौधे की वजह से छिड़छिड़ और पाएपाए के बीच इतनी जबरदस्त लड़ाई क्यों हुई और बूढ़ा-बुढ़िया सोना और मोती तो उसे देने के लिए तैयार थे लेकिन वह

पौधा देना नहीं चाहते थे ।

ली पात्रो के हाथों में खीचान के पौधे का वजन बढ़ता ही जा रहा था और वह पसीने से तरबतर हो गया । वह उसे जमीन पर रखकर थोड़ा आराम करना चाहता था तो उसने अचानक देखा कि उसके गाय-बैल ने खींच-खींचकर अपनी रस्सी खोल ली है और उन्होंने उसे देखते ही पहले सूंघा और फिर जीभ से उसके हाथ को चाटा । उस समय सूरज डूबने वाला था । ली पात्रो ने सोचा कि गाय-बैल को प्यास लग गई होगी । उसने उन्हें चश्मे से पानी पिलाया । अचानक उसने पीछे की ओर से बुलाने की आवाज सुनी, “ली पात्रो ! ली पात्रो ! तुम मुझे छोड़कर क्यों जा रहे हो ?”



ली पात्रो ने सिर घुमाकर देखा कि मरकत हरे कपड़े पहने परी जैसी एक युवती उसको बुला रही थी । ली पात्रो को हैरानी के साथ साथ खुशी भी हुई, लेकिन उसे और कुछ भी पता न चला कि क्या बात है । वह सुंदर युवती मुस्कराते हुए बोली, “ली पात्रो ! मेरे मां-बाप और भाई की बातें तुम भूल गए हो ! तुम अपने गाय-बैल देखकर सब कुछ भूल गए ।”

ली पात्रो ने वड़े ताज्जुव से पूछा, “तुम कौन हो?”

“मेरा नाम छ्वेछ्वे है और मैं पाएपाए की वड़ी बहन हूं। तुमने जो खीचान का पौधा लिया था, मैं वही हूं।”

फिर वे चलते चलते मंदिर के सामने पहुंच गए। ली पात्रो ने गाय-बैल को खूँटे से बांधा और छ्वेछ्वे के साथ मंदिर में दाखिल हुआ। ली पात्रो शर्मते हुए अपना सिर झुकाकर बोला, “कुमारी, मैं नहीं जानता कि वह पौधा तुम ही हो। देखो, मैं बहुत गरीब हूं, मेरे पास खाना और कपड़े नहीं हैं। मैं अकेला इस बूढ़े पहाड़ पर रहता हूं। तुम ऐसी दुखभरी जिंदगी कैसे जीओगी? अभी अंधेरा नहीं हुआ है। चलो, मैं तुम्हें वापस पहुंचा दूँ।”

छ्वेछ्वे मुस्कराते हुए बोली, “ली पात्रो! अब मैं तुम्हें सच्ची बात बताती हूं। बचपन में मैं हमेशा तुम्हारे गांव में खेलने जाती थी, इसलिए मैं अच्छी तरह जानती हूं कि तुम शरीफ आदमी हो। तुम्हारी सौतेली मां हर तरह से तुम्हारे ऊपर जुल्म डालती रही है। तुम तो मेहनती, साहसी और कृतसंकल्प हो। तुम्हें मजबूरी में यहां गाय-बैल चराने आना पड़ा। पिछले पूरे एक महीने के दौरान मैं हर रोज चुपके से तुम्हें देखने आती रही हूं। जिस दिन तुम्हें न देखती उस दिन मुझे न भूख लगती और न ही नींद आती। मैं मिलना चाहती थी, लेकिन शर्माती थी।” थोड़ी देर रुककर वह फिर बोली, “छिड़-छिड़ मेरी बूआ का इकलौता बेटा है। उसे बहुत ज्यादा लाड़-प्यार की वजह से बुरी आदतें पड़ चुकी हैं। उसे काम-काज से कोई सरोकार नहीं और मौज करता है। इस तरह वह लफंगा बन गया है। वह मुझसे शादी का बार बार प्रस्ताव लेकर आता था और मैं इंकार करती रही। इस बात के लिए बूआ जी भी कई बार आई थीं। वह मेरे पिता की सगी बहन हैं, इसलिए साफ साफ कहना मुश्किल था। बाद में पाएपाए ने सीधे बात की तो छिड़-छिड़ आगबबूला हो उठा और दोनों में लड़ाई हो गई। तुम्हारे बीच-बचाव से लड़ाई खत्म हुई। खुदा की मेहरबानी और पाएपाए की मदद से

आज हम दोनों एक साथ रह सकते हैं। अगर तुम मुझे प्यार नहीं करते, तो मैं अभी चली जाती हूँ।”

“क्या बात करती हो, मैं तुम्हें बेहद प्यार करता हूँ!” ली पात्रो लड़की को समझाते हुए खाना पकाने जाना चाहता था।

छ्वेछ्वे बोली, “हमें बातचीत करते करते इतनी देर हो गई। गाय-बैल को जल्दी अंदर लाओ!”

ली पात्रो ने गाय-बैल को अंदर लाकर खूटे से बांध दिया और देखा कि पत्थर की मेज पर पहाड़ी मुर्गी का तला हुआ गोشت, तले कुरकुरमुत्ते और गरमा-गरम रोटियां रखी हुई थीं।

ली पात्रो ने बड़े ताज्जुब के साथ पूछा, “ये कहां से आए?”

छ्वेछ्वे बोली, “पूछो मत, ये चीजें कहां से आई हैं! उधर देखो!” ली पात्रो ने छ्वेछ्वे के कहने पर पूर्वी दीवार की ओर देखा। दीवार के पास घास से बनी सोने की जगह दो व्यक्तियों के सो सकने वाला एक खूबसूरत बड़ा पलंग पड़ा था। उस पर बिछे बढ़िया लाल बिस्तर पर हरी रजाई तथा दो बेलबूटेदार तकिए करीने से रखे हुए थे।

ली पात्रो ने संतोष के साथ कहा, “तुम्हारे साथ मुझे कभी परेशानी नहीं महसूस होगी।” उस रात से वे दोनों पति-पत्नी बन गए।

अगले दिन छ्वेछ्वे बोली, “ली पात्रो! देखो, आकाश में जंगली हंस कतार में उड़ रहे हैं और जमीन पर चींटियां झुंड बनाकर रेंग रही हैं। हम हमेशा के लिए इस पहाड़ में तो रह नहीं सकते। आज हम घर लौट चलें!”

“नहीं! मेरे पिता का निधन हो चुका है। घर की मालिक तो मेरी सौतेली मां है। पहले मैं घर में था, तो हररोज मार खाता था। अब तुम मेरे साथ वापस जाकर इतना कष्ट कैसे सह सकोगी? जब मैं पहाड़ पर आया, तब मेरी सौतेली मां ने मुझसे कहा कि ‘गाय-बैल के एक सौ बछड़े पैदा न होने तक मैं घर वापस नहीं जा सकता। सौ में एक की भी कमी नहीं रहनी चाहिए!’ अभी एक बछड़ा भी पैदा नहीं हुआ, तो मैं कैसे

वापस जा सकता हूँ !”

“कोई बात नहीं, एक सौ वछड़े तो ज्यादा नहीं, तुम फिक्र न करो ! घर पहुंचकर मैं तरकीब निकालूंगी ।”

ली पात्रो को छ्वेछ्वे की बात पर पूरा यकीन नहीं था लेकिन पूछने का साहस भी नहीं कर पाया । सब चीजें ठीक-ठाक करके ली पात्रो गाय-बैल को हांकते हुए घर की ओर जाने लगा और छ्वेछ्वे गाय की पीठ पर बैठी । वे दोनों गांव के छोर पर पहुंचे । उस समय दोपहर होने वाली थी ।

छ्वेछ्वे ने ली पात्रो के हाथ से चाबुक ले लिया और चाबुक हिलाती हुई कहने लगी, “चाबुक करता मेरा फटफट, एक सौ वछड़े आओ झटपट !”

थोड़ी ही देर में सचमुच एक सौ वछड़े दौड़ते हुए वहां आए । इन वछड़ों के शरीर पर चमक थी, वे मोटे और तंदुरुस्त थे और कूद-कूदकर इधर-उधर दौड़ते तथा रंभाते थे । ली पात्रो गाय-बैल हांकते हुए आगे बढ़ रहा था । वछड़े पीछे पीछे दौड़ते हुए चले आ रहे थे । वे गांव में पहुंचे, तो गांववासी दोपहर का खाना खा रहे थे । उन्होंने इतने मोटे और तंदुरुस्त वछड़े और इतनी सुंदर दुल्हन पहले कभी नहीं देखी थी । ली पात्रो सभी वछड़ों को आंगन में ले गया । आंगन वछड़ों से भर गया ।

उसकी सौतेली मां ने वछड़ों की जांच की, पूरे एक सौ । वह संपत्ति की लालची थी । इतने वछड़ों को देखकर उसकी खुशी की सीमा न रही और उसने कहा, “ली पात्रो, तुम मेरे लिए इतने वछड़े लाए हो । मैं तुम्हें कभी परेशान नहीं करूंगी । तुम अपनी बीवी के साथ घर में जीवन बिताओ !”

उसके बाद से ली पात्रो और छ्वेछ्वे एक साथ श्रम करते हुए सुखमय जीवन बिताने लगे ।

शहनाज और नूर

(उड़गुर जाति की लोककथा)

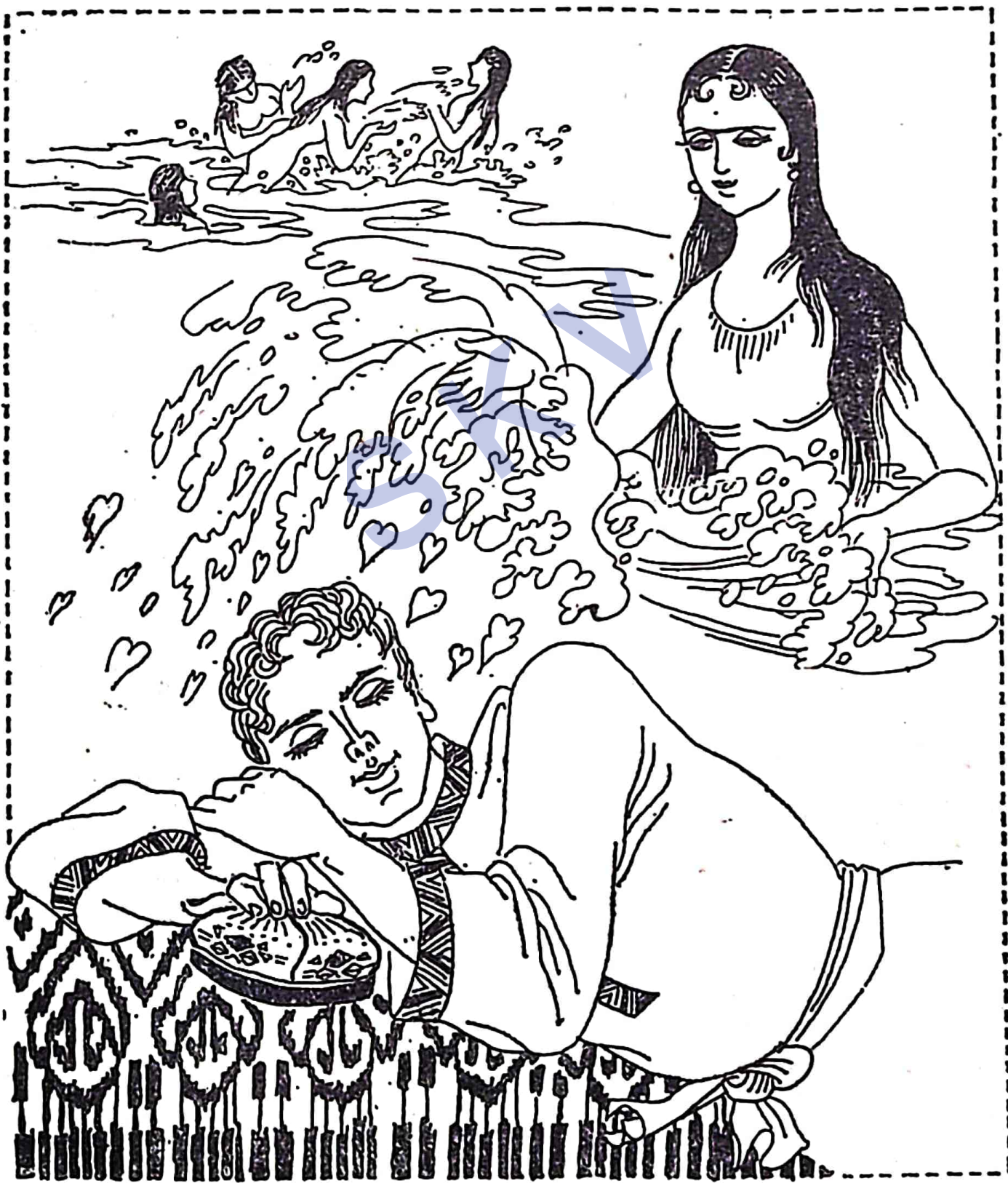
बहुत पहले की बात है। शहनाज नामक एक गरीब अनाथ था। उसके मां-बाप बहुत पहले ही मर चुके थे। उसकी उम्र अभी भी कम ही थी, लेकिन उसे दूसरों के घरों में झाड़ू लगाने, उनके लिए पानी लाने और उनके पशु चराने के लिए मजबूर होना पड़ा। इस तरह वह अपनी मेहनत के बल पर बसर करता था।

एक दिन वह नान सेंकने की अंगीठी के पास ही लेटा हुआ था कि उसे नींद आ गई। उसने सपने में देखा कि एक बड़ी नदी में अनेक युवतियां नहाते हुए एक दूसरी पर पानी उछालने का खेल खेल रही हैं और बड़ी खुश दिखाई दे रही हैं। उनमें नूर नाम की एक युवती सबसे सुंदर थी और वह शहनाज की ओर प्रेमभरी मुस्कान फेंकती और उस पर एक चुल्लू पानी उछालकर भाग जाती। शहनाज भी उस युवती को एकटक निहारता रहा और लपककर उसके साथ साथ भागना चाहता था। लेकिन वह पूरा जोर लगाने पर भी दौड़ नहीं पा रहा था और अधीरता में पसीने से तर-ब-तर हो गया। उसकी नींद टूट गई और उसके सामने कुछ भी न रहा।

तभी से उस प्रेमातुर नौजवान को सपने में मिली नूर से मुहब्बत

हो गई। किंतु किसे पता था कि वह युवती कहां है और वह कहां मिल सकती है? नौजवान को रात-दिन युवती की याद सताती रहती और उसका दिल क्षणभर के लिए भी शांत न हो पाता।

इस प्यारी युवती की खोज करने के लिए नौजवान घर छोड़कर विश्व-भ्रमण करने लगा।



अनगिनत दिन और अनगिनत महीने बीत गए। वह असंख्य नदियों और पर्वतों को पार करने और अनेक उजाड़ रेगिस्तानों को नापने के बाद आखिर में एक बड़े नगर में पहुंच गया। उसे बेहद उम्मीद थी कि यहां कहीं कोई काम मिल जाएगा, लेकिन नया आया होने के कारण उसे बेकार रहना पड़ा और वह अनायास ही टहलते हुए उस नगर के बाहर एक कुएं के पास बैठ गया।

उसी समय एक बुढ़िया दो वाल्टियां लिए पानी लेने आ पहुंची। उसने शहनाज को वहां काठ सा बैठा देखा तो उससे पूछा, “बेटा! तुम्हें क्या हो गया है?”

शहनाज धीरे से सिर उठाते हुए बोला, “दादी जी! मुझे बड़ी परेशानियां हैं!”

“तुम्हें कौन से दुख सता रहे हैं, बेटा? क्या तुम्हारे मां-बाप ने तुम्हें घर से निकाल दिया है?”

“नहीं, मेरे मां-बाप नहीं हैं। मैं अनाथ हूं और यहां कोई काम करना चाहता हूं। लेकिन अपरिचित होने की वजह से मैं बिल्कुल बेसहारा हूं। इसलिए मैं यहां परेशान बैठा हूं!”

बुढ़िया बोली, “बेटा, तुम ऊलजलूल बातें मत सोचो! खामखाह अपने को परेशानियों के सागर में क्यों डुबो रहे हो? मैं तुम्हें गोद लेती हूं, आज से मैं तुम्हारी मां हूं। चलो, मेरे साथ अपने घर चलो!” बुढ़िया पानी की वाल्टियां उठाते हुए शहनाज को साथ लेकर घर लौट गई। तब से शहनाज बुढ़िया के लिए गाय-बैल चराने और पानी लाने लगा और इस तरह दिन गुजरते गए।

एक दिन वह गाय-बैलों को हांकते हुए एक नदी के किनारे पहुंचा। वहां उसने देखा कि अनेक युवतियां नदी में नहा रही थीं। उनमें एक युवती सबसे खूबसूरत और वह भी जानी-पहचानी सी लग रही थी—ऐसा लगता था मानो उसे पहले भी कहीं देखा है, लेकिन अब बिल्कुल याद नहीं आ रहा कि कहां और कब। वह किसी जगह जाकर छिप गया

और चुपचाप युवतियों को आपस में पानी से खेलते हुए निहारता रहा।

इसी बीच, एक युवती ने उस सबसे सुंदर युवती को आवाज दी, “नूर!” यह सुनकर शहनाज को याद आ गया कि यह वही युवती है जिसे उसने सपने में देखा था और जिसकी खोज वह कई दिनों से कर रहा है। वह खुशी में बुदबुदाया, “अब वह मिल गई!” इसके बाद उसने जल्दी ही नरकट का एक टुकड़ा तोड़ लिया और उसकी एक वांसुरी बनाई। फिर वह एक बड़े पेड़ के नीचे जाकर वांसुरी बजाने लगा। उसकी आवाज बड़ी सुरीली और दर्दनाक थी। वांसुरी की आवाज सुनकर युवती शुरू में तो चकित रह गई, मगर सुनते सुनते वह एकदम मस्त हो गई। वह बड़े तपाक से पानी के बाहर निकल आई और कपड़े पहनकर वांसुरी की आवाज की ओर चलती गई।

वांसुरी बजाते बजाते शहनाज को अपने गाय-बेलों की याद आई तो वह फौरन उठ खड़ा हुआ। लेकिन संयोग से उसका माथा पेड़ की टहनियों से टकरा गया और उसकी टोपी जमीन पर गिर पड़ी। इस तरह शहनाज के सुनहरे बाल दिखाई दिए और उसका प्रेमभरा खूबसूरत चेहरा भी चमक उठा। शहनाज को देखकर नूर को उससे मुहब्बत हो गई।

अगले दिन शहनाज बुढ़िया के वगीचे से एक गुलदस्ता बनाकर लाया और उसमें एक परचा छिपाकर रख दिया। इसके बाद वह आम दिनों की तरह गाय-बेलों को चराने के लिए बाहर गया।

सूरज एकदम आकाश के बीचोंबीच चमक रहा होने पर शहनाज ने फिर युवतियों को नदी में नहाते हुए देखा। तभी उसने वह गुलदस्ता नदी के ऊपरी भाग में फेंक दिया ताकि वह पानी के साथ नदी के निचले भाग में वह जाए। यह भी संयोग की ही बात थी कि वह गुलदस्ता नूर के हाथ लग गया। उसने गुलदस्ते में रखा वह परचा उठाकर पढ़ लिया। दरअसल, वह नूर के लिए लिखा गया एक प्रेमपत्र था। वह खुद-व-खुद सोचने लगी, “मेरे दिल में उसके प्रति प्रेम की आग धधक

रही है। यह विलकुल कल्पना से परे था कि वैसी ही आग उसके दिल में भी धधक रही है! हमारे दिल एक जैसे हैं, यदि हमारा मिलन हो जाए, तो कितना सौभाग्य होगा!” अन्य युवतियों को इस रहस्य का जरा भी पता नहीं लगा था, इसलिए आम दिनों की ही तरह वह दिन भी बीत गया।

फिर एक दिन सब युवतियां नदी में नहाने आईं। नूर ने अपनी एक जिगरी सहेली को अपना राज बताया और उसे अन्य युवतियों के साथ खेलने जाने के लिए कहा। उसने खुद चुपचाप नदी के साथ साथ चलते हुए शहनाज को ढूँढ़ ही लिया।

दोनों प्रेमी मिलने के बाद बड़ी देर तक एक दूसरे को अपने मन की मीठी मीठी बातें बताते रहे।

उसके बाद से शहनाज और नूर हररोज एक साथ घूमते और सुख के सागर में गोते लगाते रहे। और अनजाने ही एक लंबा अरसा बीत गया।

एक दिन वे दोनों टहल रहे थे। शहनाज बोला, “प्रेयसी, कितना अच्छा हो, अगर हम जिंदगीभर के लिए साथी बन जाएं!”

“तो तुम एक वरेखिए को मेरे मां-बाप से सगाई की बातचीत करने के लिए भेज दो!”

उसी दिन, शाम को खाना खाने के बाद शहनाज मां के पास बैठ गया और रुक-रुककर कहने लगा, “अम्मा! आपसे एक अनुरोध है, यदि अनुमति दें, तो मैं बता दूँ।”

बुढ़िया बोली, “कहो बेटा! ऐसी कौन सी बात है जिसे तुम अपनी मां को नहीं बता सकते। फिर किसे बता सकोगे?”

“नाराज मत हों, अम्मा! मुझे नूर बहुत पसंद है। क्या आप मेरे लिए वरेखिए के तौर पर उसके मां-बाप के यहां सगाई की बातचीत करने जा सकती हैं?”

“अरे बेटा, कहां मैं एक गरीब बूढ़ी विधवा और तुम मेरे गोद लिए

हुए एक अनाथ, और कहां वह इस इलाके का एक बड़ा विख्यात रईस ! भला वह कैसे अपनी बेटी को हमारे घर शादी करने देगा ? एक कहावत है कि अधिकारियों का संपर्क तो अधिकारियों से ही होता है, प्रजा का संपर्क प्रजा से और गरीबों का संपर्क हररोज गरीबों से ही । यही नहीं, रईस से सगाई का अनुरोध करने पर लोग हम गरीबों की खिल्ली उड़ाएंगे । बंद करो, ऐसी ऊलजलूल बातें मत सोचा करो ! ”

लेकिन शहनाज आसानी से हार मानने वाला नहीं था । वह बार बार विनती करता रहा, “अम्मा ! चाहे जो भी हो, आप एक बार जरूर जाएं ! ” शहनाज को दुख न पहुंचाने के लिए बुढ़िया को हार माननी पड़ी और वह एक बार जाने के लिए राजी हो गई ।

दूसरे दिन पौ फटते ही बुढ़िया खाट से उठ बैठी और वाल्टी व झाड़ू लिए रईस के घर के दरवाजे पर जा पहुंची । वहां वह झाड़ू लगाते हुए यह गाना गाने लगी :

मैं हूं वरेखिन,
आई हूं सगाई कराने,
शहनाज के अनुरोध पर,
हामी भरेंगे आप या नहीं ?

उस वक्त पति-पत्नी दोनों मजे से सो रहे थे । उन्होंने अपने दरवाजे पर गाने की आवाज सुनी, तो उन्हें बड़ा आश्चर्य हुआ और वे चारपाई से उठे और बाहर झांका । बाहर कोई भी दिखाई न दिया, लेकिन दरवाजे के सामने फर्श अच्छी तरह साफ किया हुआ था । वे जान गए कि यह सगाई का अनुरोध करने का एक तरीका है । पति-पत्नी एक दूसरे को देखते हुए दरवाजे के सामने बैठ गए और वरेखिए का इंतजार करने लगे । शाम को, बुढ़िया दो-चार बूढ़ी पड़ोसियों को साथ लेकर रईस के घर गई । सबसे पहले उन्होंने घर-बार और इधर-उधर की बातें कीं । उसके बाद उन्होंने शहनाज की सगाई कराने की बात उठाई । रईस ने झट पूछा कि शहनाज कौन है, उसके मां-बाप का ओहदा क्या है तथा

उसके परिवार की कितनी जायदाद है।...

बुढ़िया ने जवाब दिया, "शहनाज अनाथ है, अब वह मेरे घर में रहता है।"

यह सुनते ही रईस आगबबूला हो उठा और डांट-फटकार करने लगा, "कहां मैं पूरे नगर का नामी रईस और कहां वह गरीबजादा, और मेरी लड़की से शादी करना चाहता है वह! क्या उसका सिर फिर गया है? गुस्से से मेरा दम घुटा जा रहा है। तुम जल्दी निकल जाओ मेरे घर से! फिर कभी तुम्हें अपने दरवाजे के अंदर पांव तक नहीं रखने दूंगा! अगर किसी ने यहां आने की जरा सी हिम्मत भी की, तो मैं उसकी टांगें तोड़कर ही दम लूंगा!" यह कहते हुए उसने उन बुढ़िया को धक्के देकर बाहर निकाल दिया।

घर वापस आकर बुढ़िया ने शहनाज से कहा, "बेटा, यह तो मैंने पहले ही कह दिया था कि बात नहीं बनेगी! एक कहावत है कि 'जहां तुम्हारा हाथ न पहुंच पाए, वहां तुम हाथ फेलाओ भी नहीं!' तुम जरा सोचो कि भला रईस क्या अपनी बेटी की हम गरीबों के यहां शादी कर सकता है? तुम अपना यह इरादा हमेशा के लिए छोड़ दो और नूर के बारे में फिर कभी मत सोचो! नहीं तो तुम खुद अपने लिए दुख मोल लोगे। बाद में मैं तुम्हारे लिए जरूर एक खूबसूरत लड़की ढूंढ़ लाऊंगी।"

शहनाज बोला, "कोई बात नहीं, अम्मा! दुनिया में कोई ऐसा काम नहीं, जो पूरा न किया जा सकता हो।" उसने यह इरादा कर लिया कि वह नूर से सलाह करके कोई दूसरा रास्ता निकालेगा।

लेकिन उस दिन के बाद उसे कभी नूर की शक्ल तक नजर न आई। वास्तव में रईस ने बुढ़िया को घर से निकालने के बाद नूर को भी घर में कैद कर डाला और उसे बाहर जाने की इजाजत नहीं दी। नूर बड़ी बेचैन हुई और साथ ही उसे बहुत गुस्सा भी आया।

सोच-विचार कर उसने अपनी जिगरी सहेली के हाथ शहनाज को एक खत भेजा। उसमें लिखा, "मैं घर में कैद हूँ और मुझे जरा भी आजादी

पुरस्तकालय नगर परिषद
मह. गाँव, मह. जिला-इन्दौर. (म.प्र.)

नहीं है। मैं तुमसे सलाह-मशविरा करना चाहती हूँ। तुम आज रात को नदीतट के साथ साथ चलते जाना, तो तुम मेरे घर के पीछे एक वाग के पास एक कंदरा तक पहुंच जाओगे। फिर तुम गुफा में से अंदर घुसकर फूलों के पौधों के बीचोंबीच छिपकर मेरा इंतजार करना। आधी रात तक मैं बाहर आकर तुमसे जरूर मिलूंगी।”

आधी रात होते होते शहनाज नदीतट के साथ साथ चलने लगा और गुफा में से अंदर घुसकर फूलों के पौधों के बीच छिप गया तथा नूर की प्रतीक्षा करने लगा।

चारपाई पर लेटी हुई नूर जागती रही और आधी रात होने तक इंतजार करने के बाद वह चुपचाप उठकर वाग में चली गई। वहां वे एक दूसरे से मिले और काफी देर तक बातचीत के दौरान यह तय हुआ कि जुमेरात को वे घर से भाग जाएंगे।

आखिर तय की गई जुमेरात भी आ ही गई। उस दिन नूर ने अपने बूढ़े साईस को कहा कि वह उसके लिए दो सरपट दौड़ने वाले घोड़े चुन ले और रात को वाग के पीछे जाकर उसका इंतजार करे।

काफी रात बीत जाने पर नूर चुपचाप उठी और चारपाई पर रखी रजाई के नीचे कुछ कपड़े ठूस दिए, और वह दबे पांव घर से बाहर चली गई। उधर नूर का बाप लालटेन लेकर अपनी बेटी को देखने उसके कमरे में गया तो अधनींद में ऊंची उठी रजाई देखकर बुदबुदाया, “खूब मीठी नींद में है वह!” इसके बाद वह मुड़कर चला गया।

ठीक उसी समय बूढ़ा साईस दो अच्छे घोड़े लेकर पूर्वनिश्चित स्थान पर इंतजार कर रहा था। ज्यादा समय नहीं बीता कि नूर और शहनाज भी एक दूसरे के बाद आ पहुंचे। दोनों ने बूढ़े साईस को धन्यवाद दिया और घोड़ों पर सवार होकर तेजी से बुढ़िया के घर जा पहुंचे। उन्होंने बुढ़िया को अपना आभार प्रकट किया। जब बुढ़िया को मालूम हुआ कि वे दोनों घर से भागने जा रहे हैं तो वह दुख में यह गाना गाने

लगी :

ऊंची चोटियां खड़ी हैं राह में,
पार करोगे उन्हें तुम लोग कैसे ?
पंजे फैलाए हैं भेड़िये उजाड़ रेगिस्तान में,
पार करोगे उसे तुम लोग कैसे ?
उत्तुंग जंगल खड़े हैं नदीतट के छोर पर,
पार करोगे उन्हें तुम लोग कैसे ?
ताक में खड़े हैं डाकू-गुंडे आधी राह में,
पिंड छुड़ाओगे उनसे तुम लोग कैसे ?

बुढ़िया गाती रही, उसकी आंखों से आंसू टपकते रहे और वह किसी भी तरह शहनाज को जाने नहीं देना चाहती थी। शहनाज भी जवाब में यह गाने लगा :

उत्तुंग पर्वतों से क्या डर,
सरपट घोड़ा है मेरा मददगार।
उजाड़ भूमि में खड़े भेड़ियों से क्या डर,
गोली-बंदूक है पास मेरी मददगार।
बादलों को छूने वाले जंगलों से क्या डर,
आगे चिनगारी है मेरी मददगार।
ताक में खड़े डाकू-गुंडों से क्या डर,
तकदीर ही है मेरी मददगार।

बुढ़िया दिल में दुखी तो बहुत हुई, मगर उसे भी मालूम था कि अगर वे भाग न जाएं, तो उनके सिर पर किसी भी तरह की मुसीबत आ पड़ेगी। इसलिए वह दोनों युवजनों को देखते हुए बोली, “बेटे, खुदा हाफिज !”

दोनों बुढ़िया से विदा लेकर घोड़ों पर सवार होकर चले गए।

शहनाज और नूर चलते रहे, चलते रहे। इस तरह कई दिन बीत गए और वे एक सीधे व ऊंचे पर्वत के सामने पहुंचे। वे बिना रुके ही ऊंचे पर्वत को पार करके एक ऐसी जगह पहुंचे जहां एकाएक पांच

खूंखार भेड़िये उनकी ओर झपटे। शहनाज ने वंदूक उठाकर तीन फायर किए, भय से भेड़िये दुम दवाकर भाग गए। वे दोनों एक बड़ी नदी के नजदीक पहुंचे, सामने अनंत जंगल राह रोके हुए थे। उन्होंने चिनगारी से पेड़ जला-जलाकर एक रास्ता बना लिया। वे फिर आगे बढ़ते रहे, आधे रास्ते में सात डाकू घात लगाए बैठे थे। डाकुओं ने बड़ी क्रूरता के साथ शहनाज से पूछा, “बोलो, तुम्हें जान प्यारी है अथवा माल-असबाब?”

शहनाज ने कहा, “क्या मतलब, मैं विलकुल समझ नहीं पा रहा हूं।”

डाकुओं ने कहा, “यदि तुम अपनी जान बचाना चाहते हो, तो अपना घोड़ा और इस सुंदरी को यहां छोड़ दो और तुम अकेले जल्दी ही भाग जाओ। यदि तुम अपने माल की हिफाजत करना चाहते हो, तो साफ बता देते हैं कि तुम जिंदा नहीं जा पाओगे।”

शहनाज ने दृढ़ता से कहा, “अगर तुम लोग घोड़े चाहते हो तो बड़े शौक से ले जाओ! मगर यह युवती मेरी पत्नी है, मैं इसे नहीं छोड़ सकता।”

यह सुनते ही डाकू शहनाज पर टूट पड़े और उसे मार डाला। उसके बाद उन्होंने नूर को खाना बनाने का हुक्म दिया। शहनाज की मौत से नूर के दिल में अत्यंत दुख था। वह खाना बनाते हुए बदला लेने की तरकीब भी सोच रही थी। आखिर उसे याद आया कि नाजुक स्थिति का सामना करने के लिए उसने अपने पास थोड़ा जहर छिपा लिया था। उसने पके हुए खाने में वह जहर डाल दिया और डाकुओं के लिए खाना परोस दिया। डाकुओं ने खुशी खुशी तमाम खाना खत्म कर डाला और थोड़ी ही देर में उन्होंने एक के बाद एक दम तोड़ दिए।

उधर शहनाज मरा नहीं था, डाकुओं की मार खाकर वह वास्तव में बेहोश हो गया था। नूर ने जल्दी से शहनाज को होश में लाने के लिए उसके चेहरे पर ठंडा पानी छिड़क दिया और थोड़ी देर में शहनाज होश में आ गया। नूर ने उसके घावों पर मरहमपट्टी की और घोड़े पर बैठने के लिए उसे सहारा दिया। इस तरह वे दोनों फिर



जल्दी ही अपना रास्ता तय करने लगे और कई दिनों के बाद वे शहनाज के गांव पहुंच गए और वहां उन्होंने अपनी नई सुखी जिंदगी शुरू कर दी।

SKV

मछुए का बेटा श्याऊतुड

(उइगुर जाति की लोककथा)

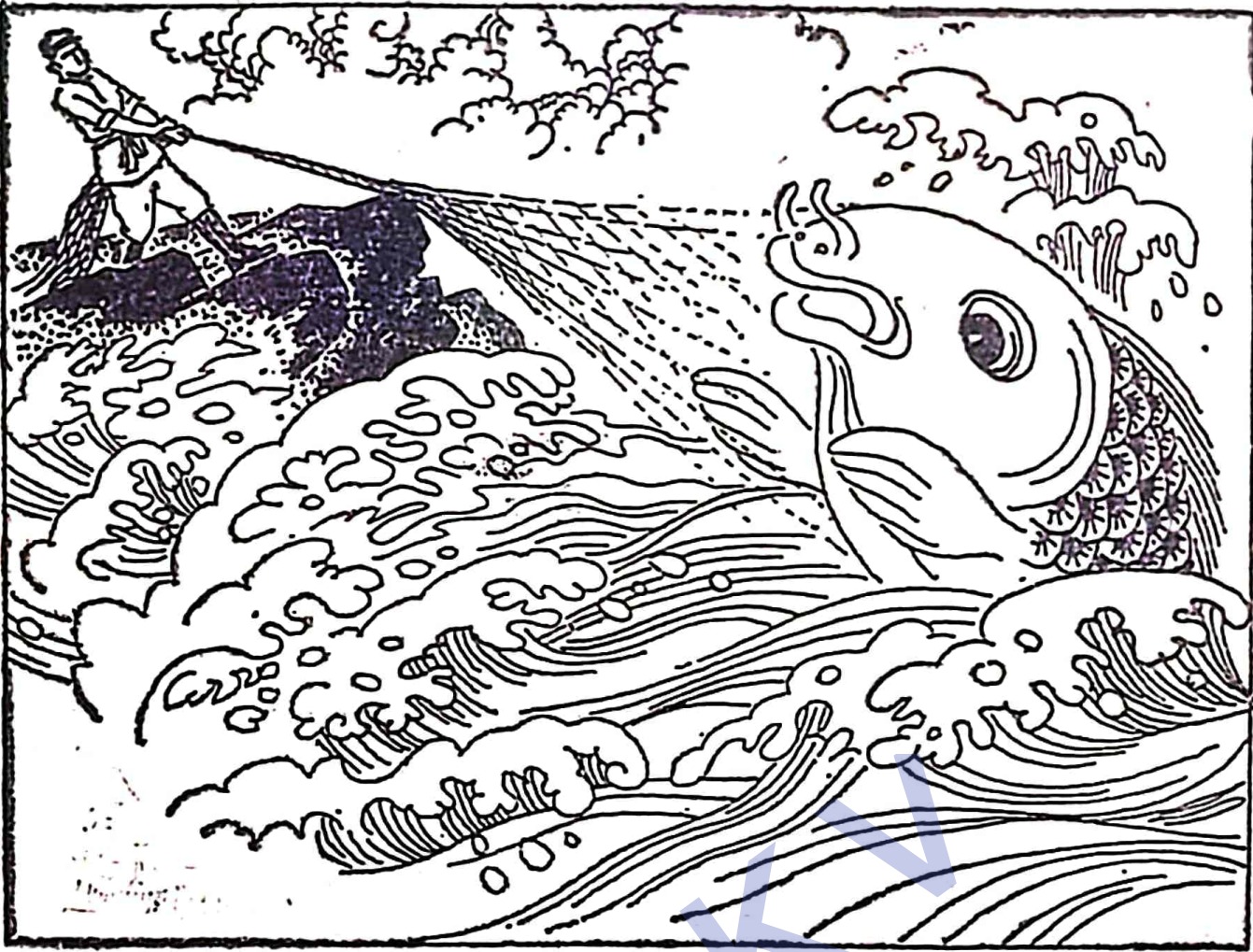
बहुत समय पहले एक बूढ़ा था। उसकी पत्नी कब की मर चुकी थी और उसका श्याऊतुड नाम का इकलौता बेटा था। बाप-बेटा दोनों मछुआगिरी के सहारे जैसे-तेैसे अपना गरीबी भरा जीवन बिताते थे।

एक दिन बाप-बेटा नदीतट पर मछलियां पकड़ रहे थे। उन्होंने पानी में अपना जाल फेंका और उन्हें उसमें एक बड़ी ब्रीम मछली फंसी मिली। बाप-बेटा दोनों बड़े खुश हुए, मगर लाख कोशिशें करने पर भी जाल निकाला न जा सका।

क्या किया जाए? केवल यही उपाय रह गया कि बड़ी मछली को कई टुकड़ों में काटकर निकाला जाए। यह सोचकर बूढ़े ने अपने बेटे से कहा, “श्याऊतुड, तुम घर जाकर कुल्हाड़ी लाओ!”

श्याऊतुड दौड़ते हुए घर लौट गया, कोना-कोना छान मारा, फिर भी कुल्हाड़ी न मिली और नदीतट पर खाली हाथ लौटकर उसने अपने बाप से कहा, “पिता जी, मैंने इधर-उधर काफी खोजबीन की, लेकिन कुल्हाड़ी नहीं मिली। मालूम नहीं आपने कुल्हाड़ी कहां रखी है?”

नाराज होकर बूढ़े ने कहा, “तुम बड़े बेवकूफ हो, कुल्हाड़ी तक खोज



8152

नहीं पाए ! आओ ! तुम मजबूती से यह जाल पकड़े रहो, नहीं तो बड़ी मछली हाथ से निकल जाएगी !” यह कहकर उसने जाल की रस्सी श्याऊतुड के हाथ में पकड़ाई और खुद कुल्हाड़ी लेने घर चला गया ।

उसी समय ब्रीम मछली की आवाज सुनाई दी । उसने श्याऊतुड से विनती करते हुए कहा, “अच्छे बेटे, मेहरबानी करके मुझे छोड़ दो ! मेरे भी बेटा-बेटी हैं । अगर तुम मुझे छोड़ दोगे, तो मैं और मेरे बेटा-बेटी तुम्हारे आभारी रहेंगे । आगे चलकर यदि कहीं तुम्हें कोई मुसीबत आ पड़े, तो मैं तुम्हारी मदद जरूर करूंगी ।”

वात तो सही थी, आखिर वह भी जीव तो थी, उसे छोड़ देना चाहिए ! लेकिन अपने बाप के आगे मैं क्या कहूंगा ? श्याऊतुड इसी उधेड़बुन में पड़ा हुआ था ।

तभी मछली ने पूछा, “तुम इतने परेशान क्यों हो ?”

श्याऊतुङ ने कहा, "मैं तो तुम्हें छोड़ देना चाहता हूँ, मगर मेरे बाप का मिजाज बहुत खराब है। इसलिए मैं बहुत चिंतित हूँ, यदि तुम्हें न छोड़ूँ तो तुम्हें देखकर दया आती है। अब मुझे मालूम नहीं कि क्या करना और क्या नहीं करना चाहिए।"

मछली ने कहा, "तो तुम ऐसा करो - जब तुम्हारे बाप आ जाएँ, तो मैं जाल में छटपटाते हुए हलचल मचा दूंगी और तुम जाल पकड़ने में असमर्थता दिखाते हुए मुझे छोड़ देना। यदि तुम्हारे बाप तुम्हें मारें, तो तुम नदी में कूद पड़ना और मैं तुम्हें बचा लूंगी।"

थोड़ी देर में बूढ़ा कुल्हाड़ी लेकर आ गया। मछली ने जाल में उछलकूद करते हुए हलचल मचाई और जाल पकड़े श्याऊतुङ गिरते-पड़ते खूब चिल्लाने लगा, "पिता जी! जल्दी आओ, जाल संभाला नहीं जा रहा!..." श्याऊतुङ ने उसी तरह चिल्लाते हुए जाल की रस्सी छोड़ दी और उधर मछली तेजी से नदीतल में गायब हो गई।

बूढ़ा जिंदगीभर मछली का शिकार करता रहा था, मगर इससे पहले उसके हाथ इतनी बड़ी मछली कभी नहीं लगी थी। अब अपनी आंखों के सामने ही बेटे के हाथ से इतनी बड़ी मछली छूट गई थी। उसे बहुत गुस्सा आया और कुल्हाड़ी ऊंची उठाते हुए बेटे को मारने दौड़ा। यह देखकर श्याऊतुङ के होश उड़ गए और वह झट नदी में कूद गया।

मछली ने श्याऊतुङ को पानी में कूदते देखा और मुंह खोलकर उसे अपने पेट में निगल लिया। इसके बाद वह तैरकर एक गहरे पोखर में चली गई।

श्याऊतुङ मछली के पेट में सात दिन तक रहा। आठवें दिन उसने मछली से प्रार्थना की, "मैं धरती पर लोगों के साथ रहना चाहता हूँ।"

मछली ने हामी भरते हुए कहा, "अच्छी बात है, तुमने मुझे बचाया है और मैंने भी यह वचन दिया है कि जब कभी किसी भी मुसीबत में तुम इस पोखर में आ जाओगे, तो मैं तुम्हें बचा लूंगी।"

मछली ने बात खत्म करके अपना सिर पानी की सतह से ऊपर उठाकर

एक सांस छोड़ी और फट फट की आवाज के साथ श्याऊतुङ नदीतट पर पटका गया। उसने चारों ओर नजर दौड़ाई तो रेगिस्तान ही रेगिस्तान दिखाई दिया। उसने सोचा, “नदीतट के साथ साथ चलूं, तो जरूर कोई न कोई घर मिल जाएगा।” वह दिनभर चलता रहा, एक बड़े रेगिस्तान से गुजरकर पथरीली घाटी में पहुंच गया। घाटी के एक चश्मे से साफ व ठंडा पानी कलकल वह रहा था। घाटी के आसपास जंगल था और जमीन पर हरीभरी घास उगी थी, रंगविरंगे फूल खिले थे और चिड़ियां सुरीली आवाज में चहचहा रही थीं।

श्याऊतुङ ने इस खूबसूरत दृश्यावली का खूब आनंद उठाया। फिर उसने सोचा, “क्यों न मैं यहीं जरा आराम करूं?” यह सोचकर वह मुलायम घास के मैदान में लेटे लेटे सो ही गया। जागने के बाद वह कहीं जाने के बारे में सोच रहा था कि अचानक चीं चीं की आवाज सुनाई दी। सिर उठाकर देखा कि कगार के नीचे की ओर दो छोटे गिद्ध अपनी तेज आंखें चमकाते हुए क्रंदन कर रहे थे। श्याऊतुङ ने घाटी में नीचे की ओर देखा, तो वहां एक बड़ा अजगर पत्थर की गुफा से नन्हे गिद्धों की ओर रेंगते हुए आ रहा था। श्याऊतुङ उठा और झट घाटी के एक तरफ जाकर एक बड़ा पत्थर उठाकर अजगर पर दे मारा। पत्थर की चोट से अजगर का सिर पिचक गया और वह वहीं ढेर हो गया।

छोटे गिद्ध यह देखकर बड़े खुश हुए कि श्याऊतुङ ने उनके जानी दुश्मन अजगर की जान ले ही ली। उनमें से एक ने कहा, “जिस किसी ने बड़े अजगर को भारा है, हम उसकी कृतज्ञता का बदला चुकाएंगे!”

यह सुनकर श्याऊतुङ कई कगारों को पार करके छोटे गिद्धों के घोंसले के पास पहुंचा। गिद्धों ने अपने पंखों से श्याऊतुङ की कनपटी और मुंह को छूते हुए बड़ी एहसानमंदी के साथ कहा, “यदि आप न होते, तो हम जरूर बड़े अजगर का शिकार बन जाते। हम आपकी भलाई की बात अपने मां-बाप को बताएंगे और उनसे आपकी कृतज्ञता का बदला चुकाने को कहेंगे। लेकिन अगर आप अभी यहीं खड़े रहे, तो हमारे मां-बाप घर

लौटने पर आपको देख लेंगे और यह न जानते हुए कि आप नेकदिल आदमी हैं, आपको आघात पहुंचा सकते हैं। अब उनके घर लौटने का वक्त है, आप शीघ्र किसी एक के पंखों के नीचे छिप जाइए!” यह कहकर एक गिद्ध ने श्याऊतुड को अपने पंखों के नीचे छिपा लिया।

सचमुच ऐसा ही हुआ, थोड़ी देर में मौसम अचानक बदल गया। काले बादल छा गए और तूफान-आंधी चलने लगी। तेज हवा से जमीन पर गिरे झाड़-झंखाड़ों की उठापटक होने लगी और सूर्य पीली धूल से ढक गया। उसी समय घनघोर बादलों में से दो भीमकाय गिद्ध उड़कर आए और घाटी के ऊपर तीन बार चक्कर लगाकर जमीन पर उतरे। दोनों ने अपने शिकार एक बड़ी साही को छोटे गिद्धों के सामने रख दिया। आम दिनों को छोटे गिद्ध शिकार देखते ही झपटने लगते, मगर आज माहौल कुछ अजीब सा था। वे जहां के तहां खड़े बड़े गिद्धों की ओर ही एकटक देख रहे थे। छोटे गिद्धों के मां-बाप को बड़ा आश्चर्य हुआ और उन्होंने पूछा, “बेटे, मांस तैयार है, खाते क्यों नहीं, एकटक क्या देख रहे हो?” छोटे गिद्धों ने एक स्वर में सवाल किया, “अगर नेकदिल आदमी मिल जाए तो उसके साथ नेकी की जाए या बदी?”

मां-बाप ने जवाब दिया, “बेशक, उसके साथ नेकी करनी चाहिए।”

छोटे गिद्धों ने कहा, “आज, एक आदमी ने बड़े अजगर को मारकर हम दोनों की जान बचाई है।” यह कहने के बाद एक छोटे गिद्ध ने अपने मां-बाप को मरा हुआ अजगर दिखाया।

बड़े गिद्धों ने पूछा, “वह आदमी कहां चला गया?”

उसी समय दूसरे छोटे गिद्ध ने अपने पंख ऊपर उठाए और श्याऊतुड को सामने करते हुए कहा, “यही वह सज्जन हैं।”

बड़े गिद्धों ने छोटे गिद्धों को देखकर श्याऊतुड को सलाम करते हुए अपने सिर हिलाए और कहा, “कितने ही सालों से हमारा कोई बच्चा बड़ा नहीं हो सका। हर साल वह बदमाश हमारे बच्चे खाता रहा। आप धन्य हैं, आपने हमारी इस मुसीबत की जड़ ही काट फेंकी है।”

बड़े गिद्धों ने फिर अपने पंखों से श्याऊतुङ का मुंह और आंखें पलोसते हुए कहा, “हम आपके आभारी हैं और आपकी कृतज्ञता का बदला चुकाएंगे। आप बताइए कि क्या चाहते हैं, आपका उद्देश्य पूरा करने में हम कोई भी कसर न छोड़ेंगे।”

श्याऊतुङ ने जवाब दिया, “आपका बहुत बहुत धन्यवाद। फिलहाल मुझे कुछ नहीं चाहिए।” इसके बाद एक बड़े गिद्ध ने अपने दाएं पंख से एक पर निकालकर श्याऊतुङ को देते हुए कहा, “यह ले लीजिए, बाद में अगर कहीं भी कोई मुसीबत हो, तो आप इस पर को जलाएं। हम जरूर आपकी मदद करने आएंगे।”

श्याऊतुङ ने वह पर अपने पास रख लिया और मुड़कर कगार से नीचे उतरने ही वाला था कि बड़ा गिद्ध बोला, “आप मेरी पीठ पर सवार हो जाइए!” कहने के बाद उसने श्याऊतुङ को लादकर झट समतल भूमि पर पहुंचा दिया।

श्याऊतुङ फिर अपने रास्ते पर बढ़ने लगा। एक दिन चलते रहने के बाद वह एक पर्वत की तलहटी में पहुंचा। उसने देखा कि कोई शिकारी एक लोमड़ी की ओर बंदूक साधे निशाना लगा रहा है। लोमड़ी छिपने की कोई जगह न मिलने की वजह से परेशान थी। श्याऊतुङ के मन में यह विचार आया, “लोमड़ी के भी बच्चे तो होंगे! यदि वह मर गई, तो उसके बेटे-बेटी कितने दुखी होंगे!”

शिकारी अपनी बंदूक का घोड़ा दवाने ही वाला था कि श्याऊतुङ ने लपककर शिकारी को रोकते हुए कहा, “दादा, उसे छोड़ दीजिए! अगर आप उसे मार डालेंगे, तो उसके बेटे-बेटी का क्या होगा?” इस पर शिकारी अपनी बंदूक नीचे करके आगे चला गया।

लोमड़ी ने आभार प्रकट करते हुए श्याऊतुङ से कहा, “नेक इंसान, आपने मुझे बचाया है, इसे मैं कभी नहीं भूलूंगी। अब बताइए आप क्या चाहते हैं। साफ साफ बताइए, अपने मकसद तक पहुंचने में मैं आपकी पूरी मदद करूंगी।”

श्याऊतुड बोला, “फिलहाल मुझे कुछ नहीं चाहिए।”

लोमड़ी ने कहा, “अच्छा, तो मैं आपको वचन देती हूँ कि भविष्य में आप कहीं भी हों और किसी भी समय किसी भी मुसीबत में फंस जाएं, तो इस पर्वत के नीचे आग जलाकर धूआं उठने दें। मैं कितनी ही दूरी पर भी क्यों न होऊँ झट आपकी मदद करने आ पहुँचूंगी।” यह कहकर लोमड़ी चली गई।

श्याऊतुड लगातार अपने रास्ते पर आगे बढ़ता गया। एक दिन बाद वह एक बड़े नगर में पहुँच गया। वह सड़क पर चहल-पहल निहार रहा था। उस समय उसने देखा कि लोगों की भीड़ उसकी ओर आ रही है। श्याऊतुड ने शंकातुर होकर एक बूढ़े से पूछा, “दादा जी, आप इतने लोग कहां से आ रहे हैं और किधर जा रहे हैं?”

“अच्छा बेटा, तुम नहीं जानते, हम मकतल की ओर जा रहे हैं!”

“मकतल कौन सी जगह है?”

“वहां लोगों को कत्ल किया जाता है। आज एक नौजवान का सिर काटा जा रहा है! हम वही देखने जा रहे हैं,” बूढ़े ने कहा।

“उस नौजवान का सिर क्यों काटा जा रहा है? उसने क्या कसूर किया है?”

“बेटा, तुम इसके बारे में इतना खोद-खोदकर क्यों पूछ रहे हो? उस नौजवान ने न तो किसी की हत्या की है और न ही कोई चोरी की है, उसने कोई भी अपराध नहीं किया है। वह सिर्फ शादी के समझौते की शर्त पूरी नहीं कर पाया है।”

“शादी के समझौते की शर्त! क्या शादी की भी कोई शर्त होती है?”

श्याऊतुड यह जानने के लिए उतावला था।

दरअसल, बात यह थी कि उस नगर में एक राजा था और उसकी एक खूबसूरत लड़की थी। राजकुमारी के पास एक जादुई आईना था। उस आईने में स्वर्ग और नरक दोनों साफ साफ नजर आते थे। राजकुमारी से विवाह का अनुरोध करने के लिए अनगिनत नौजवान आए थे, लेकिन

उनमें से कोई भी सफल न हुआ, क्योंकि शादी के लिए राजकुमारी की एक शर्त यह थी कि शादी का अनुरोध करने आने वाला कोई भी व्यक्ति तीन दिन के अंदर एक ऐसी जगह चुन ले, जिसे वह छिपने के लिए सबसे सुरक्षित समझता हो। चौथे दिन, राजकुमारी जादुई आईना लेकर महल की ऊपरी मंजिल पर जाती और वह आईने से उसे ढूँढ़ने की कोशिश करती थी। अगर आईने से उस व्यक्ति की खोज कर ली गई तो न सिर्फ शादी न होती, बल्कि उस व्यक्ति का सिर भी काट दिया जाता। ऐसे अनेक लोगों की जानें जा चुकी थीं, जिन्होंने राजकुमारी से विवाह का अनुरोध किया था। इसी वजह से अब उस नौजवान का वध किया जाने वाला था।

ये सारी बातें जानने के बाद श्याऊतुड सोच में पड़ गया, यह कितनी कड़ी शर्त थी शादी का अनुरोध करने की। अगर इसे रद्द न करवाया गया, तो कौन जाने कितने अच्छे-भले नौजवानों को खामखाह कत्ल कर दिया जाएगा।

श्याऊतुड सीधे राजमहल के फाटक पर पहुंचा और दरवानों से बोला, “मैंने सुना है कि आपकी आदरणीय राजकुमारी सगाई के लिए वर-चुनाव कर रही हैं, इसलिए मैं शादी का अनुरोध करने के लिए खास तौर पर दूर से आया हूँ। मुझे आशा है कि आप मेरा अनुरोध राजकुमारी तक पहुंचा देंगे। उन्हें यह भी बताएं कि मैं उनकी छिपने की शर्त पूरी करने के लिए तैयार-वर-तैयार हूँ!”

दरवानों की रपट सुनने के बाद राजकुमारी ने फौरन कहा, “ठीक है, तुम जाकर उस नौजवान को बताओ कि वह इसी समय से अपनी मरजी के अनुसार कोई ऐसी जगह ढूँढ़ ले और वहां अपने को अच्छी तरह छिपा ले और चौथे दिन इसी वक्त, मैं राजमहल की ऊपरी मंजिल पर चढ़कर उसे खोज निकालूंगी।”

दरवानों ने श्याऊतुड को राजकुमारी की बात बताई। श्याऊतुड ने सोचा, “मुझे बड़ी ब्रीम मछली से मदद लेनी चाहिए।” इस तरह वह

तीन दिन तक नदी के किनारे किनारे गहरे पोखर की ओर चलता गया। वहां पहुंचने के बाद वह उसमें कूद पड़ा, तो मछली उसे सहारा देते हुए काफी दूर तक तैरती चली गई। उसने तैरते हुए श्याऊतुङ से पूछा, “ऐसी कौन सी मुसीबत है, जिससे उबारने में तुम्हारी मदद करूं?”

श्याऊतुङ बोला, “मेरी दोस्त, झटपट मुझे छिपा लो। यदि तुम मुझे इस तरह छिपा सकीं कि कोई मुझे खोज न पाए, तो मैं अनेक नौजवानों को मौत के मुंह से बचा सकूंगा। अगर मुझे ढूंढ़ लिया गया, तो मुझे मार दिया जाएगा।”

मछली बोली, “अच्छी बात है! मेरे दोस्त, मैं तुम्हारी मदद जरूर करूंगी।”

उसने अपना विशाल मुंह खोला और श्याऊतुङ को अपने पेट में निगलकर पोखर की गहराइयों में तैर गई। उसने यह आज्ञा भी दी कि तमाम छोटी मछलियां नदी के ऊपरी तल में तैरें और वहां खूब कीचड़ उछाल-उछालकर नदी का पानी गंदला कर दें। अनगिनत छोटी मछलियां झुंडों में तैरती हुई अपने सिर और पूंछें हिला-हिलाकर कीचड़ उछालने लगीं। थोड़ी देर में ही साफ-सुथरा पानी एकदम कीचड़ में बदल गया और इससे नीचे सूर्य की किरणें भी दिखाई न दीं।

चौथे दिन निश्चित समय पर राजकुमारी राजमहल की ऊपरी मंजिल पर पहुंची। उसने जादुई आईने से चारों ओर देखना शुरू किया। आईने में पर्वतशृंखलाएं साफ साफ नजर आईं, चरागाह और रेगिस्तान दिखाई दिए और सातों तहों के बादल भी दृष्टिगोचर हुए, मगर श्याऊतुङ कहीं दिखाई न दिया। फिर उसने नदियां और झील-नाले देखने शुरू किए। इस बार श्याऊतुङ की पूरी शकल साफ साफ नजर आई।

राजकुमारी ने देखा कि एक नदी के ऊपरी भाग में अनगिनत छोटी मछलियां पानी मथ रही हैं और नदी के निचले भाग के एक गहरे पोखर में एक बड़ी ब्रीम मछली तैर रही है। उसके पेट में श्याऊतुङ चैन की नींद सो रहा है।

“मैंने खोज लिया !” राजकुमारी ने कहा और अपने दरबारियों को आज्ञा दी। “उस नदी की ओर तीन दिन का रास्ता तय करो। वहां नदी के निचले भाग के एक गहरे पोखर में एक बड़ी ब्रीम मछली है और उसके पेट में वह युवक सो रहा है। लेकिन तुम लोग उसे देख नहीं पाओगे, क्योंकि उस नदी का पानी इतना गंदा है कि उसमें कुछ भी दिखाई नहीं देता है। वहां जाकर सबसे पहले तुम लोग नदी के ऊपरी तल से तमाम छोटी मछलियों को भगा दो। इससे पानी साफ हो जाएगा और बड़ी ब्रीम मछली दिखाई देगी। जाओ, उस नौजवान को पकड़ लाओ !”

दरबारियों ने बड़ी सेना लेकर तीन दिन का रास्ता तय किया और वे नदी के उस भाग तक पहुंच गए। उन्होंने राजकुमारी की आज्ञा के अनुसार तमाम छोटी मछलियों को भगा दिया। इसके बाद पानी साफ हो गया तो वहां उन्होंने देखा कि एक गहरे पोखर में सचमुच एक बड़ी ब्रीम मछली मौजूद है। उन्होंने शीघ्र ही सिपाहियों को हुक्म दिया, “अब छोटी मछलियों को भगाना बंद करो और जल्दी ही जाल पोखर में फेंको !” सिपाहियों ने जाल फेंका और साथ ही वे चिल्लाए, “अरे नौजवान, हमारी राजकुमारी ने तुम्हें खोज लिया है ! तुम ऊपर आओ और अपने वचन का पालन करो !”

शोरशराबे से श्याऊतुड़ जाग उठा। उसने सोचा कि शेर कभी पीछे मुड़कर नहीं देखता, युवकों को अपनी बात का पक्का होना चाहिए। उसने मछली से कहा, “देखो, अब मैं जाने के लिए तैयार हूं ! तुम मुझे नदीतट पर पहुंचा दो।” मछली ने अपना सिर पानी की सतह तक उठाया और श्याऊतुड़ को नदीतट पर पटक दिया।

दरबारियों और सिपाहियों ने श्याऊतुड़ को राजकुमारी के सामने उपस्थित किया।

राजकुमारी के शादी का अनुरोध करने वालों के सामने यह शर्त रखी जाने के बाद से अनेक युवकों को अपनी जान से हाथ धोने पड़े थे। लेकिन वे सब युवक पथरीली गुफा, रेगिस्तान वगैरह ऐसे स्थानों में छिपे थे

जहां आसानी से खोज की जा सकती थी। सिर्फ श्याऊतुङ ही अकेला था जो बड़ी ब्रीम मछली के पेट में छिपा था। इस पर सबको बड़ा ताज्जुब हुआ। इसलिए जब राजकुमारी ने श्याऊतुङ का वध करने की आज्ञा दी, तो राजा उसे माफ कर देने के लिए राजकुमारी से अनुरोध करने लगा, “जरा ठहरो, मेरी प्यारी बेटी, इस बार उसका वध न करो! यदि तुम मुझे अपना पिता समझती हो, तो उसे फिर एक बार अपने को छिपाने का मौका दो!”

राजकुमारी अपने पिता को दुखी नहीं करना चाहती थी। इसलिए उसने श्याऊतुङ से कहा, “इस बार मैंने तुम्हें माफ कर दिया है और फिर एक बार अपने आपको छिपा सकते हो। अब जाओ!”

श्याऊतुङ ने सोचा, “अब कहां जाकर छिप जाऊं?” उसे बड़े गिद्धों की बात याद आई। वह रेगिस्तान में पहुंच गया और उनका दिया हुआ पर निकालकर जला दिया। पलभर में घनघोर घटाएं छाने लगीं, तूफान उठ आया और आकाश एकदम धूमिल हो गया। उसी समय बादलों से एक बड़ा गिद्ध उड़ते हुए आया और आकाश में तीन चक्कर लगाकर श्याऊतुङ के सामने ही उतर गया। उसने श्याऊतुङ से कहा, “मेरे प्यारे दोस्त! क्या मुसीबत है, जिससे उबारने में मेरी मदद की जरूरत है?”

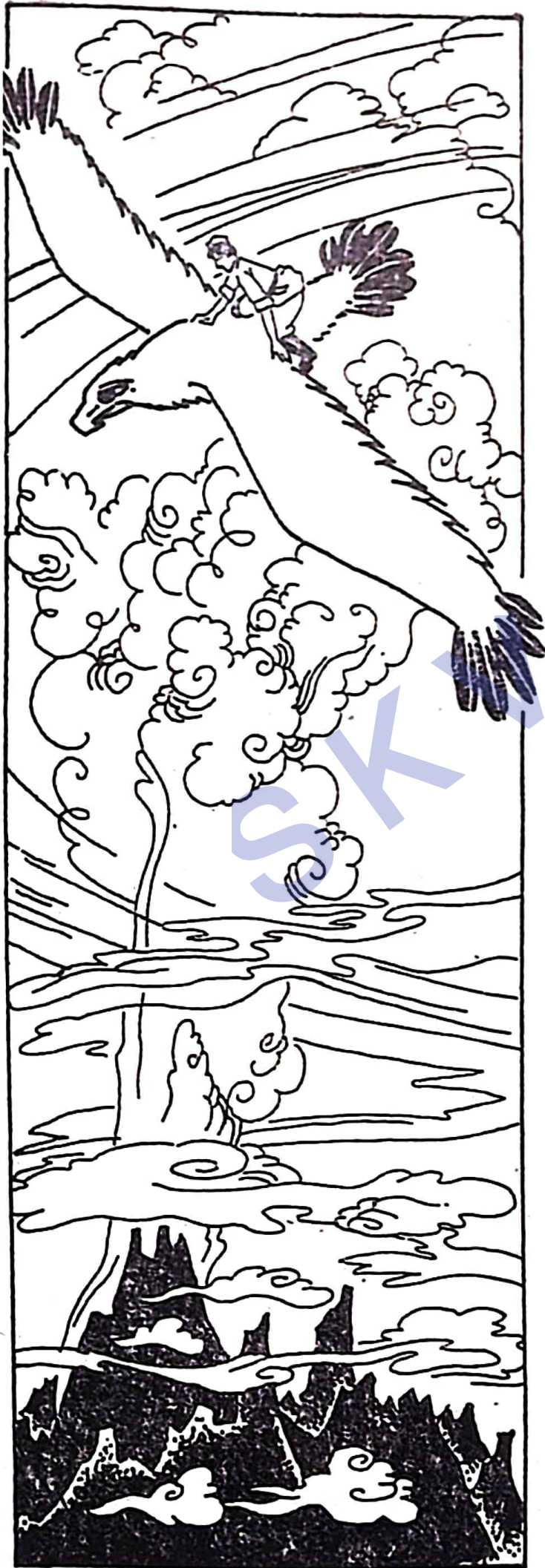
श्याऊतुङ ने पूरी बात बड़े गिद्ध को बताई और अनुरोध करते हुए कहा, “मेरे विश्वसनीय दोस्त! एक ऐसा सुरक्षित स्थान ढूंढने में मेरी मदद करो, जहां मैं छिप सकूँ!”

बड़ा गिद्ध बोला, “अच्छी बात है, तुम मेरी पीठ पर सवार हो जाओ। लेकिन याद रखो कि नीचे की ओर हरगिज नहीं देखना है वरना सिर में चक्कर आने से नीचे गिर जाओगे!”

श्याऊतुङ गिद्ध की पीठ पर सवार हो गया और गिद्ध बादलों से घिरे ऊंचे आकाश की ओर उड़ गया।

तीन दिन बाद राजकुमारी राजमहल की ऊपरी मंजिल पर पहुंची और अपने जादुई आईने से चारों ओर खोज शुरू कर दी। नदियों में

भी वह नजर न आया और झील-तालाबों में भी उसकी छाया तक दिखाई न दी। फिर वह नौजवान कहां छिप गया? राजकुमारी यह सोच ही रही थी कि अनजाने ही में उसने जादुई आईने को आसमान की ओर घुमाया, तो उसमें यह साफ साफ दिखाई दिया कि बादलों की सातवीं तह में एक बड़ा गिद्ध श्याऊतुङ को अपनी पीठ पर लादे उड़ रहा है। उसने अपने दरबारियों से कहा, “मैंने खोज ही लिया! मगर उसे पकड़ना पिछली बार से कहीं ज्यादा मुश्किल है। इस बार वह बड़े गिद्ध की पीठ पर सवार है और ऊंचे आकाश में उड़ रहा है। उसे न तो गोलियों से मारा जा सकता है और न ही उससे बात करने में कोई फायदा



है। लेकिन अब भी एक उपाय यह है कि मैं अक्सर देखती हूँ कि वह बड़ा गिद्ध एक लंबे अरसे तक उड़ने के बाद साफ पानी पीने के लिए हररोज एक तालाव के पास उतर जाता है। तुम सबसे पहले तालाव के पास नरकट के झाड़ों में छिप जाओ। बड़ा गिद्ध उतरे तो वह युवक भी गिद्ध की पीठ से उतरेगा और वे साथ साथ तालाव के पास जाकर पानी पिएंगे। ऐसे मौके पर तुम लोग बड़े गिद्ध को भगाकर उस युवक को पकड़ लो।”

दरवारी अनेक सिपाहियों को लेकर तालाव के पास पहुंच गए और नरकट के झाड़ों में छिपकर इंतजार करने लगे।

तीन दिन और तीन रातों तक उड़ते रहने के बाद बड़े गिद्ध को बहुत प्यास लगी। वह तालाव के पास ही नीचे आया और श्याऊतुड भी उसकी पीठ से उतरा। वे दोनों पानी पीने ही वाले थे, तो नरकट के झाड़ों में छिपे दरवारी और सिपाही जोर जोर से चिल्लाने लगे। बड़ा गिद्ध डर के मारे उड़ गया। श्याऊतुड गिद्ध की पीठ पर सवार न हो पाया और उसे गिरफ्तार करके राजकुमारी के सामने पेश किया गया।

इस बार सब लोग और अधिक अचंभे में पड़ गए। राजकुमारी ने श्याऊतुड का वध करने का हुक्म दिया तो रानी उसे माफ कर देने का अनुरोध करने लगी, “इस नौजवान ने कम आश्चर्यजनक काम नहीं किए हैं। मेरी प्यारी बेटो! अगर तुम मुझे अपनी मां समझती हो तो इस बार उसे माफ कर दो। कहावत है कि सफलता बार बार कोशिश करने पर ही निर्भर करती है, इसलिए मेरा सुझाव है कि उसे फिर एक बार छिपने का मौका दो।”

राजकुमारी अपनी मां को दुखी होते नहीं देखना चाहती थी, इसलिए वह उसकी बात पर राजी हुई और श्याऊतुड से बोली, “अच्छी बात है, अपनी मां के कहने से फिर एक बार तुम्हें माफ करती हूँ और दोबारा छिपने का मौका देती हूँ। लेकिन याद रखना, यह आखिरी दफा है। मगर शर्त विलकुल पहले की ही तरह है। यदि मैं तुम्हें खोज पाई तो तुम्हें मार

दिया जाएगा, यदि तुम्हें खोजने में मैं असफल रही तो मेरी शादी तुम्हारे साथ होगी।”

यह बात श्याऊतुङ के लिए विलकुल साफ थी कि यदि इस बार वह फिर खोज निकाला गया, तो उसके लिए माफी की सिफारिश करने वाला कोई नहीं होगा। अब क्या किया जाए? काफी सोच-विचार करने के बाद उसे लोमड़ी की प्रतिज्ञा की याद आई और वह उससे मदद लेने का अनुरोध करने गया। वह एक दिन चलता रहा और दूसरे दिन दोपहर को उस पर्वत की तलहटी में पहुंच गया, जिसमें उसने लोमड़ी को वचाया था। उसने झटपट घास में आग जला दी और थोड़ी देर में धूआं भी निकलने लगा। लोमड़ी तेजी से दौड़ती हुई आई और श्याऊतुङ से बोली, “मेरे अच्छे दोस्त, क्या कोई आफत है जिससे उबरने में मेरी मदद की जरूरत है!”

श्याऊतुङ ने शुरू से आखिर तक पूरी बात लोमड़ी को बताई और उसे वचाने के लिए उससे अनुरोध किया।

लोमड़ी ने बड़े आत्मविश्वास के साथ हामी भरते हुए कहा, “अरे! यह कौन सी बड़ी बात है! तुम्हें तो सबसे पहले मेरे यहां आना चाहिए था, क्यों नहीं आए? खैर, तुम थोड़ी देर यहां रुको।” यह कहकर लोमड़ी ने सुरंग खोदनी शुरू कर दी।

सुरंग तैयार हो गई और लोमड़ी उसमें घुस गई। श्याऊतुङ सुरंग के बाहर इंतजार करता रहा, मगर लोमड़ी बाहर नहीं निकली। फिर एक दिन गुजर गया लेकिन लोमड़ी का साया तक नजर न आया। फिर एक और दिन निकल गया तथा किस्मत आजमाने का वक्त आ ही गया। राजकुमारी थोड़ी देर बाद राजमहल की ऊपरी मंजिल पर चढ़ने ही वाली थी, फिर भी लोमड़ी न आई। अब क्या होगा?

श्याऊतुङ बेहद अधीर हो रहा था और उसे कोई उपाय नहीं सूझ रहा था, तो लोमड़ी ने सुरंग से बाहर निकलकर उससे कहा, “अब तुम सुरंग में घुस जाओ। दोस्त! मैंने इस सुरंग को राजकुमारी के महल के एकदम

नीचे तक खोद डाला है। सुरंग के आखिरी छोर पर भू-सतह बहुत पतली है, उसमें मैंने एक छोटा सा छेद बना दिया है, जिसके जरिए सूर्य की किरणें अंदर पहुंच सकती हैं। अब तुम वहां जाकर इंतजार करो और राजकुमारी तुम्हें देख नहीं पाएगी तो वह यही कहेगी, 'अच्छी बात है! वह युवक मुझे लेने आएगा तो मैं उससे शादी करूंगी।' यदि राजकुमारी राजमहल की ऊपरी मंजिल से नीचे उतरकर उस जगह से गुजरे, जहां छेद बना है, तो तुम उसी छेद की जगह पर अपने सिर से धक्का देना और वहां से बाहर निकलकर राजकुमारी को अपनी गोद में उठा लेना। वस तुम्हारा काम बन जाएगा। जाओ, मेरे मित्र, तुम्हारी सफलता के लिए मेरी शुभकामना!" यह कहकर लोमड़ी पर्वत की ओर चली गई।

श्याऊतुङ फौरन सुरंग में घुस गया और उसी वक्त राजकुमारी भी राजमहल की ऊपरी मंजिल पर पहुंची।

राजकुमारी ने आईने में दूर से नजदीक तक खोज शुरू कर दी। उसने पहाड़ियां और घाटियां देखीं, चरागाह और रेगिस्तान देखे, नदी-नाले तथा झील-तालाव देखे और बादलों से घिरा आकाश छान मारा, लेकिन श्याऊतुङ की छाया तक दिखाई न दी। राजकुमारी दूर से धीरे धीरे नजदीक की ओर देख रही थी, तो श्याऊतुङ भी धीरे धीरे रेंगते हुए राजकुमारी के पास पहुंच रहा था। यह सौभाग्य की बात थी कि राजमहल की जिस जगह पर राजकुमारी खड़ी थी, ठीक उसी के नीचे राजकुमारी ने बिलकुल ध्यान नहीं दिया। इसलिए यह स्वाभाविक था कि श्याऊतुङ का पता न चल पाया। राजकुमारी को श्याऊतुङ का कोई अता-पता न मिला तो उसे बड़ी निराशा हुई और वह राजमहल से नीचे उतरने लगी। फिर खुद-ब-खुद बुदबुदाई, "नौजवान, चाहे तुम कहीं भी क्यों न हो, अब आओ मेरे पास, अपनी शर्त के अनुसार मैं तुम्हारे साथ शादी करने को तैयार हूं!"

सुरंग में राजकुमारी की यह बात सुनकर श्याऊतुङ ने फौरन अपने सिर से उस स्थान पर, जहां से रोशनी आ रही थी, धक्का देकर एक बड़ा

छेद
की

था
इक

दान से प्राप्त

५. क्रमांक... 28379

सा. श्री अ. के. बु. इन्दौर



वना दिया और वह उससे बाहर कूद पड़ा। उसने झट राजकुमारी बांह पकड़ ली।

उधर राजा भी राजकुमारी का श्याऊतुङ से ब्याह करने पर सहमत। उसने अपने मातहत तमाम स्त्री-पुरुषों, बच्चे-बूढ़ों कुल मिलाकर ग़ालीस लोगों को बुला लिया और शानदार दावतें आयोजित कीं

ताकि श्याऊतुङ की सुखी जिंदगी का अभिनंदन किया जा सके। शादी की रस्म अदा की जाने वाली थी, तो श्याऊतुङ ने तमाम शाही रिश्तेदारों और सभी दरबारियों के आगे बड़े अदब के साथ राजा व रानी से कहा, “मैं आप लोगों का बड़ा आभारी हूँ। मैं मछुए का बेटा हूँ, इसलिए मुझे इस सुख से तनिक भी खुशी नहीं हुई। मैंने केवल शादी की इस घोर शर्त को रद्द कराने के लिए ही ऐसा किया है।” यह कहने के बाद उसने राजकुमारी पर एक नजर डाली, फिर राजा और रानी के सामने नतमस्तक होने के बाद वह कदम आगे बढ़ाते हुए महल के दरवाजे से बाहर चला गया। उस समय महल के सब लोग चकित से खड़े के खड़े रह गए। गुस्से से राजकुमारी का मुंह लाल-पीला हो गया और उसने चुपचाप अपना जादुई आईना उठाकर जमीन पर पटक दिया और उसके टुकड़े टुकड़े हो गए।

शिकारी हाएलीपू

(मंगोल जाति की लोककथा)

एक समय की बात है। हाएलीपू नाम का एक व्यक्ति था। उसके शिकार खेलकर अपना गुजारा करने की वजह से लोग उसे आनकेछन हाएलीपू कहकर पुकारते थे। वह हर वक्त दूसरों की मदद करने के लिए तैयार रहता था। वह शिकार के तमाम पशु-पक्षी कभी अकेले अपने लिए नहीं रखता था और हमेशा अपने पड़ोसियों को भी बांट देता था। इसलिए सब लोग उसका बड़ा आदर करते थे।

एक दिन हाएलीपू ऊंचे पहाड़ पर शिकार करने गया तो घने जंगल में उसने देखा कि एक सफेद सांपिन पहाड़ी पेड़ से लिपटी हुई सो रही है। उसकी नींद खराब न करने को ध्यान में रखते हुए वह दबे पांवों से थोड़ा चक्कर लगाकर वहां से चला गया। उसी समय, उसके सिर के ऊपर से एक भूरा सारस उड़ता हुआ आया। वह सरसर की आवाज के साथ नीचे की ओर झपटा और अपने पैने पंजों में सोई हुई नन्ही सफेद सांपिन को पकड़कर फिर आकाश की ओर उड़ गया। सफेद सांपिन चकित होकर जाग उठी और चीखने लगी, “बचाओ, बचाओ!” हाएलीपू ने झट कमान पर तीर चढ़ाया और पहाड़ी चोटी के साथ साथ उड़ रहे भूरे सारस की ओर निशाना साधकर चला दिया। भूरा सारस तीर से बचकर एक



ओर हो गया और नन्ही सफेद सांपिन को गिराकर चला गया। हाएलीपू नन्ही सफेद सांपिन से बोला, “नन्ही दया की पात्र, तू झटपट अपने मां-वांप के पास चली जा !” नन्ही सफेद सांपिन हाएलीपू को धन्यवाद देने के लिए सिर हिलाते हुए घास में छिप गई। हाएलीपू भी अपना तीर-कमान उठाकर घर लौट गया।

दूसरे दिन हाएलीपू उसी रास्ते से गुजर रहा था कि उसने देखा कि सांपों का एक झुंड एक नन्ही सफेद सांपिन को सहारा देते हुए उसकी ओर आ रहा है। हाएलीपू को बड़ा आश्चर्य हुआ, वह चक्कर लगाकर दूसरे रास्ते से जाना ही चाहता था कि नन्ही सफेद सांपिन उससे बोली, “जान बचाने वाले उपकारी, धन्य हैं आप ! शायद

अब आप मुझे नहीं पहचान रहे हैं। मैं नागराज की बेटा हूँ, कल आपने ही मुझे बचाया था। आज मेरे मां-बाप ने विशेष तौर पर मुझे यहां आपका स्वागत करने और आपको अपने घर आने का निमंत्रण देने भेजा है, ताकि मेरे मां-बाप सीधे आपको धन्यवाद दे सकें।” नन्ही सफेद सांपिन ने अपनी बात जारी रखी। “हमारे घर पहुंचने के बाद अगर मेरे मां-बाप आपको कुछ दें तो आप एक भी चीज स्वीकार न करें। आप सिर्फ मेरे बाप के मुंह में रखा रहने वाला हीरा ही मांगें। यह हीरा मिलने के बाद आप भी उसे अपने मुंह में ही रखें। इस तरह आप दुनियाभर के विभिन्न जीव-जंतुओं की बोलियां समझ सकेंगे। लेकिन उनकी एक भी बात किसी को बताने पर आप सिर से पैर तक सख्त पत्थर बनकर मर जाएंगे।”

यह सुनकर हाएलीपू सिर हिलाते हुए नन्ही सफेद सांपिन के साथ गहरी घाटी में चला गया। उनके आगे बढ़ते जाने पर उन्हें चारों तरफ हवा भी ज्यादा ठंडी महसूस हुई। एक गोदाम के दरवाजे पर पहुंचने के बाद नन्ही सफेद सांपिन बोली, “माफ कीजिए, मेरे मां-बाप आपको घर के अंदर नहीं बुला सकते। वे गोदाम के दरवाजे पर आपका इंतजार कर रहे हैं। लीजिए अब वे आ ही गए।”

नन्ही सफेद सांपिन यह कह ही रही थी कि बूढ़ा नागराज स्वागत करने के लिए आगे बढ़ा और उसने आदरपूर्वक कहा, “आपने मेरी प्यारी बेटा को बचाया है, मैं आपका बड़ा आभारी हूँ! यह मेरा गोदाम है, इसमें तरह तरह की बेशकीमती चीजें रखी हुई हैं। अब मैं अंदर ले जाकर वे आपको दिखाना चाहता हूँ। आप जो भी लेना चाहें, ले लीजिए, तकल्लुफ न करें!” अपनी बात खत्म करने के बाद उसने गोदाम का दरवाजा खोला और वह हाएलीपू को गोदाम के अंदर ले गया। गोदाम में दाखिल होने के बाद क्या देखते हैं कि वह आंखें चौंधिया देने वाली मोती, जेड व हीरे-जवाहरात वगैरह बेशकीमती चीजों से भरा हुआ है। बूढ़ा नागराज हाएलीपू को वहां से एक दूसरे गोदाम में ले गया और इस प्रकार वे कुल एक सौ आठ गोदाम देखने गए। फिर भी हाएलीपू को कोई भी चीज

पसंद न आई। बूढ़े नागराज ने बड़े दुख के साथ उससे पूछा, “मेरे उपकारी ! क्या मेरे गोदामों की इतनी बेशकीमती चीजों में से आपको एक भी पसंद नहीं आई ?” हाएलीपू ने जवाब दिया, “ये तमाम बेशकीमती चीजें बेशक बहुत दुर्लभ हैं, मगर सिर्फ सुंदर आभूषण बनाने के लिए हैं। हम शिकारियों के लिए तो ये बेकार हैं ! नागराज ! अगर आप सचमुच मुझे कोई चीज देना चाहते हैं, तो अपने मुंह में रखा हीरा मुझे दें !” यह बात सुनने के बाद नागराज ने अपना सिर नीचा करके जरा सोचा, दिल पर पत्थर रखकर अपने मुंह वाला हीरा उगलकर हाएलीपू के सुपुर्द कर दिया।

हीरा मिलने के बाद हाएलीपू ने नागराज से बिदा ली और बाहर निकल आया। नन्ही सफेद सांपिन भी उसके साथ साथ चल दी। उसने हाएलीपू को बार बार ताकीद करते हुए यह कहा, “यह हीरा मिलने से आपको सब बातों का पता होगा। लेकिन जो भी बातें आपको मालूम होंगी किसी दूसरे को बताने की तनिक भी इजाजत नहीं है। अगर आपने किसी को बताने दिया, तो आपको जरूर खतरा होगा। इसे हमेशा याद रखें !”

इसके बाद हाएलीपू को पहाड़ों में शिकार करते समय बड़ी सुविधा होने लगी। वह तमाम पक्षियों और जंगली जानवरों की बोलियां समझ लेता था, दूसरे पहाड़ में विचरते जीव-जंतुओं के बारे में भी उसे सब मालूम हो जाता था।

इस तरह कई साल गुजर गए। एक दिन वह पहाड़ में शिकार कर रहा था, अचानक उसे पक्षियों के एक झुंड की यह बातचीत सुनाई दी, “हमें जल्दी ही दूसरी जगह चले जाना चाहिए ! कल यहां आसपास का एक बड़ा पर्वत टूटेगा, बाढ़ आएगी और न जाने कितने पशु-पक्षी बाढ़ में डूबकर मरेंगे ?”

यह खबर सुनकर हाएलीपू बहुत परेशान हुआ और शिकार करने में उसका जी नहीं लग रहा था। वह जल्दी ही घर लौट गया और उसने सब लोगों को बताया, “हमें जल्दी ही यहां से कहीं दूसरी जगह चले

जाना चाहिए ! अब यह जगह रहने के लायक नहीं है ! यदि किसी को विश्वास नहीं है तो भविष्य में पछताने का भी मौका नहीं रहेगा !”

उसकी बात सुनकर सबको बड़ा ताज्जुब हुआ । कुछ लोगों का मत था कि यह बात तो कभी नहीं हो सकती है, अन्य कुछ का ख्याल था कि हाएलीपू जरूर पागल हो गया है । उसकी बात पर कोई विश्वास नहीं कर रहा था ! अधीरता में हाएलीपू की आंखों से आंसू टपक पड़े और वह बोला, “क्या सब लोग यह चाहते हैं कि मैं पहले मर जाऊं तो मेरी बात पर यकीन करेंगे ?”

कुछ बुजुर्गों ने हाएलीपू से कहा, “तुम कभी झूठ नहीं बोलते हो, यह बात सब जानते हैं । मगर अब तुम कहते हो कि यह स्थान रहने के योग्य नहीं है, तो यह कहने का कोई आधार तो होगा । तुम जरा हमें बताओ तो !”

हाएलीपू ने सोचा, “अब थोड़ी देर में आफत आने ही वाली है । यदि मैं अकेला ही आफत से बच निकलूं और सब लोगों को मुसीबत में फंसे दूं, तो क्या यह सही होगा ? नहीं, अपनी जान की कीमत पर भी मैं सबको बचा लूंगा ।”

इस तरह उसने पूरी बात सब लोगों को बता दी यानी कैसे उसे बेशकीमती हीरा मिला, कैसे वह उसकी मदद से शिकार करने जाता रहा, फिर कैसे आज उसने पक्षियों की बातचीत सुनी और कैसे उसने आफत से बचने के लिए पक्षियों को जगह बदलते देखा । इसके साथ ही उसने हीरे की वजह से सुनी हुई बातें दूसरों को बताने की मनाही और वचन का उल्लंघन करने पर सख्त पत्थर बनकर मर जाने के बारे में भी बताया । यह कहते कहते ही हाएलीपू धीरे धीरे एक सख्त पत्थर बनता चला गया ।

हाएलीपू का रूप-परिवर्तन देखकर सब लोग बड़े दुखी हुए लेकिन उन्हें झटपट घोड़ों, गाय-बैलों व भेड़-बकरियों को हांकते हुए घरों का स्थानांतरण करना पड़ा । रात में जब वे लोग जा रहे थे, तो आसमान में घटाटोप बादल छाए हुए थे, रातभर मूसलाधार वर्षा हुई । अगली

सुबह भी बिजली कड़कती रही, अचानक आसमान व पृथ्वी को हिला देने वाली कड़के की एक जोरदार आवाज गूंज उठी और क्षणभर ही में पर्वत टूट पड़ा और जोरदार बाढ़ आई। यह देखकर सब लोग अत्यंत भावविभोर हुए और कहने लगे, “अगर हाएलीपू ने हम सब लोगों के लिए अपनी जान की कुर्बानी न दी होती, तो हम लोग जरूर बाढ़ के पानी में डूबकर मर जाते!” बाद में सब लोगों ने पत्थर बने हाएलीपू को खोज निकाला और उसे एक पर्वत की चोटी पर खड़ा किया। वीर हाएलीपू, जिसने सब लोगों की हिफाजत के लिए अपनी जान अर्पित कर दी थी, की याद में नई संतानें पीढ़ी-दर-पीढ़ी उसकी पूजा करती रही हैं। लोककथा के अनुसार आज तक “हाएलीपू पत्थर” नामक एक स्थान भी मौजूद है।

चतुर लाल लोमड़ी

(मंगोल जाति की लोककथा)

बहुत पहले की बात है। पाओल्वोरताए नामक एक गरीब और बेचारा लड़का झोपड़ी में अकेला ही रहता था। वह जंगली चूहे और चिड़ियां पकड़कर गुजारा करता था।

एक दिन किसी शिकारी को एक लाल लोमड़ी दिखाई दी तो उसने उसका पीछा करना शुरू कर दिया। वह लोमड़ी शिकारी से बच भागने की कोशिश कर रही थी तो संयोग से उसे पाओल्वोरताए मिल गया। लोमड़ी ने उससे प्रार्थना करते हुए कहा, “भैया, मुझे बचा लें! अगर आपने मुझे बचा लिया तो मैं बाद में मौका आने पर आपकी मदद जरूर करूंगी।”

पाओल्वोरताए ने उस बेचारी लोमड़ी को बेसहारा देखकर झटपट उसे घास के ढेर में छिपा लिया। उसके थोड़ी देर बाद ही शिकारी ने आकर पाओल्वोरताए से पूछा, “अरे, छोटे भाई! तुमने इधर कोई लाल लोमड़ी तो नहीं देखी?”

पाओल्वोरताए ने जवाब दिया, “मैं एक गरीब लड़का हूँ, एक टूटी-फूटी झोपड़ी के अलावा मेरे पास कुछ भी तो नहीं है। यहां छिपने की



कोई जगह नहीं है, वह लोमड़ी उत्तर की ओर भाग गई होगी।”

शिकारी लोमड़ी का पीछा करने के लिए तुरंत उत्तर की ओर दौड़ गया। इस तरह पाओल्वोरताए ने लाल लोमड़ी को बचा लिया।

एक दिन बाद लाल लोमड़ी फिर आई और उसने पाओल्वोरताए से कहा, “छोटे भाई, आपने मेरी जान बचाई है। मुझे राजा हुरमूसूथ की बेटी को यहां लाने और उसे आपकी पत्नी बनाने दीजिए। आपकी क्या राय है?”

पाओल्वोरताए ने कहा, “छोड़िए इस बात को! मैं एक गरीब लड़का हूं। राजा हुरमूसूथ की बेटी से कैसे शादी कर सकता हूं?”

“आप फिक्र न करें, मुझे एक तरकीब सूझ गई है।”

अगले दिन लाल लोमड़ी ने स्वर्गलोक में जाकर राजा हुरमूसूथ से कहा, “महाराज, मैं आपका तराजू उधार लेने आई हूं। मैं इससे मनुष्यलोक में रहने वाले लखपति पाओल्वोरताए के सोने-चांदी को तोलना चाहती हूं।”

यह सुनकर राजा हुरमूसूथ को बहुत ताज्जुब हुआ। उसने पहले कभी नहीं सुना था कि मनुष्यलोक में पाओल्वोरताए नामक कोई लखपति भी रहता है। वह उससे मिलना चाहता था, इसलिए उसने फौरन तराजू मंगवाकर लाल लोमड़ी को दे दिया।

लाल लोमड़ी तराजू लेकर वापस चली गई। उसने उसे पत्थर और रेत से खूब रगड़ा। इससे तराजू की शकल-सूरत काफी बिगड़ गई। सात दिन बाद लोमड़ी ने राजा को तराजू लौटाने के लिए जाने की तैयारी की। उसने जाने से पहले पाओल्वोरताए से कहा, “आप अपने घर की सभी संपत्ति बेच दें तो उससे पांच ल्याड चांदी मिल जाएगी।”

पाओल्वोरताए को उसका मकसद समझ में नहीं आ रहा था। इसलिए उसने लोमड़ी को शिकायतभरे लहजे में कहा, “अरे, आपने तो कहा था कि आप हर समय मेरी मदद करने को तैयार हैं। फिर मुझसे सब कुछ बेचने के लिए क्यों कह रही हैं? इससे तो मरे पास खाना पकाने के बर्तन

भी नहीं रह जाएंगे।”

“फिक्र न करो, भैया ! आप इंतजार कीजिए !”

लाल लोमड़ी पांच ल्याड चांदी लेकर तराजू लौटाने चली गई। राजा के पास पहुंचने पर उसने कहा, “महाराज, मनुष्यलोक के लखपति पाओ-ल्वोरताए की सारी संपत्ति तोलने में मुझे पूरे सात दिन लग गए। आज मैं आपको यह तराजू लौटाते हुए पांच ल्याड चांदी उपहार के रूप में देती हूं।”

राजा ने तराजू लेकर देखा कि वह रगड़ से काफी खराब हो गया है। उसने मन ही मन सोचा कि पाओल्वोरताए के घर में जरूर सोने और चांदी की बहुतायत होगी। लाल लोमड़ी ने उसके विचारों को भांपते हुए कहा, “महाराज, मुझे वरेखिया बनने दीजिए। आपकी राजकुमारी की शादी मनुष्यलोक के इस लखपति पाओल्वोरताए से करवा दें तो कैसा रहेगा ?”

इतना अमीर दामाद कहां मिलेगा, लेकिन राजा को थोड़ा सा शक भी हुआ तो उसने कहा, “देखेंगे, तुम पहले पाओल्वोरताए को अपने साथ यहां लाकर मुझसे मिलवाओ।”

लाल लोमड़ी ने खुशी खुशी राजा का प्रस्ताव स्वीकार किया और फौरन पाओल्वोरताए को बुलाने के लिए चली गई।

पाओल्वोरताए ने यह बात सुनते ही साफ इंकार करते हुए कहा, “नहीं। मैं इतना गरीब हूं, अगर राजा को मालूम हो गया तो वह गुस्से से आगवबूला होकर हम दोनों को जरूर मौत के घाट उतरवा देगा !”

“आप फिक्र न करें और मेरे साथ आएं !”

यह कहकर लाल लोमड़ी पाओल्वोरताए को साथ लेकर राजा से मिलने चली गई। वे दोनों राजमहल के नजदीक आ पहुंचे। उसी समय लाल लोमड़ी को एक तरकीब सूझी और उसने पाओल्वोरताए के सामने सुझाव पेश करते हुए कहा, “आप यहीं कहीं जानबूझकर कीचड़ में फंस जाएं।”

पात्रोल्वोरताए ने उसके कहने के अनुसार काम किया। फिर लोमड़ी झटपट दौड़ते हुए चिल्लाई, “कमवख्त ! महाराज, यहां का रास्ता बहुत खराब है, आपका दामाद कीचड़ में फंस गया है ! तुरंत एक अच्छा घोड़ा और कुछ शानदार कपड़े उसे भिजवा दें ताकि वह सजधज के साथ आपसे मुलाकात कर सके वरना आपका दामाद नाराज हो जाएगा।”

राजा यह सुनकर घबरा गया। इसलिए उसने फौरन अपने दामाद के लिए घोड़ा और बढ़िया कपड़े लाने और लाल लोमड़ी को पहुंचाने का हुक्म दिया। पात्रोल्वोरताए कपड़े बदलने लगा तो लाल लोमड़ी ने उसे बार बार हिदायत देते हुए कहा, “भैया, आप राजा के पास जाकर तीन बातों का ध्यान रखें ! पहली, आप घोड़े को खूटे पर बांधकर पीछे मुड़कर उसकी ओर न देखें। दूसरी, आप कमरे में जाकर अपने कपड़ों पर नजर न डालें और तीसरी, आप खाना खाते समय मुंह से खाने की आवाज न निकलने दें।”

पात्रोल्वोरताए महाराजा के पास पहुंचते ही इन तीन बातों को बिल्कुल भूल गया। वह पीछे मुड़कर अपने घोड़े को और बार बार अपने कपड़ों को जी भरकर देखता रहा तथा खाना खाते समय उसके मुंह से लगातार आवाजें भी निकलती रहीं। यह देखकर राजा को शक होने लगा। इसलिए उसने लाल लोमड़ी को अपने पास बुलाकर कहा, “पात्रोल्वोरताए शायद गरीब है ! ऐसा लगता है कि उसने कभी इतने अच्छे घोड़े पर सवारी नहीं की और न ही कभी इतने अच्छे कपड़े पहने तथा इतने स्वादिष्ट पकवान भी नहीं खाए हैं।”

लाल लोमड़ी ने बड़ी होशियारी से कहा, “महाराज, आपको गलतफहमी हो गई लगती है ! आपका घोड़ा उसके घोड़े की तुलना में घटिया है, उसके लिए ये कपड़े भी चुस्त नहीं हैं और खाना भी स्वादिष्ट नहीं है। इन सभी चीजों की उसे आदत नहीं है।”

यह सुनकर राजा ने ऐसा महसूस किया कि पात्रोल्वोरताए शरीफ आदमी है, तो उसने विवाह की बात स्वीकार कर ली।

लेकिन इस पर पाओल्वोरताए को और ज्यादा घबराहट होने लगी। उसने लाल लोमड़ी से धीमी आवाज में कहा, “क्या बदकिस्मती है? अगर राजकुमारी की शादी मुझसे होगी तो राजा को मेरी असली हालत का पता चल ही जाएगा। क्या वह हम दोनों को जिंदा छोड़ेगा?”

“डरो मत, मुझे पहले जाने दें।”

यह कहकर लाल लोमड़ी राजमहल से निकलकर लौटने के रास्ते पर जा रही थी तो उसने एक चरागाह में चलते चलते ऊंटों का एक झुंड देखा और पूछा, “अरे, ये किस के ऊंट हैं?”

ऊंटों की देखरेख करने वाले ने जवाब दिया, “पंद्रह सिरों वाले दानव के अलावा और किस के पास इतने ज्यादा ऊंट हो सकते हैं?”

इस पर लाल लोमड़ी ने कहा, “मेरी बात ध्यान से सुनो। राजा हुरमूसूथ मनुष्यलोक में आने वाला है। अगर तुमने उसे इन ऊंटों को दानव के बताया, तो वह तुम्हें मार डालेगा। अगर तुमने उसे मनुष्यलोक के लखपति पाओल्वोरताए के ऊंट बताया, तो तुम्हारी जान बच जाएगी।”

“जी हां, मैं याद रखूंगा। बहुत धन्यवाद!”

इसके बाद लाल लोमड़ी फिर आगे बढ़ने लगी। उसे घोड़ों का एक झुंड नजर आया, तो उसने पूछा, “अरे, चरवाहे, ये किस के घोड़े हैं?”

चरवाहे ने जवाब दिया, “पंद्रह सिरों वाले दानव के अलावा और किस के पास इतने ज्यादा घोड़े हो सकते हैं?”

“मेरी बात ध्यान से सुनो। राजा हुरमूसूथ मनुष्यलोक में आने वाला है। अगर तुमने उसे इन घोड़ों को दानव के बताया, तो वह तुम्हें मार डालेगा। अगर तुमने उसे मनुष्यलोक के लखपति पाओल्वोरताए के घोड़े बताया, तो तुम्हारी जान बच जाएगी।”

“जी हां, मैं याद रखूंगा। बहुत धन्यवाद!”

लाल लोमड़ी फिर आगे बढ़ने लगी। उसे गाय-बैलों का एक झुंड दिखाई दिया तो उसने पूछा, “अरे, ग्वाले, ये किस के घर के गाय-बैल हैं?”

ग्वाले ने जवाब दिया, “पंद्रह सिरों वाले दानव के अलावा और किस

के पास इतने ज्यादा गाय-बैल हो सकते हैं ?”

“मेरी बात ध्यान से सुनो। राजा हुरमूसूथ मनुष्यलोक में आने वाला है। अगर तुमने उसे इन गाय-बैलों को दानव के बताया, तो वह तुम्हें मार डालेगा। अगर तुमने उसे मनुष्यलोक के लखपति पाओल्वोरताए के गाय-बैल बताया, तो तुम्हारी जान बच जाएगी।”

“जी हां, मैं याद रखूंगा। बहुत धन्यवाद !”

लाल लोमड़ी फिर आगे बढ़ने लगी। उसे भेड़-वकरियों का एक झुंड नजर आया तो उसने पूछा, “अरे, चरवाहे, ये किस की भेड़-वकरियां हैं ?”

चरवाहे ने जवाब दिया, “पंद्रह सिरों वाले दानव के अलावा और किस के पास इतनी ज्यादा भेड़-वकरियां हो सकती हैं ?”

मेरी बात ध्यान से सुनो। राजा हुरमूसूथ मनुष्यलोक में आने वाला है। अगर तुमने उसे ये भेड़-वकरियां दानव की बताईं, तो वह तुम्हें मार डालेगा। अगर तुमने उसे मनुष्यलोक के लखपति पाओल्वोरताए की भेड़-वकरियां बताईं, तो तुम्हारी जान बच जाएगी।”

“जी हां, मैं याद रखूंगा। बहुत धन्यवाद !”

लाल लोमड़ी चलते चलते दानव के महल में पहुंच गई। वह पंद्रह सिरों वाले दानव से मिली तो उसने लोमड़ी से पूछा, “चालाक लोमड़ी, तुम यहां क्यों आई हो ? क्या मुझे धोखा देने आई हो ?”

लाल लोमड़ी ने कहा, “जल्दी भागो, राजा हुरमूसूथ आने वाला है। तुम जल्दी से भेड़ों के बाड़े में बड़े पत्थर के नीचे छिप जाओ। अगर राजा ने तुम्हें देख लिया तो तुम्हें मार डालेगा !”

दानव यह सुनते ही डर के मारे अवाक रह गया। वह झटपट भेड़ों के बाड़े में पत्थर के नीचे छिपने के लिए भाग गया। इसके बाद लाल लोमड़ी ने दानव के दरबारियों से कहा, “आप लोग भी सावधान रहें ! अगर राजा आपसे पूछे कि आप कौन हैं, तो आपको कहना चाहिए कि हम मनुष्यलोक के लखपति पाओल्वोरताए के नौकर हैं। अगर उसे यह मालूम हो गया कि आप लोग दानव के दरबारी हैं तो वह आप लोगों को



मौत के घाट उतार देगा !”

दानव के दरवारी यह सुनकर बहुत भयभीत हो उठे। उन्होंने लोमड़ी की बात मान ली।

थोड़ी देर बाद राजा हुरमूसूथ खुद अपनी बेटी को साथ लेकर पाओल्बोरताए से मिलने आ रहा था। रास्ते में उसने ऊंटों, घोड़ों, गाय-बैलों व भेड़-वकरियों के बड़े बड़े झुंड देखे। उसने उन्हें चराने वालों से पूछा कि वे किस के मवेशी हैं। सबने एक ही जैसा जवाब दिया, “ये सब मवेशी मनुष्यलोक के लखपति पाओल्बोरताए के हैं।” अंत में राजा दानव के महल में पहुंच गया। वह भव्य महल देखकर फूले अंग न समाया। उसके मुंह से सिर्फ यही बात निकली, “अरे, मेरा दामाद पाओल्बोरताए सचमुच लखपति है !”

लाल लोमड़ी ने कहा, “जी हां, आपके दामाद के भाग्य में लिखा हुआ है कि उसे आज से और ज्यादा अमीर होना चाहिए। एक ज्योतिषी ने कहा था कि भेड़ों के बाड़े में पत्थर के नीचे एक वदमाश है। वह पाओल्बोरताए को सुखमय जीवन विताने नहीं देगा। महाराज, आप जल्दी से उस वदमाश का काम तमाम कर डालें !”

लाल लोमड़ी की बात सुनकर राजा हुरमूसूथ गुस्से से आगबबूला हो उठा। वह फौरन गरजने लगा तो इससे बाड़े में पत्थर के टुकड़े टुकड़े हो गए। पंद्रह सिरों वाले दानव पर बिजली गिरी और वह दानव मर गया।

इसके बाद पाओल्बोरताए राजा हुरमूसूथ का दामाद बनकर राज-कुमारी के साथ दानव के महल में सुखमय जीवन विताने लगा।

विचित्र पंछी

(मंगोल जाति की लोककथा)

बहुत पहले की बात है। उत्तर के जंगल में एक चालाक और बातूनी विचित्र पंछी रहता था। बहुत से देशों के राजाओं, दरबारियों और लखपतियों ने उस विचित्र पंछी को पकड़ने के लिए अनेक बार कोशिशें कीं लेकिन उड़कर कहीं न जाने के बावजूद वह पकड़ने की कोशिश करने वाले के पास भी नहीं रहता था और मजे से आजादी के साथ पुराने फले-फूले चीड़ों पर चहकता रहा। कहा जाता है कि उसे पकड़ने के लिए इतने ज्यादा लोग कोशिश करते थे कि उनके वहां आने-जाने से एक अच्छा-खासा पहाड़ी रास्ता ही बन गया था।

बाद में उस विचित्र पंछी की बात पूर्व के एक बादशाह इर्तकर खां के कान में भी पड़ी। उसने कहा, “यह बहुत चालाक पंछी है, कोई भी उसे नहीं पकड़ पाया। लेकिन मैं जरूर उसे पकड़ने में कामयाब हो जाऊंगा!” यह कहकर वह पंछी पकड़ने के लिए चल दिया।

इर्तकर खां उत्तर के जंगल में चीड़ के उस घने पेड़ के नीचे पहुंच गया। वह विचित्र पंछी बादशाह का इरादा जानते हुए भी मस्ती से बैठा रहा। उसने उड़ने की कोशिश भी नहीं की। इसलिए इर्तकर खां ने बड़ी आसानी से उसे पकड़ लिया। बादशाह बहुत खुश था। वह पहाड़ी रास्ते से घर



8127

लौट रहा था तो विचित्र पंछी ने उससे कहा, “जहांपनाह ! आपने मुझे बड़ी आसानी से पकड़ लिया है । लेकिन एक शर्त यह है कि मुझे साथ ले जाते समय ठंडी सांस लेने या खामोश रहने की मनाही है । दोनों में से कुछ भी हुआ तो मैं उसी वंक्त उड़ जाऊंगा । इसलिए चलते चलते हम दोनों में से किसी एक को कोई कहानी सुनाते रहना चाहिए ।” इतकर खां ने शर्त स्वीकार करते हुए कहा, “अच्छा, पहले तुम सुनाओ !”

“जी हां, तो लीजिए मैं आपको कहानी सुनाता हूं,” विचित्र पंछी ने कहा। “कहा जाता है कि किसी जगह एक कुशल शिकारी रहता था। उसके पास एक बढ़िया कुत्ता था। एक दिन वह कुत्ता लेकर शिकार करने बाहर चला गया। घाटी में उसने सोने और चांदी से भरी एक बैलगाड़ी देखी। बैलगाड़ी रास्ते में खराब हो जाने की वजह से आगे नहीं बढ़ पा रही थी। उसका मालिक वहां रास्ते के किनारे बहुत उदास बैठा हुआ था। शिकारी ने उसे नमस्ते की और उसके साथ बैठकर सिगरेट पीने लगा। बैलगाड़ी के मालिक ने कहा, ‘साहब, मैं पहाड़ के उस पार गांव में जाकर किसी गाड़ी ठीक करने वाले को बुलाना चाहता हूं। आप अपने कुत्ते के साथ यहीं बैठे रहकर मेरी गाड़ी का ध्यान रखें तो आपकी बहुत मेहरबानी होगी!’ शिकारी ने कहा, ‘जी हां, इसमें मेहरबानी की क्या बात है?’ बैलगाड़ी का मालिक बड़े संतोष से चला गया।

“शिकारी वहां शाम तक उसका इंतजार करता रहा लेकिन गाड़ी के मालिक का कुछ अता-पता ही न था। शिकारी ने मन ही मन सोचा, ‘मेरी मां की नजर बहुत कमजोर है, शायद उन्होंने सुबह से खाना भी नहीं खाया होगा।’ फिर उसने कुत्ते से कहा, ‘तुम गाड़ी का मालिक लौट आने तक यहीं गाड़ी की चोर-लुटेरों से हिफाजत करो! मैं मां के लिए खाना पकाने जा रहा हूं।’ यह कहकर वह वहां से चला गया।

“कुत्ता अपने मालिक के कहने के अनुसार पूरी वफादारी से गाड़ी और बैल दोनों की रखवाली करने लगा और उसने बैल को भागने नहीं दिया। वह अच्छे पहरेदार की तरह बैलगाड़ी के चारों ओर चक्कर काटता रहा।

“उस गाड़ी के मालिक को कोई गाड़ी ठीक करने वाला ढूंढ़ने के लिए कई गांवों के चक्कर काटने पड़े। आधी रात हो जाने पर ही उसे एक गाड़ी ठीक करने वाला मिला। गाड़ी के मालिक ने लौटकर देखा कि शिकारी तो जा चुका है लेकिन उसका कुत्ता वहां वफादारी के साथ उसकी गाड़ी की निगरानी कर रहा है। गाड़ी के मालिक ने कहा, ‘यह कुत्ता

सचमुच बहुत अच्छा है !' इसलिए उसने कुत्ते को कुछ चांदी देकर घर लौट जाने के लिए कहा। उसी समय शिकारी अपने दरवाजे पर कुत्ते का इंतजार कर रहा था। कुत्ते ने अपने मालिक को देखते ही मुंह में पकड़ी हुई चांदी जमीन पर रख दी। यह देखकर शिकारी को गुस्सा आया और उसने कहा, 'मैंने तुम्हें सिर्फ गाड़ी की हिफाजत करने का काम सौंपा था, लेकिन तुम चांदी क्यों चुरा लाए !' और शिकारी ने बड़ा डंडा उठाकर कुत्ते को मार डाला !”

“हे राम ! इतनी लापरवाही ! इतने अच्छे कुत्ते को मार डाला !” इतकर खां ने ठंडी सांस लेते हुए कहा।

“अरे, आपने ठंडी सांस ली,” कहते ही विचित्र पंछी तुरंत उड़ गया। इतकर खां ने अपने आपको कोसते हुए कहा, “अरे, मुझे क्या हो गया, मैं ठंडी सांस न लेने का वादा कैसे भूल गया !”

इसके बाद उसने उत्तर के जंगल में जाकर चीड़ के पेड़ से विचित्र पंछी को दूसरी बार पकड़ लिया। पहली बार वाली शर्त कायम रही। विचित्र पंछी ने कहा, “अच्छा, मैं एक और कहानी सुनाता हूं। कहा जाता है कि कहीं एक महिला रहती थी। उसके पास एक बड़ी समझदार बिल्ली थी। एक दिन वह महिला कुएं से पानी लेने जा रही थी तो उसने बिल्ली से कहा, ‘तुम पालने में लेटे बच्चे की अच्छी तरह देखभाल करना !’ इतना कहने के बाद वह चली गई और उसके कहने के मुताबिक वह बिल्ली पालने के पास बैठकर मक्खियों और मच्छरों को उड़ाती रही। अचानक दरवाजे के पीछे से एक बड़ा चूहा बाहर निकला। वह चूहा चोरी चोरी बच्चे को काटना चाहता था। इसलिए बिल्ली को गुस्सा आया और वह चूहे का पीछा करते हुए कमरे के बाहर चली गई। उसी वक्त एक और बड़ा चूहा दौड़ते हुए वहां आया। वह एक ही बार में बच्चे का कान काटकर भाग गया। बच्चा दर्द के मारे चीख-चीखकर रो पड़ा। बिल्ली बच्चे के रोने की आवाज सुनते ही फौरन कमरे में लौट आई और उसने दरवाजे के पीछे छिपे चूहे को काटकर मार डाला। फिर वह बिल्ली बच्चे के पास



बैठकर उसके कान से निकले खून को अपने मुंह से पोंछने लगी। वह महिला लौटी तो यह देखकर गुस्से से आगबबूला हो गई और बोली, 'मैंने तुम्हें बच्चे की देखभाल का काम सौंपा था, लेकिन तुमने खुद ही उसका कान काटकर खाने की हिम्मत की!' इसलिए उसने बिल्ली को पीट-पीटकर मार डाला। लेकिन जब उसने मुड़कर देखा कि दरवाजे के पीछे एक मरे हुए चूहे के मुंह में बच्चे का कान पड़ा हुआ है तो उसे पता चला कि उसने बिल्ली को मारकर गलती की है। इसलिए वह रोने लगी।"

"हाय, बेचारी बिल्ली!" इतकर खां ने यह कहते हुए ठंडी सांस ली तो विचित्र पंछी फिर उड़ गया।

इर्तकर खां तीसरी बार उत्तर के जंगल में गया। एक बार फिर उसने चीड़ के पेड़ से विचित्र पंछी पकड़ा। वह टेढ़े-मेढ़े पहाड़ी रास्ते से लौट रहा था। रास्ते में विचित्र पंछी अपनी पहले की ही शर्त के अनुसार फिर कहानी सुनाने लगा, “बहुत पहले की बात है। एक साल बारिश बहुत कम हुई और सूखा पड़ गया। आलबे नामक एक आदमी सूखे की मुसीबत से बचने के लिए बाहर जा रहा था। कड़ी धूप में चलते चलते उसे बहुत प्यास लगी और वह आगे चलने में असमर्थ महसूस करने लगा। इसलिए वह एक ऊंची चट्टान के नीचे बैठ गया। अचानक उसने देखा कि चट्टान के ऊपरी हिस्से से पानी बूंद बूंद करके नीचे टपक रहा है। इसलिए आलबे खुशी से फूला न समाया। वह फौरन एक प्याले में पानी इकट्ठा करने लगा। उसने प्याले का पानी पीना चाहा तो अचानक एक कौआ उड़कर वहां पहुंचा और उसने अपने पंख से उसके प्याले को जमीन पर गिरा दिया। आलबे को गुस्सा आया और उसने कहा, ‘ईश्वर को मुझसे हमदर्दी है, इसलिए उसने मुझे एक एक बूंद करके पानी दिया, लेकिन वह भी इस दुष्ट कौए ने बहा दिया।’ उसने कौए का पीछा करके पत्थर से उसे मारा। फिर वह कौए के नजदीक गया तो देखा कि आगे रास्ते में चट्टान की दरारों से पानी बह रहा है। यह देखकर आलबे को बहुत खुशी हुई। इसलिए उसने काफी पानी पिया। फिर वह पहले बैठने की जगह पर लौटा तो उसने सिर उठाकर देखा कि चट्टान के ऊपरी हिस्से पर एक बड़ा सांप सो रहा है और उस जहरीले सांप के मुंह से पानी टपक रहा है। उसने सोचा, ‘अरे, पहले मैं उसके मुंह का पानी पीने वाला था! इस कौए ने मेरी जान बचाई है!’ उसे अपनी करनी पर बहुत पछतावा हुआ और वह रोने लगा।”

इर्तकर खां ने कहा, “हाय, बेचारा कौआ! उसने उस आदमी की जान बचाने के लिए कुरबानी दी!”

विचित्र पंछी ने कहा, “आपने फिर ठंडी सांस ली!” यह कहते ही वह फिर उड़ गया।

“छोड़ो, मैं उसे पकड़ने में असमर्थ हूँ !” इतकर खां यह कहकर घर लौट गया ।

SKV

शंखवाला

(तिब्बती जाति की लोककथा)

बहुत पहले, कोई तीन बहनें थीं। उनके नाम थे सोनावाला, चांदीवाला और शंखवाला। तीनों बहनें तेज होने के साथ साथ कुशल भी थीं और खूबसूरत तो इतनी थीं कि जैसे पहाड़ी फूल हों। उनकी सुंदरता के कारण उनसे सगाई करने के लिए दूर दूर के गांवों से आने वाले नौजवानों का वसंत के भौरों की तरह तांता लगा रहता था। लेकिन सोनावाला और चांदीवाला उन नौजवानों को गरीब या बदसूरत होने की वजह से एक एक करके ठुकरा देती थीं। आखिर दोनों बालाएं अपने आपको बहुत ऊंची समझती थीं और उनके स्वभाव में भी बड़ी नटखटता थी। शंखवाला अपनी दोनों बड़ी बहनों से विलकुल अलग तरह की थी। वह उम्र में छोटी होने पर भी बड़ी नेक और ईमानदार थी। वह चाहती थी कि कोई ऐसा मेहनती नौजवान मिले जिसके साथ वह जिंदगीभर शांति से रह सके।

एक दिन अलस्सुवह सोनावाला सोने की बाल्टी लेकर पानी लाने जाने वाली थी। उसने दरवाजा खोला ही था कि वह डरकर झट दरवाजे के अंदर हट गई। दरअसल, बात यह थी कि दरवाजे के बाहर कोई गंदा बूढ़ा भिखारी एक फटा-पुराना ऊनी कपड़ा लपेटे सो रहा था और वह

ठीक उसकी राह में पड़ा हुआ था।

सोनावाला ने हाथ हिलाकर उपेक्षा के भाव से कहा, “ओए, रास्ते से हट जा, मुझे पानी लाने जाना है!”

बूढ़े भिखारी ने जरा सी आंखें खोलीं और अन्यमनस्क भाव से कहा, “इतनी भी क्या जल्दी है? इतनी सुबह तुम्हें पानी की क्या जरूरत है?”

सोनावाला अपना मुंह बनाते हुए बोली, “जल्दी क्यों नहीं! मेरे बाप को शराब बनाने के लिए, मेरी मां को मक्खन निकालने और खुद मुझे भी बाल धोने के लिए पानी चाहिए।”

बूढ़े भिखारी ने फिर आंखें मूंदकर कहा, “मैं उठ नहीं पा रहा हूं। अगर तुम्हें पानी लाने की जल्दी है तो मेरे शरीर के ऊपर से ही लांघ जाओ।”

सोनावाला अपना सिर ऊंचा करते हुए तपाक से बोली, “जब मैं अपने बाप की बैठक और अपनी मां के बातचीत करने की जगह में से लांघ सकती हूं, तो तुम्हें पार करके क्यों नहीं जा सकती!”

सोनावाला ने अपनी बात खत्म की और तैश में बूढ़े भिखारी के ऊपर से निकल गई।

दूसरे दिन चांदीवाला के पानी लाने की बारी आई। उसने चांदी की बाल्टी उठाई और दरवाजा खोलने पर देखा कि कोई बूढ़ा भिखारी वहां लेटा हुआ है। वह चकित होकर दो कदम पीछे हटी और चीखते हुए बोल पड़ी, “अरे, हट जा! चांदीवाला को पानी लाने जाने के लिए रास्ता दे!”

बूढ़े भिखारी ने चांदीवाला पर एक नजर डालते हुए कहा, “हे बाला, तुम्हें ऐसी क्या जल्दी है पानी लाने की?”

चांदीवाला अधीर हो उठी और तेवर चढ़ाकर बोली, “जल्दी क्यों नहीं, मेरे बाप को शराब तैयार करने, मेरी मां को मक्खन निकालने के लिए पानी चाहिए, और मुझे भी तो अपने बाल धोने हैं!”

बूढ़े भिखारी ने ऊनी कपड़े से अपने वदन को कसकर लपेटा और

आंखें मूंदकर कहा, “मैं उठने लायक नहीं हूँ, अगर तुम्हें पानी लाने की जल्दी है तो मेरे वदन को पारकर निकल जाओ।”

चांदीवाला अपना चोगा ऊंचा उठाते हुए बोली, “जब मैं अपने बाप की बैठक और अपनी मां की बातचीत करने की जगह में से लांघ सकती हूँ तो तुम्हारे वदन को पार करके क्यों आगे नहीं जा सकती !”

फिर चांदीवाला अपने कदम बढ़ाते हुए बूढ़े भिखारी के जिस्म के ऊपर से गुजरकर पानी लाने चल दी।

तीसरे दिन शंखवाला की पानी लाने की वारी आई। सुबह-सवेरे ही उसने खुशी खुशी शंख की बाल्टी उठाकर दरवाजा खोला और यह देखकर दंग रह गई कि कोई बूढ़ा और गंदा भिखारी उनके दरवाजे पर ही लेटा हुआ है। शंखवाला को बूढ़े भिखारी के प्रति बड़ी दया आई और उसे जगाने के लिहाज से उसे चौंकाए बिना ही उसने दबी सी आवाज में कहा, “बूढ़े काका ! मेहरबानी करके मुझे पानी लेने जाने के लिए रास्ता दीजिए !”

बूढ़ा भिखारी ज्यों का त्यों लेटा रहा और बिना आंखें खोले ही बोला, “मैं तुम्हारे रास्ते का रोड़ा तो नहीं हूँ, चाहो तो मेरे वदन को लांघकर चली जाओ।”

शंखवाला ने कहा, “मैंने न तो अपने बाप की बैठक और न ही अपनी मां की बातचीत करने की जगह पार की है, इसलिए मैं आपके वदन को लांघकर भी नहीं जा सकती।”

शंखवाला दबे पांव बूढ़े भिखारी के वदन के पास से ही निकल गई और गाते हुए नदी के किनारे की ओर चल पड़ी। नदीतट पर सरपतों पर हरी हरी कोंपलें निकली हुई थीं और नदी का पानी कलकल बह रहा था। शंखवाला ने अपनी पीठ से बाल्टी उतारकर जमीन पर रखी और नदी के किनारे घुटनों के बल बैठकर कुछ घूंट नदी का ठंडा जल पिया। उसके बाद उसने शंख से बाल्टी में पानी तो भर लिया लेकिन अब उसे भरी बाल्टी उठाने में किसी के सहारे की जरूरत थी। चारों ओर

सन्नाटा छाया हुआ था और किसी का साया तक भी नजर नहीं आता था। वह परेशानी में थी कि अचानक उसकी आंखों के सामने कोई साया हिला और वही बूढ़ा भिखारी उसके पास खड़ा दिखाई दिया। वह दरवाजे पर लेटा अधमरा बूढ़ा भिखारी न होकर बड़ा देदीप्यमान नजर आ रहा था। उसने शंखबाला से कहा, “बाला, बाल्टी उठाने में मैं जरा मदद करूं !”

शंखबाला खुशी से मुस्कराई और घुटनों के बल बैठ गई। उसने अपनी पीठ बाल्टी के नजदीक सटाकर उस पर लगी चमड़े की रस्सी अपने कंधों पर टांगी। बूढ़ा भिखारी कभी बाल्टी जरूरत से ज्यादा ऊंची और कभी जरूरत से नीची उठाता, मानो जानबूझकर उसे तकलीफ दे रहा हो और उधर शंखबाला बार बार उठने की कोशिश करती, लेकिन उठ न पाती। आखिरकार वह बाल्टी लेकर उठ खड़ी हुई, किंतु चमड़े की रस्सी मजबूती से न कसी होने की वजह से शंख की बाल्टी पीठ से गिरकर पत्थर से जा टकराई। बाल्टी तो टुकड़े टुकड़े हो गई और सारा पानी जमीन पर फेल गया। शंख की बाल्टी के टूट जाने और घर लौटने पर मां-बाप की फटकार के डर से शंखबाला सिसक-सिसककर रोने लगी।

उधर बूढ़ा भिखारी अधीर होने के वजाए मुस्कराते हुए बोला, “एक बाल्टी की क्या बात है ! मैं मुआवजे में पानी सहित एक नई बाल्टी दे दूंगा।”

शंखबाला कोई जवाब न दे पाई और पहले से भी ज्यादा जोर से रोने लगी। उसने मन में सोचा कि इतने गरीब हो, मुआवजे में क्या दे सकोगे ! यह मामूली बाल्टी थोड़े ही है। यह तो शंख के टुकड़ों से बनी है और पैसे से कहीं नहीं मिलेगी।

लेकिन शंखबाला क्या जानती थी कि बूढ़ा भिखारी बहुत चतुर है। उसने शंख के एक एक टुकड़े को जमा करके उन्हें एक दूसरे से जोड़कर शंखबाला से कहा, “हे बाला, तुम जरा देख लो, बाल्टी बिलकुल ठीक हालत में तो है न ?”

भिखारी की बात पर युवती को एकदम विश्वास नहीं हुआ, उसने



मन ही मन कहा, “मैं भी आसानी से धोखा खाने वाली नहीं हूँ।” यह साफ है कि बाल्टी तो टुकड़े टुकड़े हो चुकी थी, लेकिन फिर भी उसने उस पर एक नजर डाली। वाह, क्या गजब की बात है, शंख की बाल्टी बिलकुल

अच्छी हालत में है और वह साफ पानी से भरी वहां ज्यों की त्यों पड़ी हुई है। शंखवाला खुशी से फूली न समाई। उसने सोचा कि बूढ़ा भिखारी कोई मामूली आदमी नहीं है, जरूर कोई देवता होगा। उसने बूढ़े भिखारी को धन्यवाद देते हुए कहा, “आप बड़े नेक हैं, आपने मुझे मुसीबत से बचा लिया है। क्या मैं आपकी कुछ मदद कर सकती हूं?”

बूढ़े भिखारी ने कहा, “आज रात काटने के लिए मेरे पास कोई जगह नहीं है। तुम्हारे रसोईघर में एक रात बिताना चाहता हूं।”

यह सुनकर शंखवाला जरा हिचकिचाई और बोली, “शायद मेरी मां राजी न हों, उन्हें भिखारियों से बेहद नफरत है। लेकिन कोई बात नहीं, मैं जाकर उनसे अनुरोध करूंगी।”

बूढ़े भिखारी ने कहा, “शंखवाला, अनुरोध करने की कोई जरूरत नहीं। अगर तुम्हारी मां राजी न हो, तो तुम बाल्टी में रखी हुई चीज उसे दे देना।”

शंखवाला को कुछ मालूम नहीं था कि बाल्टी में है क्या चीज। लेकिन उसे पूरी तरह विश्वास हो गया था कि बूढ़ा भिखारी कोई ऐरा-गैरा नहीं है। उसने गहराई से और कुछ नहीं पूछा और बाल्टी उठाकर अपने घर की ओर चली गई।

शंखवाला ने पानी कांसे के बर्तन में डालते हुए बूढ़े भिखारी के रसोई में एक रात काटने की बात अपनी मां को बताई। यह बात सुनकर मां की भौंहें एकदम सिकुड़ गईं और वह इस विचार में डूब गई कि यह कैसे हो सकता है कि कोई बूढ़ा और गंदा भिखारी मेरे रसोईघर में रात काटे।

उसी समय अचानक खटाक की आवाज सुनाई दी और बाल्टी से कोई सुनहरी चीज गिर पड़ी। युवती को झट भिखारी की बात याद आई और फौरन मां से बोली, “उसने यह भी कहा कि बाल्टी में रखी हुई चीज आपके लिए है।”

मां ने उसे उठाकर देखा तो उसकी बाछें खिल गईं। यह कोई दूसरी चीज न होकर सोने की अंगूठी थी। वह फौरन बोली, “अच्छी बात है,

उसे रसोईघर ही में रात बिताने दो !”

शाम को खाना खाने के बाद घर के सब लोग एक साथ बैठकर गपशप करने लगे। युवतियों का बाप दूध वाली चाय पी रहा था और मां ऊनी धागा कात रही थी। बातों ही बातों में तीनों युवतियों की शादी के बारे में भी बात छिड़ गई।

सोनाबाला बोली, “मेरी शादी तो एक भारतीय राजकुमार के साथ होगी।”

चांदीबाला ने कहा, “मेरा विवाह भीतरी प्रदेश के किसी राजकुमार के साथ होगा।”

बाप ने शंखबाला से इसके बारे में पूछा, तो वह एकाएक कोई सही जवाब न दे सकी। उसी मौके पर बूढ़ा भिखारी अंदर घुस आया और उसके मां-बाप से बोला, “मैं शंखबाला के लिए बरेखिए का काम करना चाहता हूं। ऐसी नेक और खूबसूरत युवती की शादी तो कुडचेला के साथ ही होनी चाहिए।”

कुडचेला कौन था? वह कहां रहता था? उसका कोई अता-पता भी नहीं था और उसके बारे में कभी कोई जिक्र भी नहीं सुना था। मां और बाप ने मन में सोचा कि यह बूढ़ा भिखारी तो बावला ठहरा, इसका किसी इज्जतदार और ओहदेदार सज्जन से कोई सरोकार कैसे हो सकता है! भिखारी बरेखिया जरूर किसी भिखारी की ही बात चलाएगा। यही सोचकर मां-बाप ने असहमति में सिर हिलाया। सोनाबाला और चांदीबाला ने एक दूसरी से कानाफूसी की और ठंडी हंसी हंसते हुए शंखबाला की ओर देखा।

बूढ़े भिखारी ने घूमकर शंखबाला से कहा, “कुडचेला नेक आदमी है। क्या तुम उससे शादी करना चाहती हो?”

युवती ने जवाब में कहा, “मैं नहीं जानती कि वह कौन है।”

बूढ़े भिखारी ने कहा, “तुम मुझ पर भरोसा रखो, मैं तुम्हें धोखा नहीं दूंगा। कुडचेला जरूर तुम्हें पूरा सुख देगा।”

शंखवाला को फौरन सुबह की बात याद आई। उसे बूढ़े भिखारी पर पूरा विश्वास हो गया कि वह उसे धोखा नहीं देगा। उसने हां में सिर हिलाते हुए कहा, “मुझे आपके ऊपर पूरा भरोसा है और मैं कुड़चेला के साथ शादी करना चाहती हूँ, लेकिन वह रहता कहां है? और आखिर है कौन?”

बूढ़ा भिखारी बोला, “तुम वाकई समझदार हो। अगर तुम कुड़चेला से मिलना चाहती हो, तो मेरे साथ चलो। मेरी छड़ी के निशानों पर चलती हुई उसके घर तक पहुंच जाओगी।”

अपनी बात खत्म करके बूढ़ा भिखारी दरवाजे से बाहर निकला और उसके पीछे पीछे शंखवाला भी चलने लगी। मां-बाप ने रोकने की कोशिश की, मगर वे सफल न हुए तो नाराजगी से बोले, “तुम अच्छी तरह कान खोलकर सुन लो, जाकर पछताना मत, फिर इस घर में कभी पांव रखने की इजाजत नहीं मिलेगी।”

सोनावाला और चांदीवाला वहां खड़ी खड़ी ताने मारती रहीं।

शंखवाला दरवाजे के बाहर पहुंची तो बूढ़े भिखारी का साया तक दिखाई न दिया। उधर आकाश में जगमगाता चांद लटका हुआ था और धरती पर चांदनी बिखरी हुई थी। वह बूढ़े भिखारी की छड़ी के निशानों के पीछे पीछे चली जा रही थी। चांद पश्चिमी अंचल में छिपने जा रहा था और पूरव में सूरज उगने लगा था। शंखवाला न जाने कितना फासला तय करके एक घाटी में पहुंच गई। घाटी में कोई हजार भेड़ें फूल के गुच्छों की तरह इकट्ठा थीं।

उसने गड़ेरिए से पूछा, “क्या तुमने किसी बूढ़े भिखारी को इधर से जाते हुए देखा है?”

“नहीं, मैंने तो सिर्फ कुड़चेला को देखा है, जो अभी इधर से गुजरे हैं और ये सभी भेड़ें उनकी ही हैं।”

शंखवाला गड़ेरिए को धन्यवाद देकर आगे चल पड़ी और कुछ देर में उसे एक गाय-वैलों को चराने वाला मिला। उसने उससे पूछा, “क्या

तुमने किसी बूढ़े भिखारी को यहां से गुजरते देखा है ?”

गाय-बैलों को चराने वाला बोला, “नहीं, मैंने केवल कुड-चेला को यहां से जाते हुए देखा है और ये तमाम गाय-बैल उनके ही हैं।”

शंखवाला उससे विदा लेकर आगे बढ़ी और काफी देर चलने के बाद उसकी मुलाकात एक घोड़े चराने वाले से हुई। युवती ने उससे पूछा, “तुमने किसी बूढ़े भिखारी को यहां से जाते हुए देखा है ?”

घोड़े चराने वाले ने कहा, “मैंने अभी सिर्फ कुड-चेला को ही इधर से जाते हुए देखा है। मेरे सारे घोड़े उन्हीं के हैं। उनसे मिलना हो तो आगे चली जाओ !”

तीनों चरवाहों का एक जैसा जवाब सुनकर शंखवाला उधेड़बुन में पड़ गई। चलते चलते उसके दिमाग में कई सवाल उठ रहे थे — कुड-चेला आखिर कैसा आदमी है, उसके पास इतने मवेशी कहां से आए ? क्या वह बूढ़ा भिखारी ही तो कुड-चेला नहीं है ? क्या मेरी शादी उसी बूढ़े भिखारी के साथ होगी ? वह यही सोच-विचार कर रही थी कि अचानक उसे घास के मैदान के आखिरी सिरे पर एक जगमगाता हुआ सा महल झीना झीना दिखाई दिया।

फिर रास्ते में उसे एक सफेद बालों वाला बूढ़ा मिला। उसने उससे पूछा, “वावा जी, क्या आपने किसी बूढ़े भिखारी को यहां से जाते हुए देखा है ?” बूढ़े ने मुस्कराते हुए जवाब दिया, “नहीं तो, केवल कुड-चेला ही इधर से गुजरा है, कोई बूढ़ा भिखारी नहीं।”

फिर उसने दूर दीखते महल की ओर इशारा करते हुए पूछा, “मेहरबानी करके यह बताइए कि वह मंदिर किस पूज्य देवता का है ?”

बूढ़े के चेहरे पर और ज्यादा खुशी की लहर दौड़ गई और उसने कहा, “सुंदरी, वह तो कुड-चेला का महल है, कोई मंदिर नहीं। तुम इसी रास्ते से चली जाओ, वह वहीं तुम्हारा इंतजार कर रहा है।”

शंखवाला ने सफेद बालों वाले बूढ़े को धन्यवाद दिया और महल की ओर आगे बढ़ी। फिर जहां जहां उसके पांव पड़े, वहीं जमीन के नीचे



से फूलों के गुच्छे उभरते गए, बिल्कुल जादुई ढंग से। इन रंगबिरंगे फूलों की महक हवा के साथ ऐसे वह रही थी जैसे किसी माननीय मेहमान का स्वागत कर रही हो। ये खूबसूरत फूल युवती के पांव रखने के साथ साथ खिलते जा रहे थे और इस तरह फूलों का एक रंगबिरंगा रास्ता बन गया। आखिर शंखवाला फूलों से सजे इस मार्ग पर महल के पास पहुंच ही गई। शंखवाला के महल की सीढ़ियों पर कदम रखते ही महल का बड़ा दरवाजा खुला और कुड़चेला दोनों हाथों में खूबसूरत पोशाकें और मोती, मूंगे व अन्य हीरे जड़े आभूषण थामे खड़े अपने दरबारियों को साथ लिए शंखवाला

का स्वागत और उससे शादी का अनुरोध करने पहुंच गया। शंखवाला ने देखा कि कुडचेला एक खूबसूरत नौजवान राजकुमार है तो उसकी खुशी का ठिकाना न रहा और उसने फौरन ही उसकी शादी की मांग स्वीकार कर ली। तभी उसे मालूम हुआ कि कुडचेला ने ही बूढ़े भिखारी का भेष धारण किया था।

महल के अंदर कुडचेला सोने की चारपाई पर बैठा और खूबसूरत लिबास पहने तथा हीरे-जवाहरात जड़े आभूषणों से सजी शंखवाला चांदी की चारपाई पर बैठी थी। उन दोनों ने एक शुभ मुहूर्त तय करके उसी महल में शादी कर ली।

SKV

चुकूइनेफाइ और खाडमेइ चुमडची

(नाशी जाति की लोककथा)

वर्फीले पर्वतों से घिरे हरी घास और रंगविरंगे महकते फूलों वाले एक चरागाह में नब्बे तगड़े युवक और सत्तर कुशल युवतियां रहती थीं। वे भालू जैसे बड़े सूअर पालते और अनगिनत भेड़-बकरियां और हाथी के वरावर सुरागाय और पहाड़ी बैल चराते थे। लेकिन ये सब मवेशी उनके मालिक तुङ्पेन चूकाओ और मालकिन तुङ्पेन आन्यू की ही जायदाद थे और सभी युवक और युवतियां उन दोनों के गुलाम थे। वे गुलाम सालभर रात-दिन खुले आकाश में खा-पीकर गुजारा करते थे। फिर भी उन्हें एक भी भेड़-बकरी या तंबू तक भी नसीब न होता था। उनके पास भूख, ठिठुरन, आंसू और गहरी दोस्ती व प्यार के अलावा और कुछ भी नहीं था।

नब्बे दासों में चुकूइनेफाइ सबसे कुशल था। वह ऊनी ओढ़नी बुनने में सक्षम था, खेतीवाड़ी और तीर-कमान से शिकार कर सकता था। जंगली जीव उसे देखकर नौ-दो ग्यारह हो जाते थे। सत्तर दासियों में सबसे सुंदर खाडमेइ चुमडची मानी जाती थी। वह ऊन कातने और दूध दोहने में अत्यंत कुशल थी, बुनाई कर सकती थी और सिलाई व कसीदाकारी में इतनी माहिर थी कि कुशल से कुशल कारीगर भी उसके सामने सिर

झुकाते थे ।

चुकू और खाडमेइ एक दूसरे को प्यार करते थे । वे एक दूसरे की मदद करते, साथ साथ गाते व नाचते और साथ ही साथ वांसुरी व वीणा बजाते थे । इस तरह वे प्रेम के शहद से अपने दुख धो लेते थे । उनके साथी और सहेलियां उनकी प्रशंसा में उन्हें चरागाह के पीछे खड़ी दो बर्फीली चोटियों या चरागाह के आकाश में उड़ने वाले सफेद सारसों के एक जोड़े की उपमा देते थे ।

पशुमालिक तुडपेन चूकाओ और मालकिन तुडपेन आन्यू अपनी चरागाही जिंदगी से ऊबकर पर्वत की तलहटी में एक अच्छी जगह बसने चले गए । उनके गुलाम राहत की सांस लेने लगे और उन्हें ऐसा महसूस हुआ जैसे उनकी पीठ से एक भारी पहाड़ हट गया हो । चालाक पशुमालिक-मालकिन को यह डर था कि कहीं गुलाम भाग न जाएं । इसलिए उन्होंने उन गुलामों को भी पहाड़ की तलहटी में आकर बसने का हुक्म दिया । भला, क्या कोई आजाद पंछी फिर खुद ही पिंजरे में लौट आना चाहेगा ? इन गुलामों ने पशुमालिक का हुक्म अनसुना कर दिया और उनमें से कोई भी वहां जाने को तैयार नहीं था ।

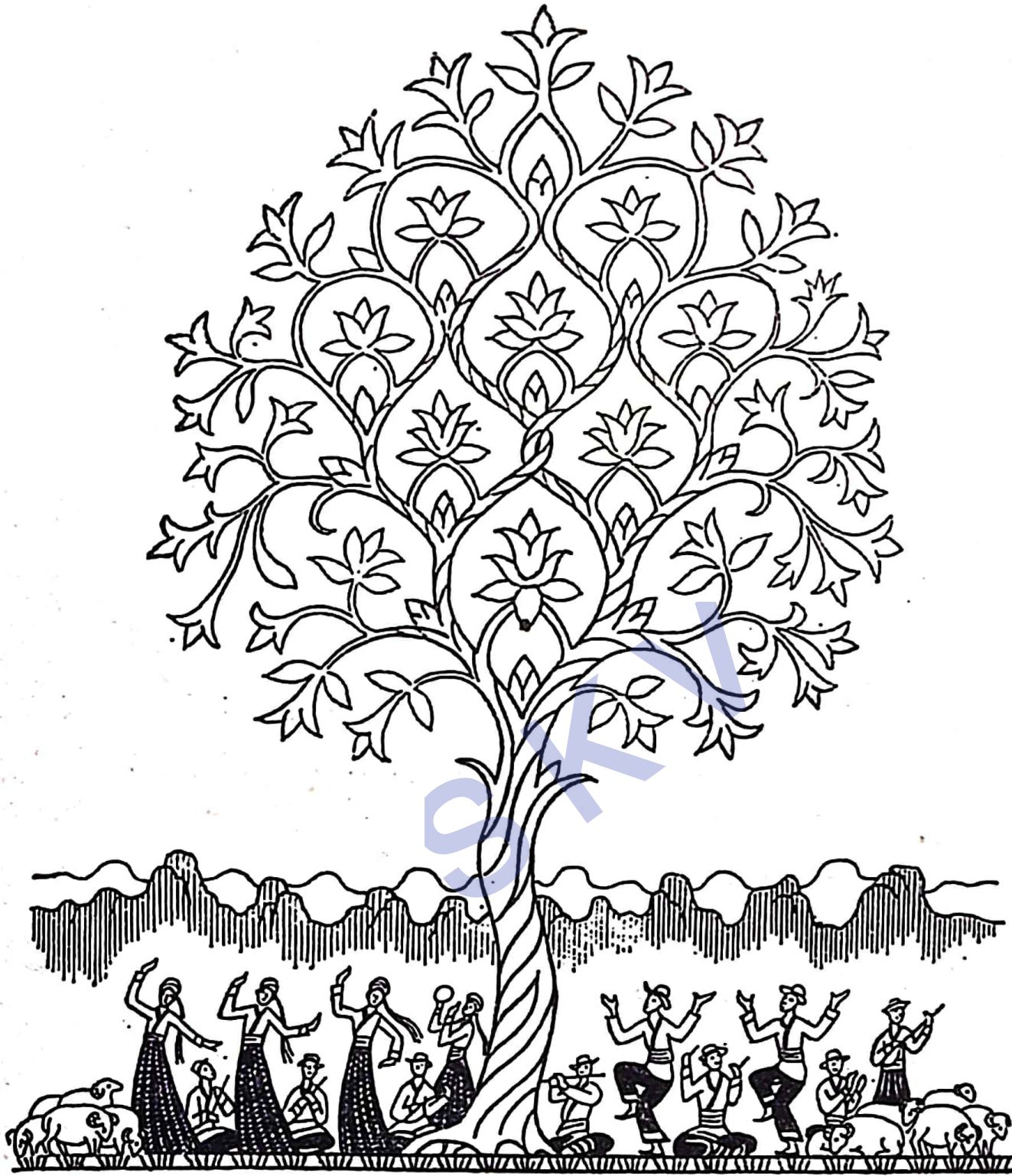
पशुमालिक ने गुलामों को लुभाने के लिए उन्हें “पत्ते की उम्र के बदले पुराने पेड़ की उम्र, बुलबुले की उम्र के बदले निर्मल जल की उम्र और गुलामों की उम्र के बदले पशुमालिकों की उम्र देने” जैसी कई चिकनी-चुपड़ी बातें कहीं । उन्होंने उनकी अगवानी करने के लिए नौ बार श्वेत सारस, कोयल, पनकौवे, लीरेबर्ड, भूरी खंजन, अबाबील, मृग, जंगली भेड़ और सुनहरी मछली को भेजा था । इसके बावजूद गुलामों ने उनकी एक न सुनी और लौटने से इंकार कर दिया ।

चुकू और खाडमेइ ने तो डंके की चोट पर यह कहा, “न तो पुराने पेड़ की उम्र पत्ते की उम्र का बदल हो सकती है और न ही निर्मल जल की उम्र बुलबुले की उम्र का बदल हो सकती है । हम गुलामों को सिर्फ आजादी ही चाहिए, पशुमालिकों की उम्र नहीं !” पशुमालिकों ने इस डर से कि

कहीं ये दास मवेशियों को हांककर भाग न जाएं, सफेद पत्थरों के नौ और काले पत्थरों के सात दरवाजे बनवाए, गाय-बकरियों को रोकने के लिए नौ जंगले निर्मित किए और सात बाड़ें खड़ी कीं।

उधर जब चुकू और खाडमेइ तथा उनके साथी भागने की तैयारी कर रहे थे, तो अचानक उनकी भेड़-बकरियों का एक झुंड गुम हो गया। चुकू और खाडमेइ अपने साथियों को लेकर उसे खोजने निकल पड़े। नौ पहाड़ों और सात घाटियों को पार करने के बाद उन्होंने एक अजीबोगरीब पेड़ के नीचे भेड़-बकरियों का वह झुंड खोज लिया। वह एक ऐसा पेड़ था जिसकी टहनियां मूंगे की, पत्ते जेड के, फूल सोने-चांदी के और फल हीरे-मोती के थे।

यह देखकर गुलामों की खुशी का ठिकाना न रहा और वे उस पेड़ को चारों ओर से घेरकर नाचने-गाने लगे। उनके बदन पर कोई भी आभूषण न होने की वजह से उन्हें पेड़ पर उगे हुए कीमती आभूषणों को काटकर अपने आपको सजाने की सूझी। एक युवक ने लोहे की एक सफेद कुल्हाड़ी उठाकर पेड़ पर वार किया, पेड़ का तो कुछ भी वांका न हुआ, उल्टे कुल्हाड़ी की धार एकदम कुंद हो गई। कुशल चुकू ने बैल के चमड़े से धौंकनी बनाई। चेस्टनट के पेड़ को जलाकर कोयला तैयार किया। तीन हलों के फालों से एक धारदार कुल्हाड़ी ढाल ली। इसे मजबूत बनाने के लिए श्वेत नागराज के थूक का इस्तेमाल किया और एक सींग वाले जीव के मजबूत सींग से कुल्हाड़ी का हत्था बनाया और इसके बाद उसे नदी किनारे ले जाकर धार तेज की। फिर पहली बार पेड़ पर खूब कड़ा वार किया। उसमें लकड़ी का एक सफेद टुकड़ा उड़ आया और वह चांदी बन गया। इससे युवकों के लिए कड़े और युवतियों के लिए कर्णफूल तैयार किए गए। फिर उसने दूसरा वार किया और उसमें लकड़ी का एक हरा टुकड़ा टूटा और पानी में गिरकर हरा जेड बन गया। इससे युवतियों के लिए चूड़ियां बनाई गईं। फिर तीसरा वार किया गया और उसमें लकड़ी का एक पीला टुकड़ा निकल आया और वह चमचमाता सोना बन गया। इससे युवतियों



के लिए एक खास किस्म के जातीय आभूषण बनाए गए। पेड़ पर चौथा वार किया गया तो उससे लकड़ी का एक काला टुकड़ा निकला और वह चमकदार मोतियों के रूप में बदल गया और इन मोतियों की मालाएं युवकों के गलों में लटकाई गईं या युवतियों की चोटियों पर सजाई गईं। पांचवां वार किया गया तो उससे लकड़ी का एक सफेद टुकड़ा निकला और वह सीप का खोल बन गया। उसे खूबसूरती से तराशकर सजावट

के लिए युवकों के कमरबंदों में लगाया गया, युवतियों के सिरों पर सजाया गया। छठे वार से लकड़ी का लाल टुकड़ा निकला और वह लाल बेंत बन गया। उससे फूल बनाकर युवकों की तलवारों के मूठों पर जड़े गए। सातवें वार से फिर लकड़ी का एक धारीदार टुकड़ा गिरा लेकिन इस वार वह वाघ बन गया। उसके चमड़े से तरकश, आसन, म्यान और कमरबंद तैयार किए गए तथा आखिरी वार से पीला टुकड़ा निकला और वह पीले बांसों का जंगल बन गया। बांस के टुकड़ों से बांसुरियां और अन्य बाजे बनाए गए। सभी को इन आभूषणों से सजाया गया तो युवक अधिकाधिक आकर्षक नजर आए और युवतियां और भी ज्यादा खूबसूरत दिखाई दीं। चुकू ने खाड्मेइ को आभूषणों से सजाया और वह अधिक रमणीय लगी। उसी तरह खाड्मेइ ने चुकू को आभूषणों से सजाया, तो वह पहले से ज्यादा लुभावना लगने लगा। चुकू ने ऐसे बांसुरी बजाई कि खाड्मेइ झूम उठी और खाड्मेइ ने ऐसे एकतारा बजाया कि चुकू की बांहें उछलने लगीं।

भेड़-वकरियों का झुंड मिल गया और तमाम आभूषण ठीक तरह से सजाए गए, तो गुलाम भागने की कोशिश करने लगे। चुकू ने सबसे पहले अपने साथियों को भागने का मौका देने के लिए सफेद पत्थरों के नौ और काले पत्थरों के सात दरवाजों को खोल दिया। उधर खाड्मेइ ने भी भेड़-वकरियों को भागने देने के लिए नौ जंगलों और सात बाड़ों को गिरा दिया। बड़ी वहन केचन भाग निकली, बड़ा भाई चिनना चला गया, छोटी वहन लून्वान चली गई और छोटा भाई चीयू चल पड़ा। खाड्मेइ घोड़े पर सवार होकर भागने लगी, लेकिन वह मुड़-मुड़कर पीछे आ रहे चुकू को भी देख लेती थी। उधर चुकू भी सफेद घोड़े पर सवार होकर आगे जा रही खाड्मेइ का ख्याल रखते हुए जल्दी जल्दी उसके पीछे घोड़ा दौड़ाता रहा। ये तमाम गड़ेरिए चलते रहे, चलते रहे। शरद की बारिश भी झरझर वरसती रही, पलक मारते ही पूरी पहाड़ी घाटी में बाढ़ आ गई। खाड्मेइ और उसकी सहेलियों ने अभी पुल पार किया ही था कि

नदी की लहरों ने पुल को तोड़ डाला और चुकू तथा उसके साथी नदी के दूसरे किनारे पर रह गए। युवकों ने मिलकर नदी के ऊपरी भाग पर पत्थरों का एक पुल बना दिया, लेकिन पांव रखते ही वह ढह गया। युवतियों ने भी नदी के निचले भाग में पेड़ों के तनों से एक पुल बनाया लेकिन वह भी टूट गया। चुकू ने चीड़ की लकड़ियां काटकर किशती बनाई तो उन्हें नदी पार करने का साधन मिल गया। फिर उसने सफेद पैरों वाले वकरो के चमड़े की किशती बनाई तो नदी पार करने का दूसरा साधन भी बन गया। चुकू ने सबसे पहले अपने साथियों को नदी पार करने दी और वे युवतियों से जा मिले और सब खुशी से घूमने लगे। चुकू नदी पार करने ही वाला था कि निर्दयी मां-बाप ने उसे बुला लिया। खाड्मेइ नदी के दूसरे किनारे बहुत देर तक चुकू का इंतजार करती रही। फिर भी उसे अपने प्रेमी का साया तक दिखाई न दिया। वह अकेली ही दुख में नदीतट पर चक्कर काटती रही।

साथी तो दूर चले ही गए और प्रेमी भी न आया, तो खाड्मेइ के पास खाने के लिए कुछ न रहा। इसलिए उसे किसी दूसरे के घर में कताई-बुनाई का काम करना पड़ा। काम करते हुए खाड्मेइ को जब-तब चुकू की याद आ जाती और उसकी आंखों से आंसू टपकने लगते। स्वच्छ आंसुओं से सन का काला कपड़ा सफेद और खून के आंसुओं से सफेद कपड़ा लाल हो जाता। एक नेकदिल तोते ने खाड्मेइ की यह हालत देखी तो वह करघे के पास उड़कर आया और उसने उससे अपने दिल की बात बताने के लिए कहा। खाड्मेइ ने तोते को बताया, “तुम जाकर चुकू को कहो कि आकाश में तीन ऐसे तारे हैं, जो अपने कक्ष में नहीं लौटे हैं और मैं उन्हीं में से एक हूं। पृथ्वी पर तीन ऐसी हरी दूबें हैं, जिन्हें भेड़-बकरियों ने कभी नहीं छुआ है और मैं उनमें से ही एक हूं। गांव में तीन ऐसी युवतियां हैं, जिनके साथ किसी पुरुष का संपर्क नहीं हुआ है और मैं उनमें से ही एक हूं। मुझे ले जाने के लिए उसे सरपट दौड़ने वाले घोड़े पर सुनहरी काठी लगाकर जल्दी आना चाहिए।”

तोता चुकू के घर गया, लेकिन चुकू उसे नहीं मिला तो उसने खाड्मेइ की बात उसके मां-बाप को बताई। चुकू के मां-बाप ने बड़ी रुखाई से कहा, “आकाश में तारे काले बादलों की वजह से नहीं चमकते। वह नक्षत्र-कक्ष में बैठने वाला प्रकाशवान तारा नहीं, बल्कि एक प्रकाशहीन काला तारा है। हरी दूब जाड़े में सूख जाती है और वह हरी दूब न होकर महज सूखी घास है। वह कोई अच्छे चरित्र वाली युवती भी नहीं है। इसलिए वह इस योग्य नहीं है कि उसे सोने की काठी वाले घोड़े से लाया जाए। उसे लाने के लिए हम अपने बेटे को जाने की इजाजत हरगिज नहीं देंगे।”

तोता करघे के पास लौट आया, लेकिन उसने खाड्मेइ को चुकू के मां-बाप की कही हुई बातें गलती से उसके पूरे परिवार की ओर से कही गईं बता दीं। यह सुनकर खाड्मेइ के दिल को तो मानो काठ मार गया और उसे अत्यंत दुख हुआ। निर्दयी सास-ससुर की बात तो छोड़ो, क्या चुकू का दिल भी बदल गया है? खाड्मेइ ने एक बार फिर तोते से मदद मांगी। उसे यह संदेश ले जाने के लिए कहा, “तुम जाकर चुकू को बताओ कि बहुत पहले मैंने उसे बहुत सी बातें बताई थीं। उनमें से तीन बातें ऐसे याद रखनी चाहिए, जैसे कि भेड़ पानी पीने के लिए चश्मे को याद रखती है। वे बातें ये हैं – सोने का जोड़ चांदी ही हो सकती है, मोती का जोड़ जेड ही हो सकता है और खाड्मेइ चुमड्ची का जोड़ सिर्फ चुकूइनेफाइ ही हो सकता है। अगर ये बातें उसे याद हों तो वह जल्दी ही सरपट घोड़े पर सोने की काठी लगाकर मुझे लेने आए।”

तोता चुकू से मिला और उसे सारी बातें ज्यों की त्यों बताईं। चुकू को खाड्मेइ का गहरा प्यार याद आया और वह उसके पास जाने के लिए बेचैन हो उठा। साथ ही मुसीबत में फंसी खाड्मेइ का विचार आते ही उसके दिल में दर्द से कुछ चुभने सा लगा। उसने तोते से कहा, “कृपया तुम खाड्मेइ को बताओ कि जिस तरह स्याही साफ पानी में घुल जाती है, उसी तरह प्रेयसी की कही सभी बातें मेरे दिल में घर कर गई हैं। मैं चाहता था कि जाड़े में उसे लेने जाऊं मगर मां-बाप ने मेरे कपड़े-जूते

छिपा लिए थे। उनकी कड़ी नजर भी मुझे पर गड़ी रहती थी और मेरे भाग सकने की कोई तरकीब नहीं थी। फिर वसंत में उसे लाने का विचार था, लेकिन तब खाने-पीने की समस्या थी। मां-बाप जरा भी खाने को नहीं देना चाहते थे और उनकी चार आंखें मुझे पर एकदम लगी रहती थीं। इस तरह भागने का कोई उपाय नहीं था। गरमियों में उसे लाने की सोची थी, लेकिन मूसलाधार वर्षा के कारण जोरदार बाढ़ आ गई। मां-बाप ने बरसाती एक तरफ छिपा रखी थी और सुबह-शाम मेरे ऊपर कड़ी पाबंदियां थीं तथा भाग निकलने का कोई रास्ता नहीं था। शरद में भी उसे लाने की सोची थी, मगर बदमाश पशुमालिक ने मुझे काम पर भेज दिया और काम का कोई अंत न था। फिर वह हाथ में बांस की छड़ी लिए वहीं खड़ा रहता और आंखें फाड़-फाड़कर मुझे देखता रहता था, तुम ही बताओ कि मैं कैसे भाग निकलता! अपनी प्रेयसी का इंतजार करते करते मेरे कलेजे के टुकड़े हो जाते थे।” तोते ने एक ठंडी सांस भरी और वहां से उड़ गया।

खाडमेइ दूसरी बार संदेश भेजने के बाद सुबह से शाम तक इंतजार करती रही और उसे यह आस रही कि तोता जल्दी ही लौट आएगा और चुकू भी जल्दी ही वापस आ जाएगा। हवा की सरसर सुनाई देती तो उसे लगता कि चुकू वापस आ गया है और वह उठकर उसे लेने बाहर जाती, लेकिन हर बार निराशा ही उसके हाथ लगती। घोड़े की टापें सुनाई देतीं तो वह समझती कि चुकू उसे लेने आ गया है और वह दरवाजा खोलने के लिए उठती, तो देखती कि वह घोड़ा किसी दूसरे का होता। वह इंतजार करती रही, मगर कोई जवाब न आया और प्रेमी का साया तक भी नजर न आया। यह सोचकर कि प्रेमी का मन बदल गया है, खाडमेइ के दिल में कांटे से चुभने लगे और उसके आंसुओं की झड़ी लग गई। उसे अपने दोनों कुशल हाथ भी बेकार महसूस होने लगे, तकला उछलकर हाथ में आने के बजाए फर्श पर गिर पड़ा और अब सन का कपड़ा भी बुना नहीं जाता था।

खाडमेइ के प्रति दया की भावना से प्रेमाहुति देवी युतू आ गई और देवता चिथू शिक्वान जेड-नागराज भवन से उतर आए। उन्होंने खाडमेइ को समझाते हुए कहा, “साहसी खाडमेइ चुमडची, तुम जेड-नागराज भवन आकर सतीत्व प्राप्त कर स्थाई सुख भोगो। मानवलोक के दुखों से तो तुम बीमार हो गई और कंकाल बन गई हो। फिर भी तुम्हें न आजादी मिली और न ही सुख। हमारे परलोक में तो हरे-भरे घास के मैदान हैं, सदावहार फूल खिले हुए हैं और मीठे पानी के अनंत चश्मे हैं। हमारी सवारी के लिए चीते खड़े हैं, खेत जोतने के लिए श्वेत मृग, पौ फटते समय मुर्गों की जगह जंगली कुक्कुर खबर देते हैं और पहरेदार के रूप में जंगली मृग दरवाजे पर खड़ा रहता है। इनके अलावा कोयल संदेशवाहक का काम करती है, बुलबुल सुरीली आवाज में गीत गाती है और हमारे यहां मक्खियों और मच्छरों का नामोनिशां भी नहीं है। जल्दी चलो, तुम वहां, चलकर प्रेमातुर युवतियों को बर्फ जैसा सफेद कमखाव बुनना सिखाओ, सफेद बादलों जैसे कमरबंद काढ़ने सिखाओ और खुशबूदार मिठाइयां खाओ!”

चुकू की प्रतीक्षा करते करते खाडमेइ की आंखें एकदम धंस गईं, पुकारते पुकारते उसके होंठ सूख गए, खड़ी रहने से उसके पैर सूखकर कांटे हो गए और रोते रोते उसकी आंखों में एक भी आंसू न रहा। अपने प्रेमी के आने की कोई आशा न रह गई और अब वह पूरी तरह निराश हो गई तो उसने देवी-देवता की बात मान ली और चीनोलोक पर्वत पर खड़े एक पेड़ के नीचे सतीत्व प्राप्त कर लिया।

चुकू की खबर लेकर तोता वापस आ गया, मगर उसे खाडमेइ की छाया तक दिखाई नहीं दी। वह उसकी खोज में इधर-उधर उड़ता रहा।

चुकू के पशुमालिक का एक बैल गुम हो गया। पशुमालिक बड़ा परेशान हो गया। मौका देखकर चुकू ने उससे कहा, “बैल की खोज करने के लिए मुझे भेजो।” पशुमालिक ने सहमति में सिर हिलाया। चुकू लंबे समय तक बंधे रहने के बाद छोटे शिकारी कुत्ते की तरह झट

निकल भागा। वह बैल खोजने के बजाए खुद अपनी प्रेयसी खाड्मेइ की खोज में चल पड़ा। उसने छयासठ पर्वत पार किए, सत्तर घाटियों को छान मारा, मगर खाड्मेइ न मिली। दुखी होकर चुकू रो पड़ा और आसमान की ओर पुकारने लगा, “खाड्मेइ, तुम कहां हो?” पुकारते चलते हुए वह चीनोलोक पर्वत पर खड़े एक पेड़ के नीचे पहुंचा और वहां उसने अपनी प्रेयसी देखी। “आह!” चुकू हक्कावक्का रह गया, उसकी खाड्मेइ पतिव्रता के तौर पर मर चुकी थी! यह देखते ही चुकू पर जैसे वज्रपात हो गया!

उसने खाड्मेइ को अपनी गोद में उठाकर रो-रोकर कहा, “मेरी प्रेयसी, मुझे आने में देर हो गई।” उसके आंसुओं से खाड्मेइ का मटियाला मुंह धुलकर साफ-सुथरा हो गया और खून के आंसुओं से खाड्मेइ के सन के कपड़े लाल हो गए। खाड्मेइ की आत्मा बोली, “ऐ, चुकूइनेफाइ, अब रोने से क्या फायदा! पहले हमारे दोनों के दिल एक दूसरे से मिले हुए थे, एक दूसरे का प्रेम प्राप्त था, धृणित नदी-जल ने ही हम दोनों प्रेमियों को अलग कर दिया था। मैंने कितने ही संदेश भेजे थे, फिर भी तुमने न तो कोई जवाब दिया और न ही तुम मुझे लेने आए, कितने बेदिल हो तुम!” चुकू ने अपनी सारी आपबीती खाड्मेइ को बताई कि वह कैसे उसके प्रति प्यार से अपने दिल को सताता रहा, उसके मां-बाप और पशुमालिक कैसे उसे आने नहीं देना चाहते थे और वह जवाब भेजने के लिए कैसे तोते का सहारा लेता रहा! उसी वक्त तोता भी उड़कर आया और उसने खाड्मेइ को बताया कि पहली बार लाया गया संदेश चुकू का नहीं बल्कि उसके मां-बाप का ही था। खाड्मेइ को सब कुछ मालूम हो गया तो उसे पशुमालिक और चुकू के मां-बाप के प्रति और भी ज्यादा नफरत हो गई। उसने एक ठंडी सांस लेते हुए कहा, “मेरे प्यारे चुकू! अब मैं तो फिर जिंदा नहीं हो सकती, तुम जल्दी ही चीड़ की टहनियों और देवदार के पत्तों से मेरा दाह-संस्कार करो और सुंदर परलोक भेज दो। मेरे सारे आभूषण नोलो



पर्वत के श्वेत-श्याम संगम-स्थल पर गाड़े हुए हैं और वे सब तुम्हारे लिए सुरक्षित हैं। मेरे प्राण, अब हमेशा के लिए अलविदा !”

चुकू दुख के सागर में इतना डूब गया कि वह अपने आपको उबार न

सका। वह शीघ्र ही नोलो पर्वत के नीचे श्वेत-श्याम संगम-स्थल पर गाड़े हुए खाड्मेइ के सारे आभूषण निकाल लाया। उसके बाद उसने खुशबूदार चीड़ और देवदार की साफ टहनियां और पत्ते लाकर एक ढेर में आग लगा दी और वह खाड्मेइ को उठाकर जोर से चिल्लाते हुए “मेरी खाड्मेइ, मैं भी तुम्हारे साथ साथ हूं।” धधकती आग में कूद पड़ा।

चुकूइनेफाइ और खाड्मेइ चुमडची अचानक बादलों के दो टुकड़े बनकर हिमपर्वत पर तेरते हुए एक दूसरे में विलीन हो गए।

SKV

हडमैइ और सुनहरा हिरन

(नाशी जाति की लोककथा)

किसी अज्ञात काल की बात है। नाशी जाति का एक गरीब दंपति घूमते-फिरते जेड झील के किनारे पहुंचा और उसने चीड़ के जंगल में लकड़ियों की एक झोपड़ी बना ली और उसी में रहना शुरू कर दिया। पति रात-दिन उजाड़ भूमि का उद्धार करता और पहाड़ पर शिकार करने जाता जबकि पत्नी रातभर कताई-बुनाई के काम में जुटी रहती। बहुत गरीब होने पर भी उनकी जिंदगी सुखमय और शांतिपूर्ण थी। केवल औलाद का अभाव उनको हमेशा सताता रहता था। बेटे की तीव्र चाह के कारण वे अक्सर खाना खाते समय मेज पर तीन कटोरे और तीन जोड़े चापस्टिक रखते थे और सन के भी तीन कपड़े सिलवाते थे... यानी हर हालत में वे तीन चीजें तैयार रखते थे।

एक घटाटोप रात को अंगीठी के पास सन के सूत्र कातते हुए पत्नी की आंख लग गई और उसने एक सपना देखा—वह किसी ऐसे कगार, जिस पर बंत की घनी लताएं फेली हुई हैं, के पास पहुंची और देखा कि चट्टान की एक गुफा से दूध जैसे जल वाली एक सरिता वह रही है। पानी के कलकल बहने की आवाज तीन तारों वाली वीणा से बजाए जाने वाले

सुरीले संगीत या गुफा में किसी के गाने की तरह थी। थोड़ी देर बाद देवदार से बनी एक किशती वहते हुए आई। उसके पिछले भाग में सोने का एक हिरन खड़ा था और अगले हिस्से में एक नौजवान गीत गाते और चप्पू चलाते हुए उसकी ओर मुस्करा रहा था। अचानक एक घड़ियाल कूदकर किशती से टकराने ही वाला था कि वह नौजवान को बचाने के लिए बांस का एक डंडा लाई। खूंखार घड़ियाल उस पर झपटा और डर के मारे वह पसीना पसीना हो गई। सपना टूटते ही उसने झोपड़ी के बाहर मूसलाधार वर्षा होने की आवाज सुनी। उसने पति को सपने की बात बताई तो पति ने कहा कि यह एक मंगलमय सपना है और उसके जरूर लड़का होगा। सचमुच आठवें मास की पंद्रह तारीख को यानी पूर्णिमा के दिन पत्नी ने एक मोटे और गोरे बच्चे को जन्म दिया। वह आकाश में लटके हुए गोलमटोल चांद की तरह लगता था। इसलिए उसका नाम हड्मेइ रखा गया।

हड्मेइ दिन-ब-दिन पलता-बढ़ता गया। उसका शरीर चीड़ के पेड़ की तरह मजबूत था, उसका चेहरा जेड झील में कमल के फूल के माफिक सुंदर और उसकी आवाज झरने की कलकल की तरह सुरीली थी। वह अपने मां-बाप का बहुत लाड़ला था। वह कुशल तीरंदाज था, एक तीर से पहाड़ी चील की गर्दन भेद सकता था। वह बहुत बहादुर भी था, कुल्हाड़ी के तीन वारों से देवदार का पूरा पेड़ गिरा सकता था। तलहटी में बसे गांव के अन्य दस गरीब बच्चे अक्सर बर्फीले पर्वत पर भेड़ें चराने आते थे और हड्मेइ अक्सर तीर-कमान उठाकर उनके साथ भेड़ियों और चीतों का शिकार किया करता था। इस तरह वह उनका जिगरी दोस्त बन गया। वे थोड़ा बहुत उपकार लेकर उसे धन्यवाद देना चाहते थे, हड्मेइ भी उनका हार्दिक स्वागत-सत्कार करता और उन्हें कस्तूरी व हिरन की खालें भेंट करता था। बेटे के कुशल तीरंदाज होने के साथ साथ नेक होने और अपनी जिंदगी के आखिरी दिनों में सहारा मिल जाने पर मां-बाप को मन ही मन बड़ी खुशी होती।

तलहटी में पेइसछुन नामक गांव में एक बड़ा जमींदार था। वह तीन सौ मू उपजाऊ जमीन पर कब्जा किए हुए था और उसके घर में लगभग तीस कारिंदे थे। वह रोज मांस, मछली, मुर्गा वगैरह बढ़िया खाने खाता, दूध और शराब पीता और रेशम, ब्रोकेड व उनके कपड़े पहनता तथा चारपाई पर बाघ का फर बिछाकर सोता था। जमींदार का उपनाम रखवा (जहरीला सांप) रखा गया था। उसके बेटे का नाम मू हू था। वह साक्षर होने पर भी अनपढ़ था और अपने बाप से ज्यादा खूंखार भी। वह घोड़े पर बाहर निकलता, तो किसानों के गेहूं के खेतों को रौंदकर चला जाता, उनके सूअरों का शिकार करता तथा खुलेआम उनकी बेटियों को उठा ले जाता और अपनी हवस मिटाता। बाप और बेटा दोनों ही गांव में और बाहर लोगों की आंखों के कांटे बन चुके थे।

एक सुबह, हड्मेइ शिकार करने निकला। उसने चीते के पदचिन्हों का पता लगाया और उनका पीछा करते हुए बहुत दूर निकल गया। जमींदार का बेटा मू हू भी दर्जन कारिंदों के साथ जंगली मुर्गी का शिकार करने आया। उसके दस बंडल तीर चलाने पर भी किसी चिड़िया तक का कुछ भी वांका न हुआ। गुस्से में वह अपने पांव पटकता रहा। फिर पहाड़ से उतरते हुए वह जेड झील के पास से गुजरा तो उसने हड्मेइ के घर में लटके लोमड़ी के फर, हिरन के सींग और एक जंगली मुर्गी देखी। वह उनकी ओर ऐसे लपका जैसे कोई भेड़िया मेमने पर झपट रहा हो और उसने तमाम चीजें छीन-छीनकर झोपड़ी खाली कर दी। हड्मेइ का बाप आगवबूला हो उठा और उसने तीर चलाकर मू हू की बाईं आंख निकाल दी। उधर हड्मेइ की मां ने तकले से मार-मारकर उसकी नाक चपटी कर दी। मू हू दर्द के मारे पागल होकर चिल्लाने लगा और उसने अपने कारिंदों को हड्मेइ की मां को मौत के घाट उतारने की आज्ञा दी। उसके बाप को लकड़ी के खंभे से बांध दिया गया और झोपड़ी को आग लगा दी गई। क्षणभर में धूआं व आग की लपटें जोरों से उठने लगीं। यह देखकर मू हू और उसके कारिंदे हंसते हंसते लौट गए।

हड्मेइ चीते का शिकार करके घर लौटा तो उसने देखा कि उनकी झोपड़ी जलकर भस्म हो चुकी थी, बाप आग में झुलसकर मर गया और कोड़ों के निशानों से भरी मां की लाश जमीन पर पड़ी हुई है। उसे ऐसा लगा मानो उस पर कोई वज्रपात हो गया हो, वह फूट-फूटकर रोने लगा। उसका क्रंदन तेज हवा की सांय सांय की ही तरह सुनाई दे रहा था और उसके आंसुओं की धारा मूसलाधार वर्षा की तरह गिर रही थी। उसने सिर उठाकर आकाश से पूछा, “कौन है मेरा दुश्मन?” मगर आकाश भी खामोश रहा। उसने फिर सिर नीचे करके झील के जल से पूछा, “कौन है मेरा शत्रु?” झील का जल भी झिलमिलाते हुए चुप्पी साधे रहा। हड्मेइ का दिल गुस्से से भड़क उठा।

हड्मेइ खानाबदोश हो गया और उसके पास तीर-कमान के सिवा कुछ भी न बचा। वह आवारों की तरह भटकने लगा। दिन में वह करुणामय गीत गाता, रात किसी गुफा में काट लेता, ठंड से बचने के लिए अलाव जलाकर अपने शरीर को ताप लेता और अक्सर रातभर जागता रहता। एक सुबह, बाघ की गुराहट की आवाज से गुफा के आसपास की घास भी कांपने लगी। हड्मेइ गुफा से बाहर निकला तो देखा कि एक सुनहरा हिरन काले बाघ से बचने के लिए भाग रहा है। हड्मेइ ने तुरंत एक तीर चलाकर बाघ को मार डाला। सुनहरे हिरन ने सिर घुमाकर हड्मेइ पर एक नजर डाली और वह उछलता-कूदता उसके पास आया। उसके प्रति आभार प्रकट करने के लिए उसके हाथ चाटने लगा। उस प्यारे हिरन के बाल सुनहरे थे और सींग लाल। हड्मेइ उसे उठाकर गुफा के अंदर ले गया। ठंड भगाने के लिए वह हिरन से सट जाता और पेट की आग बुझाने के लिए पर्वत से जंगली सब्जी चुन-चुनकर लाता। दोनों भाइयों की तरह रहने लगे। दूसरे या तीसरे चांद्रमास में पितर-श्राद्धपर्व था। हड्मेइ सुनहरे हिरन को अपने मां-बाप की पूजा करने के लिए ले गया। अपने मां-बाप की हत्या की याद आते ही वह अत्यंत दुखी हो गया और अपनी व्यथा हिरन को सुनाने लगा, “हिरन, क्या मेरी बात तेरी समझ



में आती है ? तुम्हें मालूम है कि मेरी व्यथा क्या है ? और मुझे इस व्यथा से निकालने की क्या कोई तरकीब है ?” हिरन ने हां में अपना सिर हिलाया और बोला, “तुम जो खाना या पहनना चाहते हो, मुझे बताओ।” हड्मेइ को यह सुनकर ताज्जुव के साथ साथ खुशी भी हुई। उसने विनम्र होकर कहा, “मुझे खाने के लिए न तो बढ़िया चीजें चाहिए और न ही पहनने के लिए रेशम और ब्रोकेड। मुझे तो बदला लेने के लिए एक तलवार, उजाड़ भूमि का उद्धार करने के लिए एक कुदाल, खेत जोतने के लिए एक बैल, अनाज पैदा करने के लिए एक बंडल बीज और फसल काटने के लिए एक हंसिया चाहिए।” हिरन ने गुफा के द्वार पर जाकर तीन बार अपना सिर हिलाया और श्वेतमेघ को बुलाया। फिर उसने तीन बार आवाज दी। उसकी सुरीली आवाज से श्वेतमेघ में अचानक एक दरार

पड़ गई और हड्मेइ की जरूरत की चीजें एक के बाद एक जमीन पर गिरने लगीं। हड्मेइ बैल हांकते हुए कृषि के औजार लेकर झीलतट पर लौटा। वहां उसने पेड़ काटकर मकान बनाया और खेतीवारी शुरू कर दी। बाद में उसने पहाड़ी तलहटी के गांव में वसे दस छोकरे-छोकरियों को भी एक साथ रहने का निमंत्रण दिया। इस तरह उनकी जिंदगी अधिकाधिक सुखमय हो गई।

जमींदार रखवा ने झीलतट पर रहने वाले गरीबों के खूब मजे से जीने की बात सुनी, तो उसने गुस्से में पूछताछ के लिए अपने बेटे को बुलाया। मू हू ने ठंडी हंसी हंसते हुए कहा, “झीलतट के गरीबजादे तो कब के यमराज के पास भेजे जा चुके हैं।” रखवा ने फिर प्रधान कारिंदे छाड़ पा को झीलतट पर हीरे-मोती हैं या नहीं, इसकी खबर लेकर जल्दी लौटने के लिए कहा। छाड़ पा फूस के जूते और फर का कोट पहने एक भिखारी के भेष में हड्मेइ के घर घुस गया। वहां वह खूब रोया-धोया और चिकनी-चुपड़ी बातें बना-बनाकर धोखा देने की कोशिश की। ईमानदार हड्मेइ ने छाड़ पा के साथ भाईचारे का बर्ताव किया और उसके साथियों ने सुनहरे हिरन की ओर इशारा करते हुए उसे बताया कि यदि वह तीन बार आवाज दे तो समूची भूमि सोने-चांदी से भर जाएगी तथा फिर तुम्हें कोई चिंता न होगी। छाड़ पा इसका राज जान गया और उसने एक तरफ खुश होने का ढोंग किया और दूसरी ओर कुकर्म करने का इरादा किया। आधी रात होने पर वह दबे पांव सुनहरे हिरन को चुराकर पर्वत के नीचे भाग निकला।

जमींदार बाप-बेटे ने दुर्लभ हिरन को चुरा लेने की खबर सुनी तो वे खुशी से फूले न समाए और धूप-वत्ती जलाकर आकाश को तीन बार प्रणाम किया। रातों रात उन्होंने जेड की खिड़कियों, कांसे के जंगलों और चांदी के फर्श वाला एक मंदिर देवहिरन के लिए बनाया। फिर सुनहरे हिरन को सोने की माला पहनाई, हीरे-जवाहरात लटकाए और उसे पौष्टिक जड़ी-बूटियों के साथ पकाई गई मुर्गी खिलाई।

रख्वा ने शानदार लिबास पहनकर देवहिरन के सामने घुटने टेककर यह प्रार्थना की, “मेरा दिल तो करुणा देवी जैसा है, मुझे सिर्फ सोने का पहाड़, चांदी का समुद्र और जेड-मोतियों की नदी चाहिए। इनके अलावा एक हजार दास और एक हजार मू उपजाऊ खेत चाहिए।” सुनहरे हिरन ने एक चौकड़ी भरी और सोने के फूल व तमाम जेड-मोतियों के टुकड़े-टुकड़े कर दिए। फिर उसने एक और छलांग लगाई और रख्वा के तीन दांत गिरा दिए। उसने दर्द के मारे दोनों हाथों से अपना मुंह थाम लिया और उसकी आंखों से आंसू छलछलाने लगे। कारिंदे जमींदार को सहारा देकर उठा ले गए और फिर मू हू आकर विनती करने लगा, “मेरा बाप कायदे-कानून नहीं जानता है, माफ कीजिएगा देवहिरन, नाराज न हों। मुझे केवल दस हजार टोकरी चावल और दस हजार किलो आटा चाहिए। इनके अलावा दस हजार घोड़े, दस हजार भेड़-बकरियां, दस हजार मुर्गे-मुर्गियां और दस खूबसूरत युवतियां चाहिए। आप तीन बार आवाज दे दीजिए। मैं फौरन आपको हिरन दादा पुकारता हूं।” सुनहरे हिरन ने फिर एक चौकड़ी भरी और पूरे भवन की जमीन पर मल-मूत्र फेला दिया। एक और छलांग लगाई तो मू हू की चपटी नाक भी टूट गई। दर्द के कारण मू हू अपने मां-बाप को याद करके चिल्लाने लगा। उसने कारिंदे को सुनहरे हिरन को कैदखाने में बंद करने और एक जहरीली घास खिलाने के लिए कहा।

इधर हड्मेइ सुनहरे हिरन को न पाकर अत्यंत बेचैन हो उठा। वाद में उसने देखा कि छाड़ पा निकल भागा है, तो उसे समझने में देर न लगी कि वही सुनहरे हिरन को चुरा ले गया है। वह अपने गुस्से की आग दबाकर झट उसका पीछा करने लगा। उसने देखा कि पगडंडी से बड़े रास्ते तक हिरन के पदचिन्ह नजर आ रहे हैं और ये चिन्ह सीधे जमींदार के घर तक चले गए हैं। हड्मेइ ने दरवाजे के पास खड़े पत्थर के शेर को उठाकर दरवाजा तोड़ डाला। उधर छाड़ पा देखने के लिए आया तो हड्मेइ ने लपककर उसे पकड़ लिया। वह घबराकर जोर जोर से चिल्लाया

तो उसकी आवाज सुनकर कई कारिंदे निकल आए। हड्मेइ जल्दी में हथियार साथ लाना भूल गया होने की वजह से बंदी बना लिया गया। मू हू ने हड्मेइ की ओर घूरते हुए छाड़ पा से कहा, “मालूम नहीं कि इन दो गरीबजादों की कोई औलाद बची है या नहीं! इसे हिरन के साथ कैदखाने में बंद करो और जल्दी यमलोक में भेजो।”

कैदखाने में हिरन की नाजुक हालत देखकर हड्मेइ को बड़ा दुख हुआ और जमींदार के प्रति उसकी घृणा और ज्यादा तीव्र हुई। तभी दो पहरेदारों की बातचीत से पता चला कि जेड झील के किनारे लूटपाट और आगजनी में मू हू की नाक कैसे चपटी हुई और उसे काना बनाया गया। यह जानकारी मिलने पर तो जैसे हड्मेइ के घाव पर नमक छिड़का गया और उसके दिल में बदले की आग धधकने लगी। उसने सोचा कि बदला लेने और हिरन को बचाने के लिए उसे वहां से भाग जाना चाहिए। आधी रात को उसने अपने नाखूनों से कैदखाने की दीवार में एक छेद बनाया और सुनहरे हिरन को गोद में उठाकर जेड झील पर पहुंच गया।

हड्मेइ ने बदला लेने के लिए अपने साथियों से सलाह-मशविरा किया और हिरन से दस तलवारें दिलवाने का अनुरोध किया। लेकिन हिरन की हालत इतनी पतली थी कि वह एकदम निश्क्रिय लेटा हुआ था। किसी भी समय उसकी सांस जवाब दे सकती थी। क्या किया जाए? सब लोग जलते तवे पर रेंगती हुई चींटी की तरह बेचैन थे। अचानक हिरन ने आंख खोली और उसकी पुतली में से एक लघुमानव निकलकर बोला, “जमींदार ने नन्हे हिरन को जहरीली घास खिलाई है, पूरे सात सप्ताह बाद वह मर जाएगा। लेकिन चीनोलोक पर्वत पर एक भीमकाय पेड़ खड़ा है और उस पर संजीवनी घास उगी हुई है। उससे हिरन को जिंदा रखा जा सकता है। पर्वत की तलहटी में स्थित श्वेत-जेड गुफा में एक चमत्कारिक चाकू है और उससे संजीवनी घास काटी जा सकती है। लेकिन उसकी हिफाजत के लिए सुनहरे बालों वाला एक शेर खड़ा है।” यह बात खत्म करके लघुमानव फिर उछलकर पुतली में गायब हो गया और सुनहरे हिरन

की आंख फिर बंद हो गई। लघुमानव की बात सुनकर हड्मेइ खुशी से मुस्कराने लगा। उसने फसलों की अच्छी तरह देखभाल करने के लिए अपने साथियों को ताकीद की, सुनहरे हिरन का समुचित बंदोबस्त किया और वह खुद तीर-कमान उठाकर संजीवनी घास की खोज करने के लिए निकल पड़ा।

उसने रास्ते में अनेक ऊंचे कगारों और कंटीले झाड़-झंखाड़ों को पार किया और तीन दिन तीन रात चलने के बाद वह एक बड़ी नदी के तट पर पहुंचा। नदीपाट इतना चौड़ा था कि उसका दूसरा तट दिखाई नहीं दे रहा था और नदी पार करने के लिए कोई नाव भी नहीं थी। इससे उसे बड़ी परेशानी हुई। नदी के ऊपरी भाग से एक बड़ा काला अजगर, जिसकी दोनों आंखें दो दियों की तरह चिलचिला रही थीं और जिसका भयानक मुंह खुला हुआ था, तेजी से तैरते हुए निचले भाग की ओर आ रहा था और उधर नदी के निचले भाग में चमकीले सुनहरे शल्कों वाली एक बड़ी मछली तैर रही थी। वह मछली अजगर का शिकार बनने ही वाली थी कि हड्मेइ ने एक तीर से काले अजगर को मार डाला। सुनहरी मछली ने हड्मेइ के सामने आकर उसे धन्यवाद दिया और उसे नदी पार करने में मदद करने की इच्छा व्यक्त की। हड्मेइ सुनहरी मछली की पीठ पर सवार होकर तीन दिन तीन रात के बाद नदी के दूसरे किनारे पहुंच गया। मछली ने उसे एक सुनहरा शल्क भेंट किया और उसे विदा करते हुए कहा, “लौटते समय इसे दिखाते हुए तीन बार मुझे बुलाना। मैं फिर आपको नदी पार कराऊंगी।”

हड्मेइ ने मछली का सुनहरा शल्क अच्छी तरह रख लिया और फिर तूफान व आंधी का सामना करते हुए तीन दिन और तीन रात का रास्ता तय किया तो वह एक जंगल के पास पहुंचा। जंगल में ऊंचे पेड़ खड़े थे, बेंत की लताएं जाल की तरह फैली हुई थीं और जमीन एकदम दलदली थी। उस पर चलना विलकुल संभव न था। वह फिर बेचैन हो रहा था कि जंगल से एक भीमकाय लाल भैंसा सामने आया। उसके बड़े सींगों पर

छोटे सींग भी निकले हुए थे। भैंसे के पीछे पीछे उसका खून चूसने के लिए गोमक्खियों का एक बड़ा झुंड उड़ रहा था। लाल भैंसा करुणामय आवाज में चिल्लाता रहा, मगर वह गोमक्खियों से पिंड न छुड़ा पा रहा था। हड्मेइ ने तीर से गोमक्खियों को मारने की कोशिश की, लेकिन वह उन का सफाया न कर सका। उसने जरा दिमाग लगाकर चकमक से सूखी घास जलाई। गोमक्खियां आग पर झपटीं और जलकर राख हो गईं। लाल भैंसा हड्मेइ को धन्यवाद देने आया और उसे जंगल पार करने में मदद करने का वचन दिया। हड्मेइ भैंसे पर सवार हुआ, कमान उसके सींगों पर लटका दिया और तीन दिन तीन रात चलने के बाद जंगल पार कर लिया। लाल भैंसे ने अपना एक छोटा सींग हड्मेइ को देते हुए कहा, “लौटते समय इसे दिखाते हुए तीन बार मुझे बुलाइए। मैं फिर आकर आपको जंगल पार कराऊंगा।”

हड्मेइ ने लाल भैंसे के सींग को संभालकर अपना सफर फिर जारी रखा। तीन दिन तीन रात के बाद वह एक बर्फीले मैदान में पहुंच गया। दिन में सूर्य की रोशनी में हिमपरतों की चमक से आखें चौंधियाती थीं। रात में तेज ठंडी हवा में दोनों पैरों में फुनसियां निकल आईं।

हड्मेइ बड़ा परेशान हुआ। तभी पूर्व की ओर से आकाश में एक भीमकाय सफेद कबूतर उड़ते हुए आया और उधर पश्चिमी दिशा से एक खूंखार चील अपने पंख फड़फड़ाती हुई आई। चील के पंजे चाकू की तरह तीखे थे और चोंच लंबी बछी के समान। वह एकदम सफेद कबूतर पर झपट पड़ी और अपनी चोंच से उसे धड़ाधड़ मारने लगी। देखते ही देखते सफेद कबूतर शिकार बनने ही वाला था कि हड्मेइ के एक तीर से चील का सिर बिध गया और वह एक पहाड़ी पत्थर की तरह गिर पड़ी। सफेद कबूतर ने हड्मेइ के प्रति अपना आभार प्रकट किया और उसे उठाकर बर्फीले मैदान को पार करने का वादा किया। हड्मेइ कबूतर पर सवार होकर तीन दिन तीन रात उड़ने के बाद बर्फीले मैदान को पार कर सका। कबूतर ने उसे अपना एक पर देते हुए कहा, “वापस आते वक्त इसे दिखाकर

तीन बार मुझे आवाज दीजिए, मैं फिर आकर आपको इसे पार कराऊंगा।”

हड्मेइ कबूतर का पर अच्छी तरह रखकर फिर आगे बढ़ा। दिन में धूप और रात में ठंड की परवाह न करते हुए वह चलता रहा और तीन दिन तीन रात के बाद वह एक गांव में पहुंच गया। वहां सरिता का पानी कलकल बह रहा था और धान के फूलों की सुगंध आ रही थी। हड्मेइ ने अचानक एक झोपड़ी में बुढ़िया को रोते हुए देखा। आगे बढ़कर उसने उससे रोने का कारण पूछा। बुढ़िया ने उत्तरी पर्वत पर काले बादलों से घिरी एक गुफा की ओर संकेत करते हुए कहा, “कुछ दिन पहले वहां से एक पिशाच गांव में बैल-बकरियों को खाने आया और उसने लोगों का अपहरण करके उन्हें भी दास बना लिया। मेरी इकलौती बेटी आचे का अपहरण हुए दस दिन हो गए, और अभी तक उसके बारे में कोई खबर नहीं मिली।” यह सुनकर हड्मेइ ने सोचा कि अब इंसान की जान बचाना सबसे महत्वपूर्ण है। उसने एक मजबूत तीर चुनकर कमान पर चढ़ाया और उत्तरी पर्वत पर चढ़ने लगा। गुफा के द्वार के बाहर लंबी लंबी घास उगी हुई थी लेकिन गुफा के अंदर कोई पिशाच दिखाई न दिया। सिर्फ एक सुंदर युवती सीढ़ी के आगे बैठी रो रही थी। हड्मेइ ने युवती को अपने आने का मकसद बताया तो उसे भय-मिश्रित खुशी हुई। खुशी इसलिए हुई कि उसे बचाने के लिए बहादुर गरुड़ जैसा हड्मेइ आ ही गया और भय इसलिए हुआ कि पिशाच लौटने ही वाला था और नवागंतुक की जान खतरे में थी। दोनों ने बातचीत करके एक योजना बनाई। हड्मेइ जहर से सना एक मजबूत तीर लेकर धरन के ऊपर छिप गया। फिर उखड़े वालों और बाहर निकले हुए दांतों वाला पिशाच वापस आया। उसने रोएंदार नाक से सूंघते हुए आचे से पूछा, “अरे नवागंतुक की यह बू कहां से आ रही है? और सांस लेने की यह आवाज कहां से सुनाई दे रही है?” आचे ने उसका मुंह बंद करने के लिए हंसते हुए उल्टे उससे पूछा, “क्या मैं नवागंतुक नहीं हूं? क्या मेरी सांस लेने की कोई आवाज सुनाई नहीं दे रही?” पिशाच ने कच्चा अनाज और मांस लाकर



आचे को खिलाना चाहा तो उसने सभी चीजें लेकर एक तरफ रख दीं और कहा, “अभी मुझे तो भूख नहीं है। सबसे पहले तुम्हारे दांतों में फंसी गंदगी निकालने में मदद करूं।” पिशाच पत्थर की चारपाई पर लेट गया। आचे ने चारपाई पर खड़ी होकर नोकीले कुदाल से उसके दांत साफ करने शुरू किए। फिर एक बाल्टी में पानी लाकर पिशाच को दिया और जब वह आंखें बंद करके मुंह धो रहा था तो हड्मेइ ने तीर चलाकर पिशाच का खात्मा कर दिया।

इसके बाद हड्मेइ और आचे साथ साथ झोपड़ी में लौट आए। आचे की मां ने हड्मेइ के साथ दामाद की तरह बर्ताव किया और गांव के लोग भी एक के बाद एक उन्हें बधाई देने आए। आचे ने सगाई के तोहफे के तौर पर एक कसीदाकारी की हुई चीज हड्मेइ को भेंट की। उस पर “मधुमक्खी और फूल का मिलन” शब्द अंकित थे। उसी तरह हड्मेइ ने भी आचे को सुनहरे वांस का एक तीर देते हुए वादा किया कि संजीवनी घास लाने के बाद वे दोनों साथ साथ जेड झील लौट जाएंगे।

आचे और उसकी मां से विदा लेकर हड्मेइ वहां से चल पड़ा। तीन दिन तीन रात के बाद वह चीनोलोक पर्वत पर पहुंच गया। वहां चट्टानें श्वेत जेड और चोटी हरे हीरे की तरह लग रही थी। चट्टान पर खड़े अमर-पक्षी कूज रहे थे और पर्वत के ऊपर आकाश में रंगविरंगे बादल मंडरा रहे थे। श्वेत जेड-गुफा के द्वार पर सुनहरे बालों वाला शेर एक ऊंचे कगार की तरह खड़ा था। हड्मेइ कमान पर तीर चढ़ाने वाला ही था कि वह भीमकाय शेर उस पर झपट पड़ा। हड्मेइ ने झट अपनी तलवार निकाली और एक ही वार से उसका गला काट डाला। फिर वह गुफा के अंदर घुस गया। वहां दीवार के अठारह मोड़ों से गुजरने के बाद एक जगह उसने सचमुच एक विशाल पेड़ देखा। उसकी अठारह टहनियों पर सतरंगी खुशबूदार घास उगी हुई थी और जो कोई उसे सूंघ ले, उसमें तिगुनी शक्ति पैदा हो सकती थी। हड्मेइ ने चमत्कारिक चाकू से घास काटी, बिजली सी चमकी, कटी हुई घास के पौधों पर फिर नई कोंपलें निकल आईं और क्षणभर में ही घास पहले की ही तरह बन गई।

यह देखकर हड्मेइ खुशी से उछलने लगा और संजीवनी घास लेकर आचे के पास लौट गया और फिर वह मां-बेटी के साथ अपने घर की ओर चल पड़ा। रास्ते में सफेद कबूतर, लाल भैंसे और सुनहरी मछली की मदद से उन्होंने बर्फीले मैदान, जंगल और विशाल नदी को पार किया। इस सफर में कुल अड़तालीस दिन लगे, और हड्मेइ, आचे और उसकी मां जेड झील के तट पर पहुंचे।

जेड झील का पानी गंदा हो गया, चीड़ के जंगल में धूआं उठने लगा था। इसका पहले किसी को गुमान भी न था। दरअसल, बात यह थी कि हड्मेइ के चले जाने के बाद जमींदार ने हड्मेइ और सुनहरे हिरन को पकड़ने के लिए अपने कारिंदों को भेजा था और उन्होंने नए मकान को जला दिया और झील का पानी गंदा कर डाला। हड्मेइ के दस साथी जंगल में भाग गए और सुनहरा हिरन गुफा में छिपा रहा। उनचासवें दिन हड्मेइ ने अपने साथियों को खोज निकाला और साथ ही उसने

संजीवनी घास से सुनहरे हिरन को भी बचा लिया। हिरन ने खुशी से तीन बार आवाज दी और श्वेतमेघ की दरार से दस घोड़े उड़ते आए, इनके साथ दस देदीप्यमान तलवारें भी थीं। जमींदार से बदला लेने के लिए हड़मेइ सुनहरे हिरन पर और उसके दस साथी सरपट दौड़ने वाले घोड़ों पर सवार होकर पर्वत के नीचे उतर आए। घमासान युद्ध हुआ, दोनों पक्षों के घोड़ों और तलवारों के बीच जोरदार टक्कर हुई, नतीजे के तौर पर जमींदार के कारिंदे या तो अपनी जानों से हाथ धो बैठे या घायल होकर भाग खड़े हुए। रखवा ने एक काले घोड़े पर दक्षिण की ओर भागने की कोशिश की, मगर हड़मेइ ने पीछे से तीर चलाकर उसे मौत के घाट उतार दिया। छाड़ पा एक सफेद घोड़े पर उत्तर की ओर भाग रहा था, हड़मेइ ने फिर एक तीर से उसे भी हमेशा के लिए धरती पर लिटा दिया। उधर मूहू घबराकर पागल हो रहा था, उसके भी तलवारों से टुकड़े टुकड़े कर दिए गए। हड़मेइ ने जमींदार के तमाम दासों को मुक्त कर दिया, उसकी तमाम संपत्ति गांववासियों को बांट दी और जमींदार के विशाल मकान को भी जला डाला।

हड़मेइ और उसके साथी जेड झील लौट आए। उन्होंने मिलकर मकान बनाने शुरू किए, खेतीबारी की और गाय-भेड़ों का पालन किया। पुरुष लोग शिकार करने पर्वत पर जाते और महिलाएं घर में कताई-बुनाई का काम करतीं। हड़मेइ और आचे की शादी के दिन ही उन्होंने बाकी साथी-साथिनों के लिए बरेखिए का काम किया। इस तरह पांच और शादियां भी हुईं। खुशी के जाम पेश किए जा रहे थे। श्वेत सारस नाच रहा था। पहाड़ी गीत गाए जा रहे थे और मुरलियों की सुरीली आवाज सुनाई दे रही थी। सब लोग इतने खुश थे कि जेड झील भी बड़ी बड़ी नीली आंखें खोले बड़ी उत्सुकता के साथ उन्हें निहार रही थी।

श्वे ता और इन लिङ

(ह्वेइ जाति की लोककथा)

वात बहुत पुराने जमाने की है। एक शहर से बहुत दूर कानछाए पर्वत था। उसकी तलहटी में एक नदी बहती थी। उसके आसपास धरती बहुत उपजाऊ थी और हमेशा बढ़िया फूल खिले रहते थे। इसलिए वह सचमुच एक बहुत खूबसूरत जगह थी।

वहाँ एक गांव में तीस परिवार रहते थे। वे सब गरीब लोग थे और शरण लेने के लिए वहाँ बस गए थे। वे लोग दुख और सुख दोनों में ही एकजुट रहते थे तथा अपने मेहनती हाथों से खेतीबाड़ी और शिकार करके बसर करते थे।

उस गांव में श्वे ता नामक एक नौजवान भी रहता था। वह बचपन में ही अपने मां-बाप के साथ आकर वहाँ बस गया था। कुछ समय बाद उसके मां-बाप का निधन हो गया। गांववासियों ने उस अनाथ को अपना बेटा समझकर पाला-पोसा था।

गांव में ली नामक एक विधवा भी रहती थी। उसकी इकलौती बेटी का नाम इन लिङ था। वे दोनों श्वे ता के साथ बहुत अच्छा बर्ताव करती थीं। श्वे ता गांव वालों को अपने घर वाले, विधवा ली को अपनी मां तथा इन लिङ को अपनी छोटी बहन समझता था।



श्वे ता वचपन से ही बहुत मेहनती और बहादुर था। अठारह साल का होने पर तो वह बहुत सुंदर और शक्तिशाली बन गया। वह अच्छा-खासा पहलवान था। सभी तरह के हथियार चलाने में निपुण था। खास तौर पर तीरंदाजी में तो उसका कोई सानी न था। उसका चलाया हुआ हर तीर जरूर निशाने पर लगता था। वह पहाड़ पर किसी भी जंगली जानवर को देखकर निशाना साधता तो वह उसका शिकार हो ही जाता। श्वे ता खेतीवाड़ी में भी माहिर था। उसके खेत में फसलें भी अच्छी तरह लहलहाती थीं। एक दिन श्वे ता पर्वत पर शिकार करते समय सफेद बालों वाले एक बुजुर्ग से मिला। बुजुर्ग ने उसे एक जादुई कमान और सोने के बने तीन तीर भेंट किए। उसके बाद से वह भयानक से भयानक भेड़िया, बाघ, चीता तथा दैत्य-दानव भी अपने तीर-कमान से मार सकता था।

पंद्रह साल की उम्र में इन लिङ रूपवती और तेज युवती बन गई। वह सूती कपड़ा बुनने और कसीदाकारी में कुशल थी। उसके काढ़े हुए फूल और परिंदे विलकुल जीते-जागते नजर आते थे। इसलिए उसकी चीजें हाथों-हाथ बिक जाती थीं। इसके अलावा उसकी आवाज भी सुरीली थी, मानो चांदी की घंटी हो। उसके गीत भी लोगों को बहुत आकर्षित करते थे। छोटे पंछी और पशु भी उसे घेरकर उसका गाना सुनना चाहते थे। एक दिन वह पर्वत पर ईंधन की लकड़ियां बटोर रही थी। वहां उसे एक दयालु बुढ़िया मिली। बुढ़िया ने उसे एक जादुई बांसुरी भेंट की। कोई भी आदमी काम करते करते थक जाता तो वह इस बांसुरी की आवाज सुनते ही थकावट को जरूर भूल जाता था।

श्वे ता और इन लिङ हमेशा बड़े उत्साह से गांववासियों की मदद करते थे। वे अपने शिकार और ईंधन गांववासियों में बांट देते थे। कोई भी मुसीबत में फंस जाता तो वे उसकी मदद जरूर करते। इस तरह श्वे ता और इन लिङ बाकी गांववासियों के साथ खुशी से जीवन बिता रहे थे।

एक साल उस गांव के कुछ लोग बीमार पड़ गए। उन मरीजों के पेट फूलने लगे थे लेकिन इलाज करना बहुत मुश्किल था। पूरे गांव में धीरे धीरे यह बीमारी फैलती जा रही थी और मरीजों की संख्या भी दिन-व-दिन बढ़ रही थी। मरीज हर वक्त दर्द से कराहते रहते थे। गांववासियों को इस मुसीबत में फंसे देखकर श्वे ता और इन लिङ को बहुत दुख हुआ। उन्होंने अपने गांववासियों को बचाने के लिए कुछ भी करने की ठान ली। उस गांव में मा नामक एक सज्जन रहते थे। वह पढ़े-लिखे आदमी थे और चिकित्सा की जानकारी भी उन्हें थी। इसलिए श्वे ता और इन लिङ ने उनसे पूछा, “श्री मा, यह क्या रोग है? इसका इलाज किस तरह किया जाना चाहिए? कृपया हमें बताइए।” श्री मा ने कहा, “यह अफारा है और इलाज कर पाना बहुत मुश्किल है। सुना जाता है कि इसका इलाज करने का एक नुस्खा तो है, मगर उसकी दो चीजें बहुत

मुश्किल से मिल पाती हैं— एक, 'माल्येनश्येन' नामक बूटी और दूसरी 'पाओचतान' (चीते का पित्तकोष)। इन दोनों से इस रोग का इलाज किया जा सकता है। लेकिन तीन महीने के अंदर ये न मिलीं तो मरीज लाइलाज हो जाएंगे।" श्री मा की बात सुनकर श्वे ता और इन लिङ ने ये दो चीजें ढूँढ़ने का संकल्प किया। उन्होंने श्री मा से फिर पूछा, "‘माल्येनश्येन’ व चीते का पित्तकोष कहां मिल सकेंगे?" श्री मा ने सोच-विचार करते हुए कहा, "बुजुर्गों के कहने के अनुसार वानश (सहस्र चट्टान) पर एक दैवी गुफा है। उसमें एक चीता रहता है, वह हर साल गरमियों में सिर्फ एक बार ही गुफा से बाहर निकलता है। बाद में एक पिशाच उस दैवी गुफा में आ गया। इसलिए आज किसी में भी वहां जाने का साहस नहीं है। माल्येनश्येन वानह्वा (सहस्र फूल) पर्वत पर उगती है लेकिन वह यहां से बहुत दूर है। वहां जाने के लिए वानन्याओ (सहस्र परिंदे) नामक गुफा से गुजरना पड़ता है। उस गुफा में तरह तरह के अजीब और खूंखार परिंदे रहते हैं। इसलिए आम लोग उसमें से गुजर नहीं सकते।"

श्वे ता और इन लिङ यह सुनकर न सिर्फ इन कठिनाइयों से डरे ही नहीं, बल्कि ये चीजें ढूँढ़ लाने का उनका संकल्प भी और ज्यादा दृढ़ हो गया।

श्वे ता चार नौजवानों और इन लिङ चार युवतियों के साथ अलग अलग रास्तों से ये चीजें ढूँढ़ने के लिए रवाना हुए।

श्वे ता चार नौजवानों के साथ रात-दिन वानश चट्टान की ओर चलने लगा। इस चट्टान तक पहुंचने के लिए छह बड़े बड़े पर्वतों और छह गहरी घाटियों में बहती नदियों को पार करना पड़ता था और श्वे ता के साथ गए चारों नौजवान डर के मारे उल्टे पांव लौट गए। आखिर श्वे ता अकेला रह गया। वह तरह तरह की कठिनाइयों का सामना करके छह बड़े बड़े पर्वत और छह गहरी घाटियों में बहती नदियां पार करके वानश चट्टान पर पहुंच ही गया। वहां श्वे ता ने गहरी घाटी में देखा कि जंगल में तरह

तरह के अजीबोगरीब फूल, पौधे, पेड़ उगे हुए थे। पेड़ों पर बैठे परिंदे चहचहा रहे थे तथा अनेक किस्मों के छोटे छोटे जानवर इधर-उधर घूम रहे थे, लेकिन उसने इस सुंदर दृश्य की ओर ज्यादा ध्यान नहीं दिया तथा वह फौरन वानश चट्टान के एकदम सामने की एक गुफा में छिपकर चीते का इंतजार करने लगा। उसे भूख लगने पर जंगली जानवरों का शिकार करना पड़ा और प्यास लगने पर चश्मे का पानी पीना पड़ा। इस तरह काफी समय तक इंतजार करता रहा लेकिन चीते का कुछ अता-पता न चला। एक दिन अचानक श्वे ता ने देखा कि पेड़ों पर बैठे सभी परिंदे डर के मारे उड़ने लगे और जमीन पर छोटे छोटे जानवर भी बेतहाशा भाग खड़े हुए हैं। थोड़ी देर में वानश चट्टान पर सन्नाटा छा गया। अनुभवी शिकारी होने के कारण श्वे ता समझ गया कि जरूर कोई खूंखार जानवर वहां आ गया है। वह तुरंत अपनी गुफा में छिप गया, तीर-कमान और त्रिशूल लेकर गौर से देखता रहा। थोड़ी देर बाद वानश चट्टान की दैवी गुफा से तेज लाल रोशनी आने लगी। इससे सारा पर्वत लाल हो गया और उसके बाद एक खूंखार चीता गुफा से बाहर निकला। श्वे ता को यह देखकर बहुत खुशी हुई। उसने झट एक के बाद एक करके दो तीर ठीक चीते की आंखों पर चला दिए। तीरों का शिकार होने पर चीता दर्द से गुराँने और भागने लगा। ठीक उसी मौके पर श्वे ता ने त्रिशूल से चीते को चितकर मार डाला। फिर उसने चीते की खाल उधेड़कर उसका पित्तकोष निकाला। इस तरह वह जीतकर गांव लौट गया।

उधर इन लिङ अपने दोस्त श्वे ता से विदा होने के बाद चार लड़कियों के साथ माल्येनश्येन की तलाश करने चली गई। न जाने इन लड़कियों ने कितना रास्ता तय कर लिया था कि वानह्वा पर्वत तक ले जाने वाली वानन्याओ गुफा आ गई। उन्होंने गुफा की ओर देखा—वह बहुत गहरी थी और उसके अंदर अंधकार छाया था। फिर उसमें से अजीबोगरीब व भयानक आवाजें भी आ रही थीं। उन्हें सुनकर उनके रौंगटे खड़े हो गए। कुछ जालिम पंछी गुफा के द्वार पर पहरा दे रहे थे और उन्होंने लड़कियों

की ओर घूरकर देखा। यह हालत देखकर इन लिङ के साथ आई चारों लड़कियां बहुत डरीं और वे अपने गांव लौट गईं। उस समय इन लिङ भी बहुत घबरा गईं लेकिन उसे मौत के खतरे का सामना कर रहे अपने गांववासियों की याद आई तो फौरन उसमें साहस आ गया और वह जादुई बांसुरी बजाने लगी। उसकी सुरीली आवाज सुनकर पहरा दे रहे पंछियों को धीरे धीरे नींद आने लगी। तभी इन लिङ वानन्याओ गुफा में से गुजरकर एक पहाड़ी घाटी में पहुंची। रास्ते में उसे भूख लगी और वह खाने की कोई चीज तलाशने की सोच ही रही थी कि अचानक उसे वहां से कुछ फासले पर एक छोटे पहाड़ पर एक झोपड़ी दिखाई दी। उस झोपड़ी के सामने सफेद बालों वाले एक बुजुर्ग बैठे हुए थे। इन लिङ ने उनके पास पहुंचकर उन्हें नमस्कार किया और वहां आने का मकसद भी बताया। फिर उसने उनसे वानह्वा पर्वत जाने का रास्ता पूछा। बुजुर्ग ने कुछ भी न कहा, फौरन झोपड़ी में से एक कटोरे में शोरबा और एक रोटी लाकर उसे खाने के लिए दी। इन लिङ खा चुकी तो बुजुर्ग ने पर्वत पर पहुंचने का रास्ता बताया। उसके बाद वह झोपड़ी समेत ओझल हो गए।

खाना खाने के बाद इन लिङ के शरीर में और ज्यादा ताकत आ गई। वह बुजुर्ग द्वारा बताए गए रास्ते पर वानह्वा पर्वत की ओर रवाना हुईं। इस तरह वह तीन दिन और तीन रातों तक चलती रही और अंत में अपनी मंजिल पर पहुंच गईं। उसने चारों ओर नजर डालकर देखा — वह सचमुच सुंदर पर्वत था। पर्वत पर और उसकी तलहटी में जगह जगह बहुत से ताजा फूल खिले और हरी घास उगी हुई थी। यह सब उसने पहले कभी नहीं देखा था। फिर भी इन लिङ का मन इन अजीबोगरीब फूलों और घास-पात को निहारने में नहीं लगा। उसे तो सिर्फ पूरे मन से माल्येनश्येन की तलाश करने की धुन सवार थी। कुछ समय तक ढूंढ-ढांढ करने के बाद अचानक उसने देखा कि पर्वत की ढलान पर माल्येनश्येन उगी हुई हैं। इसलिए वह आनंद से झूम उठी और ढलान पर बेतहाशा भागने लगी। ढलान पर उतरते हुए उसने बालों में दो गुलाबी फूल टांगे और लाल लहंगा

पहने हुए एक लड़की की फूलों की टोकरी में माल्येनश्येन देखी। उस लड़की ने मुस्कराते हुए इन लिङ से पूछा, “तुम यहां क्यों आई हो?” इन लिङ ने उसे अपना मकसद बताया। उस लड़की ने इन लिङ के हाथ में पकड़ी बांसुरी देखी तो उसने उससे बांसुरी बजाने का अनुरोध किया। इस पर इन लिङ बांसुरी बजाने लगी। लेकिन उसने यह सोचा भी नहीं था कि उसकी बांसुरी की आवाज सुनकर अचानक तीस युवतियां, चालीस वच्चे और चालीस वच्चियां वहां आ पहुंचेंगी। युवतियों ने अपने बालों में नीले फूल टांगे और नीले ही लहंगे पहने हुए थे, वच्चों के बालों में लाल फूल टांगे हुए थे और उन्होंने नीले तओ तओ (छाती से पेट तक का एक कपड़ा) पहने हुए थे, वच्चियों की चुटियों में गुलाबी फूल टांगे हुए थे और उन्होंने लाल तओ तओ पहने हुए थे। उन्होंने इन लिङ को घेरकर उससे फिर एक बार बांसुरी बजाने का अनुरोध किया। इन लिङ ने थोड़ी देर तक सोच-विचार करके उनकी बात मानकर बांसुरी बजानी शुरू की और उस पर एक धुन बजाकर अपने गांववासियों की मुसीबतें प्रकट कीं। यह दुखमय धुन सुनकर सब लोगों की आंखें डबडबाने लगीं। इसलिए सभी ने फौरन अपनी अपनी टोकरी में से माल्येनश्येन और अन्य जादुई जड़ी-बूटियां उसे दे दीं। उसके बाद वह लड़की, जिसकी इन लिङ से सबसे पहले मुलाकात हुई थी, उसे लेकर एक खड़ी चट्टान के किनारे आ पहुंची और उसने इशारा करके एक जगह इन लिङ को दिखाई। इन लिङ ने वहां से देखा कि उसके गांव में मरीज पहले से कहीं ज्यादा हैं और सभी मरीजों के सिर पर मौत मंडरा रही है। रोने की आवाजें सारे गांव में गूंज रही थीं। गांववासी इन लिङ की वापसी का इंतजार कर रहे थे। यह देखकर वह और ज्यादा दुखी और बेचैन हो गई, इसलिए उसने तुरंत अपने गांव लौटकर जड़ी-बूटियां गांववासियों में बांटनी चाहीं। उसके पास खड़ी लड़की ने इन लिङ का इरादा भांप लिया और उससे आंखें बंद करने को कहा और उसकी ओर एक बार फूँका। इन लिङ तुरंत अपने गांव पहुंच गई।



इस तरह मेहनती और बहादुर श्वेता तथा इन लिड ने मुश्किलों और खतरों की परवाह न करके तीन महीने में चीते का पित्तकोष और माल्येनश्येन खोज लीं और गांववासियों को मौत के मुंह से बचाया। इसके लिए सब लोगों ने उन्हें हार्दिक धन्यवाद दिया। बाद में गांववासियों के प्रस्ताव पर उन दोनों की शादी के लिए एक शानदार जश्न का आयोजन किया गया। उसी समय से उस गांव के लोग फिर से सुख के गीत गाने लगे।

बहादुर गादबाई

(कजाख जाति की लोककथा)

बहुत पहले की बात है। खाराताऊ पर्वत के बीचोंबीच खलासू नदी बहती थी। नदी के किनारे पर कसानकाफू नामक एक गरीब आदमी रहता था। वह शिकार करने और मछली पकड़ने के जरिए अपना गुजारा करता था। उसकी पत्नी दूसरे लोगों के कपड़े सीने और मछली पकड़ने के जाल बुनने का काम करती थी। वे दोनों बेचारे सीधी-सादी जिंदगी बसर करते थे। फिर कसानकाफू की पत्नी गर्भवती हो गई। नौ महीने बाद उनके एक मोटा-ताजा लड़का पैदा हुआ। इस पर दंपति खुशी से फूला नहीं समा रहा था। उन्होंने अपने बच्चे का नाम गादबाई रखा।

उनका लड़का बड़ी तेजी से बढ़ने लगा। छह दिन बाद वह मुस्कराने लगा और दस दिन बाद वह चलना और दौड़ना सीख गया। छह साल की उम्र में वह एक हट्टा-कट्टा नौजवान बन गया। वह इतना ताकतवर था कि उसके साथ कुश्ती करने वाला कोई भी उसके मुकाबले में थोड़ी देर भी टिक न पाता था। एक बार उसने कुएं में गिर गए बड़े बधिया बैल को अकेले ही खींचकर बाहर निकाल लिया था। उसके पिता शिकार करने बाहर जाते तो वह उनकी मदद भी करता था। बाद में उसने जेवरों, बारहसिंगों तथा अन्य जंगली जानवरों का शिकार करना भी सीख लिया

और धीरे धीरे वह एक कुशल शिकारी बन गया। उसकी बदौलत खलासू नदी के किनारे रहने वाले गरीब आदमी चैन से जीवन विताने लगे।

एक दिन गादबाई शिकार करने गया। उसने देखा कि खाराताऊ पर्वत की तलहटी में एक बड़ी खड़ी चट्टान के नीचे शेर जैसा एक भूरा भेड़िया गाभिन घोड़ी के पेट को अपने पंजों से नोचने ही वाला था कि गादबाई ने तुरंत दौड़कर भूरे भेड़िये को पूंछ से पकड़कर कई बार पटका और काफी दूर फेंक दिया। भेड़िये ने एक दहाड़ मारी और ठंडा पड़ गया। फिर वह घोड़ी के पास आया। उस वक्त घोड़ी उल्टी सांस ले रही थी। उसने अपनी तेज तलवार से घोड़ी के पेट को चीरकर एक बछेड़े को बाहर निकाला। वह उस बछेड़े को गोद में लेकर घर लौटा और उसका नाम “खरखूला” रखा तथा जेबरे के दूध से उसे पाला।

यह बछेड़ा तेजी से बड़ा हो गया। छह महीने से भी कम समय में उसकी ऊंचाई लगभग छह फुट हो गई। उसके वालों का रंग पीला-भूरा था।



वह बड़ा होने पर हवाई रफ्तार से दौड़ने वाला हवाई घोड़ा बन गया। वह दौड़ते हुए अपने मुंह से पंछी पकड़ने में भी माहिर था। एक बार गादवाई ने इस हवाई घोड़े पर सवार होकर छह पर्वतों के पार दौड़ते एक जेवरे का पीछा कर उसकी पूंछ पकड़ ली थी।

गादवाई हररोज इधर-उधर शिकार करने जाता और वह बहुत नेकदिल था। गादवाई दुख के दलदल में फंसे व्यक्ति को दिलासा देता और मुसीबत में पड़े इंसानों की मदद करता। वह पूरी तरह निःस्वार्थ आदमी था। वह कुछ भी मिलने पर उसे लोगों में बांट देता। वह लोगों के साथ दुख में दुखी और सुख में सुखी होता था। लोग उसे “वहादुर” कहकर पुकारते थे। वह इसी नाम से मशहूर हो गया था।

एक दिन गादवाई शिकार के लिए बहुत दूर निकल गया। चलते चलते उसे भेड़ें चराने वाला एक बच्चा मिला। उसे रोते देखकर गादवाई ने पूछा, “तुम क्यों रोते हो?”

बालक के सिर पर दाद ही दाद थी। उसके कपड़े फटे-पुराने थे।

“आपके प्यारे मां-बाप छिन गए हों तो क्या आप सुखी जिंदगी बिता सकते हैं? और क्या जिंदा रह सकते हैं?” बालक जोर से चिल्लाया।

“क्या बात है? तुम साफ साफ क्यों नहीं कहते हो?” गादवाई ने उससे पूछा।

बच्चे के आंसू बहते रहे और उसने ठंडी सांस लेते हुए जवाब दिया, “मैं वहादुर माएअडकान का इकलौता बेटा हूँ। अब मेरी उम्र छह साल है। दुश्मन मेरी जन्मभूमि में आकर सभी मवेशी छिन ले गए हैं। मेरे पिता जी को बहुत नींद आती थी। बहुत लंबा फासला तय करने के बाद आम तौर पर उन्हें छह दिन सोना पड़ता था। वह सो रहे थे तो दुश्मनों ने उन्हें चुपके से पकड़ लिया। ऐसी नाजुक घड़ी में मेरी मां ने मेरे पिता को बचाने के लिए दुश्मनों को रोकने की कोशिश की। लेकिन जालिम दुश्मन उन्हें भी घोड़े पर बिठाकर उठा ले गए। उन्होंने मुझे अनाथ बना दिया। मुझे रोटी और कपड़ा भी नसीब नहीं होता और ताशीखाराबाई

की भेड़ें चरानी पड़ती हैं। इससे मैं बहुत थक चुका और बेहद दुखी हूँ। देखिए, मेरे होंठ भी फट गए हैं और सिर पर दाद हो गई है। मैं दुख में हररोज अपने मां-बाप की याद में रोता रहता हूँ...

“रोओ मत! मैं तुम्हारे मां-बाप की तलाश में जाऊंगा,” गादवाई ने कहा।

बच्चे को यह सुनकर बहुत खुशी हुई तो उसने अनुरोध करते हुए कहा, “अच्छा, पहले हम ग्वालों के गरीबखाने में दो दिन आराम करें, फिर जाएं।”

गादवाई ग्वालों के रहने की जगह पर गया। वहां पहुंचकर उसने शिकार किए गए जेबरा को अलाव पर लटकाकर शाम का खाना तैयार करना शुरू किया। शाम को उस अनाथ बच्चे के अलावा सभी ग्वाले लौट आए। इसलिए सभी बच्चे का इंतजार करते रहे। गादवाई उनींदा होने पर भी उसकी वाट जोह रहा था कि वह बच्चा भेड़ों के साथ लौट आया।

“तुम इतनी देर से क्यों लौटे हो?” गादवाई ने पूछा।

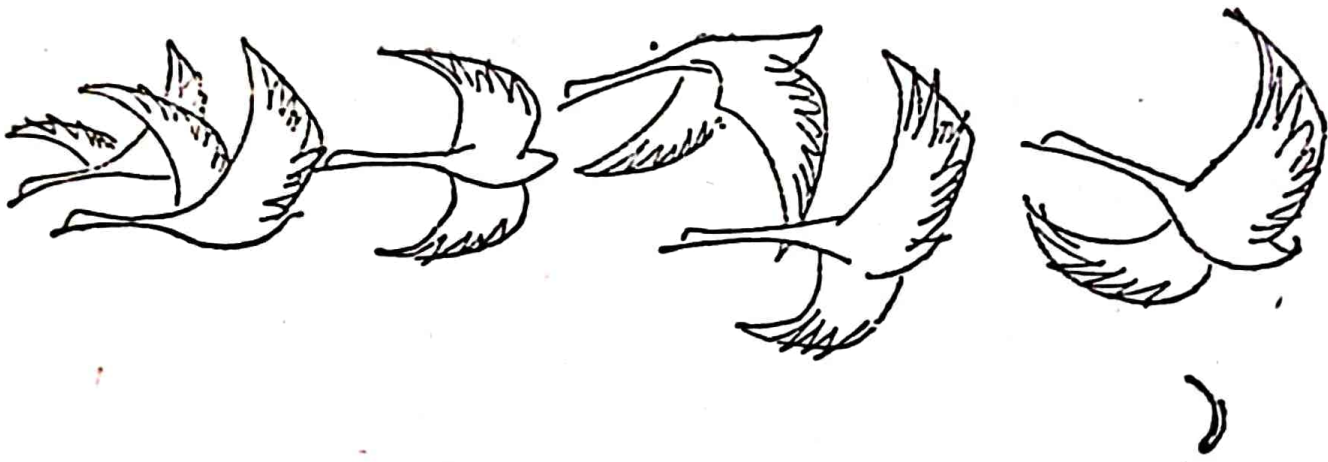
“मेरे पेट में दर्द है,” बच्चे ने कहा।

दूसरे दिन बच्चा बिल्कुल ठीक हो गया और भेड़ें चराने के लिए चरागाह में गया। शाम को सभी के लौट आने के बाद भी बच्चा वापस नहीं आया। गादवाई उसे ढूँढ़ने के लिए बाहर गया तो उसने देखा कि बच्चा जमीन पर बेहोश पड़ा हुआ है। बच्चे के होश में आने पर गादवाई ने उससे बीमारी के कारण की पूछताछ की। बच्चा कुछ भी न बोला तो गादवाई को गुस्सा आ गया। यह देखते ही बच्चे ने जवाब दिया, “कल सूरज डूबते ही छह कलहंसों ने मेरे सिर पर मंडराते हुए मुझसे पूछा कि क्या यहां गादवाई नामक एक नेक आदमी है?

क्या उसके पास ‘खरखूला’ घोड़ा है?

क्या उसका प्रकाश बगीचे में चमकता है?

क्या उसका घोड़ा हवाई रफ्तार से दौड़ सकता है?



मैंने उनको जवाब दिया :

मैं नेक गादबाई हूं,
'खरखूला' घोड़ा मेरे पास है,
बगीचे में मेरा ही प्रकाश चमकता है,
मेरा घोड़ा हवाई रफ्तार से दौड़ सकता है ।

“यह सुनकर उन छह कलहंसों ने अपने अपने पंखों से मुझे पीटते हुए जमीन पर गिराया और मैं बेहोश हो गया ।”

तीसरे दिन गादबाई ने बच्चे का रूप धारण किया और भेड़ें चराने चला गया । सूरज डूबने के बाद अंधेरा हो रहा था । तभी छह कलहंसों ने गादबाई के सिर पर मंडराते हुए छह चक्कर लगाए और नीचे की ओर उड़कर उससे पूछा, “क्या यहां गादबाई नामक एक नेक आदमी है ?

क्या उसके पास 'खरखूला' घोड़ा है ?

क्या उसका प्रकाश बगीचे में चमकता है ?

क्या उसका घोड़ा हवाई रफ्तार से दौड़ सकता है ?”

गादबाई ने उत्तर दिया, “बगीचे में मेरा ही प्रकाश चमकता है,
मेरा घोड़ा हवाई रफ्तार से दौड़ सकता है ।”

यह सुनकर कलहंस गुस्से से आगबबूला हो उठे । उन्होंने अपने पंखों से गादबाई को पीटना शुरू कर दिया । लेकिन गादबाई ने फुर्ती से आगे



बढ़कर एक कलहंस के पंख को पकड़ने की कोशिश की। वह कलहंस तो फौरन उड़ गया लेकिन उसके हाथ में सोने का एक जूता आ गया। फिर उसने गौर से देखा कि जूते पर अक्षर अंकित हैं। इसके बाद गादबाई कई दिनों तक बाकी कलहंसों के आने का इंतजार करता रहा, लेकिन उनका साया तक भी नजर न आया। गादबाई ग्वालों से विदा लेने के बाद घर लौट गया।

उसने अपने मां-बाप के लिए पूरे एक साल का अनाज जुटाया, कवच पहना और हथियार ले लिए। फिर वह साठ टट्टुओं की आंते लेकर उस भेड़ें चराने वाले बच्चे के मां-बाप की तलाश में खाना हो गया। खरखूला घोड़ा उड़ती चील की तरह हवाई रफ्तार से दौड़ता था। वह एक महीने

में तय किया जाने वाला फासला सिर्फ साठ छलांगों में पूरा कर लेता था। वह पहाड़ों और समुद्रों को भी पार कर सकता था। गादवाई रात-दिन चलता रहा और अंत में वह एक गगनचुंबी पर्वत की तलहटी में पहुंच गया तो अचानक खरखूला घोड़ा बोलने लगा, “मेरे दोस्त गादवाई, हम जहां जाना चाहते हैं वह जगह यहां से बहुत दूर नहीं है। इस पर्वत को पार करने पर तुम्हें एक नदी दिखाई देगी। उस नदी के बीचोंबीच एक द्वीप है और उस पर एक देव-राजा रहता है। तुम्हारे पास जो सोने का जूता है वह उस देव-राजा की बेटी का है। उस बाल-ग्वाले के मां-बाप भी देव-राजा के पंजे में हैं और उसने उन्हें जेल में बंद कर रखा है। जेल के दरवाजे पर लगे ताले की चाबी साठ नदियों के संगम-स्थल के नीचे रखी हुई है। मनुष्यलोक का कोई भी व्यक्ति वहां नहीं जा सकता। पर्वत के दूसरी ओर की ढलान पर एक भीमकाय चरवाहा है। वह लड़ाई करते समय पकड़ा गया था और अब वह देव-राजा का दास है। तुम उस आदमी को सफर के लिए काफी खर्च देना, खुद उसका वेश धारण करना और उसे अपने कपड़े पहनने देना। उसे रिहा करके खुद गाएं चराने जाना। अब तुम मेरी पूंछ से एक बाल उखाड़ लो। अपना कवच और हथियार मेरी पीठ पर लादकर मुझे भी छुटकारा दो। अब मैं, कवच और हथियार तुम्हारे लिए उपयोगी सिद्ध नहीं होंगे। अगर तुम्हें मेरी जरूरत पड़े तो मेरी पूंछ का बाल जला देना। मैं उसी समय तुम्हारे सामने हाजिर हो जाऊंगा। और कोई बात होगी तो तुम्हें वहां जाकर खुद देखने पर पता चलेगी।”

गादवाई ने घोड़े की पूंछ से एक बाल उखाड़ लिया तथा उसे जाने दिया। फिर उसने घोड़े के कहने के अनुसार ही सब कुछ किया।

शाम को वह गाएं हांकते हुए नदी पार करने की तैयारी कर रहा था। लेकिन गाएं नदी पार नहीं करना चाहती थीं। गादवाई को बहुत गुस्सा आया। उसने एक एक गाय को उसकी पिछली टांग से पकड़कर नदी के दूसरे किनारे फेंकना शुरू किया। इस तरह कुछ गाएं नदी के द्वीप पर

फेंकी गई। उसी समय देव-राजा की छोटी बेटी नदी के किनारे यह सब देखकर बहुत हैरान हुई तो उसने कहा, “अरे, क्या तुम पागल हो गए हो? तुमने गायों को क्यों चौपट कर दिया है! तुम पहले की तरह क्यों नहीं कहते—पानी, मुझे रास्ता दीजिए!”

गादबाई ने झटपट कहा, “पानी, मुझे रास्ता दीजिए!” उसके यह कहते ही नदी का पानी बंटने लगा और बीच में एक रास्ता बन गया।

इस तरह गादबाई ने गाएं हांकते हुए नदी पार की। एक दिन देव-राजा ने अपने दो बेटों को बुलाकर हुक्म दिया, “आज काली घोड़ी बछेड़ा जनेगी। यह नौवीं बार सू रही है। पिछली बार रात को बछेड़ा पैदा हुआ तो वह तुरंत गायब हो गया था। आज रात तुम दोनों भाई घोड़ी की निगरानी करो और बछेड़े के गायब होने का कारण पता लगाओ।”

यह बात गादबाई ने भी सुन ली। रात को देव-राजा के दोनों बेटे घोड़ी की देखभाल करने चले तो गादबाई भी चुपके से उनके पीछे पीछे चल दिया। कुछ समय बाद दोनों बेटे खरटि मारने लगे लेकिन गादबाई नहीं सोया और घोड़ी की निगरानी करता रहा। तड़के घोड़ी ने एक बछेड़ा सुआ, जिसकी पूंछ सुनहरे रंग की थी। उसी समय आकाश में घने बादल छा गए और वे नवजात बछेड़े को उठा ले गए। गादबाई ने झटपट आगे बढ़कर बछेड़े की सुनहरी पूंछ को पकड़ लिया तो वह टूट गई। फिर गादबाई उसे अपनी गोद में लेकर सो गया। सुबह देव-राजा ने अपने दोनों बेटों को बुलाया और उनसे पूछा कि कल रात को तुम लोगों ने क्या देखा। दोनों ने उत्तर दिया, “महामहिम पिता जी, घोड़ी ने बछेड़ा नहीं जना। रात को और कोई बात तो नहीं हुई।”

देव-राजा को यह सुनकर कुछ संदेह होने लगा। ठीक उसी समय गादबाई आया और बोला, “महामहिम, आपको धोखा दिया गया है!”

“क्या बात है, जल्दी से कहो!” देव-राजा ने उत्सुकता से पूछा।

“मैं कहना चाहता हूं कि इन दोनों ने सफेद झूठ बोला है। दरअसल, इन्होंने घोड़ी की बिलकुल निगरानी नहीं की। आधी रात को ये दोनों

सो गए। तड़के घोड़ी ने एक छोटा बछेड़ा जना। उसकी पूंछ के बाल सुनहरे रंग के हैं। लेकिन अचानक आकाश में घने बादल उमड़े और वे नवजात बछेड़े को उठा ले गए। मैंने फुर्ती से दौड़कर उसे पकड़ने की कोशिश की लेकिन सिर्फ उसकी सुनहरी पूंछ ही मेरे हाथ लगी। मैंने देखा कि घने बादलों में एक चील ने बछेड़े को अगवा कर लिया है..." वह अभी बात खत्म नहीं कर पाया था कि देव-राजा ने उससे पूछा, "वह सुनहरी पूंछ कहाँ है?"

"महामहिम, अगर मैं सुनहरी पूंछ से कमाना-धमाना चाहता तो मैं आपको नहीं बताता। जरा देखिए, यह वही सुनहरी पूंछ है।"

गादबाई ने अपनी गोद से सुनहरी पूंछ निकाली तो सारे महल में रोशनी फैल गई। देव-राजा के बेटे तो मारे शर्म के गड़ गए और कुछ भी बोल नहीं सके।

"अब तुम तीनों चील और बछेड़े को ढूँढ़ने जाओ! उनके न मिलने तक मेरे पास न आना!" देव-राजा ने कहा।

गादबाई ने नदी पार की और खरखूला घोड़े की पूंछ के बाल को जलाया। उसी समय वह घोड़ा उसके सामने हाजिर हो गया। फिर उसने कवच पहना और हथियार लेकर घोड़े पर सवार हो गया और चील व बछेड़े को ढूँढ़ने निकल पड़ा।

एक जगह पर घोड़ा रुक गया और उसने गादबाई से कहा, "कुछ दूरी पर जो गगनचुंबी ज्वाला दिखाई देती है, वह आग की नदी है। जिस जगह तुम जाना चाहते हो, वह भी आग की नदी के दूसरी ओर है। अब तुम अपनी आंखें मूंद लो। मेरे आंखें खोलने के लिए कहने तक अपनी आंखें मूंदे रहना। वरना हम दोनों एक साथ मर जाएंगे।"

गादबाई ने अपनी आंखें मूंद लीं। इस तरह वे दोनों हवाई रफ्तार से दौड़ रहे थे। रास्ते में उन्हें ऐसा महसूस हुआ कि पहले गरम हवा का झोंका आया और फिर लू चलने लगी। कुछ समय बाद खरखूला घोड़े ने कहा, "आंखें खोलो!" गादबाई ने आंखें खोलकर देखा कि वह एक

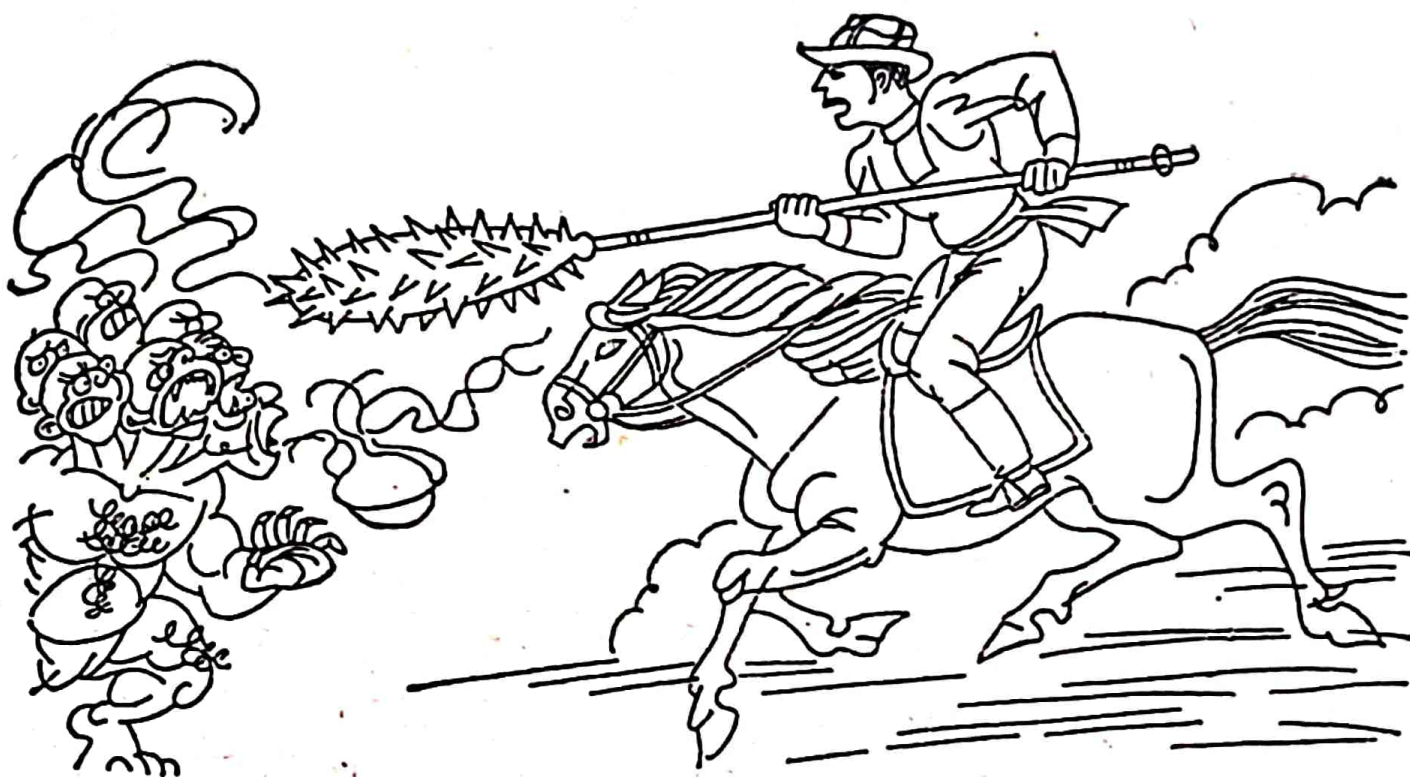
द्वीप पर पहुंच गया है। इस द्वीप पर सुनहरी पूंछों वाले आठ बछेड़े हैं और एक बिना पूंछ वाला बछेड़ा सोने की नांद में पानी पी रहा है।

खरखूला घोड़े ने फिर कहा, “उस सफेद पीपल के बड़े पेड़ पर ‘सुमुलूअड’ पंछी का घोंसला है। वह हर छह महीने में एक बार दाने ढूँढ़ने बाहर जाता है और पंद्रह दिनों में लौटता है। अब वह दानों की तलाश में गया हुआ है और छह दिन बाद लौट आएगा। हमें उसके पंजों में फंसने से बचने के लिए छह घंटे में छह महीने का रास्ता तय करना पड़ेगा। तुम मेरी पीठ पर सवार होकर सोने की नांद अपने सामने रखो। इससे सभी बछेड़े हमारे साथ आ जाएंगे। हमें बछेड़ों को लेकर आग की नदी पार करते समय सीधे रास्ते से नहीं बल्कि टेढ़े-मेढ़े रास्ते पर चलना है। इसलिए लौटने का रास्ता लंबा होगा। रास्ते में हमें तीन दुर्गमों का सामना करना पड़ेगा। पहला, सात सिरों वाला पिशाच; दूसरा, सफेद शेर तथा अंत में टोनहाई। उन्हें परास्त करके हम नदी को पार कर सकेंगे। ये काम करना आपकी शक्ति पर निर्भर करता है। अच्छा, अब हम जल्दी चलें, देर न करें!”

गादवाई सोने की नांद घोड़े की गरदन पर रखकर चला तो सभी बछेड़े भी उसके पीछे पीछे दौड़ने लगे।

थोड़ी देर बाद सामने एक बड़ा पहाड़ नजर आया। यह पहाड़ हिलते हुए धीरे धीरे उनके नजदीक आ रहा था। वास्तव में यह पहाड़ सात सिरों वाले पिशाच का अवतार था। गादवाई ने सोने की नांद जमीन पर रखी तो सब बछेड़े उसके आसपास आ गए।

इसके बाद गादवाई अपने हाथ में एक भारी हथियार लेकर फिर खरखूला घोड़े पर सवार हो गया और पिशाच पर टूट पड़ा। गादवाई के पहले ही वार से पिशाच का एक सिर जमीन पर गिर गया और इस तरह उसने एक के बाद एक वार कर उसके सातों सिर काट डाले। तभी पिशाच मर गया। फिर उसने पिशाच की आंखें निकालकर अपनी थैली में डाल लीं।



इसके बाद गादवाई ने सोने की नांद को फिर घोड़े की गरदन पर रखा और बछेड़ों को साथ लेकर आगे बढ़ने लगा। खरखूला घोड़ा हवाई रफ्तार से दौड़ता रहा। उसने बड़ी फुर्ती से छह पहाड़ पार किए।

थोड़ी देर बाद शेर के गरजने की आवाज सुनाई देने लगी। गादवाई ने अपने घोड़े को बछेड़ों के सामने एक पेड़ से बांध दिया और वह खुद शेर की ओर दौड़ने लगा। कुछ समय तक दौड़ने के बाद किसी चुंबकीय शक्ति ने उसे अपनी ओर खींच लिया और उसे एक शेर का मुंह दिखाई दिया। वह आकाश की तरह बड़ा था और उसने गादवाई को अपनी ओर खींच लिया था। गादवाई ने हीरे से बना लंबा चाकू लेकर चुंबकीय शक्ति के जरिए शेर के मुंह में प्रवेश किया और उसे दो भागों में चीर डाला। अंत में उसने शेर के सफेद दांतों को तोड़कर अपनी थैली में रखा। फिर गादवाई आगे बढ़ने लगा। उसने न जाने कितने ऊंचे ऊंचे पर्वतों को पार किया। अचानक सारे आकाश में घना कोहरा छाया। बछेड़ों की सोने की पूंछों से प्रकाश फैल गया। इससे उनका रास्ता रोशन हो गया। घने कोहरे में एक सुंदर युवती दिखाई दी। गादवाई घोड़े से उतर गया और उसकी ओर आगे बढ़ने लगा। उसी समय युवती उसके चेहरे को गौर

से देखती रही तथा उससे कहा, “आपने इतना लंबा रास्ता तय किया है। आप थक गए होंगे, कृपया मेरे घर आकर जरा आराम कीजिए !”

यह युवती के वेश में एक टोनहाई थी।

“हां बहुत थक गया हूं, इसलिए मुझे आराम करने में कोई एतराज नहीं। तुम मुझे साथ ले चलो !” गादवाई ने कहा।

युवती आगे चली जा रही थी। वह कुछ कहने ही वाली थी कि गादवाई ने हीरे से बनी तलवार से उसका सिर काट डाला। पलभर में ही तलवार से एक तेज प्रकाश निकला, फिर आकाश में घने बादल और कोहरा छा गए। कुछ समय बाद बादल और कोहरा छंट गए। जहां से वह युवती गुजरी थी वहां टोनहाई की लाश दो हिस्सों में कटी हुई पड़ी थी। गादवाई ने उसका सिर काटकर अपनी थैली में रख लिया।

“इस जगह टोनहाई का राज था, इसलिए कोई भी पक्षी या जानवर यहां से गुजर नहीं सकता था। अभी टोनहाई की हत्या के बारे में किसी को मालूम नहीं है। इसलिए वह ‘सुमुलूअड’ पक्षी यहां नहीं आ सकता। हम यहां चार दिनों तक आराम कर सकते हैं,” खरखूला घोड़े ने कहा।

इस प्रकार गादवाई ने वहां चार दिनों तक आराम किया। उसने टोनहाई की मूल्यवान चीजें ले लीं और वह सोने की नांद अपने घोड़े की पीठ पर रखकर सुनहरी पूंछों वाले सभी बछेड़ों को लेकर देव-राजा के पास सकुशल पहुंच गया।

देव-राजा को बेहद खुशी हुई और उसके स्वागत-सत्कार के लिए एक शानदार दावत दी गई। दावत के दौरान देव-राजा के दो बेटे खाली हाथ लौट आए, उन्हें कोई भी चीज नहीं मिली। वे दोनों थककर चूर हो गए थे।

देव-राजा ने गादवाई से उसके नाम और परिवार के बारे में पूछा तो गादवाई ने जवाब दिया कि “मैं देव-राजा नहीं हूं। मैं मनुष्यलोक का एक बेटा हूं। मेरा नाम गादवाई है। सब लोग मुझे खरखूला घोड़े का मालिक गादवाई कहकर पुकारते हैं। मैं यहां पर्यटन करने नहीं बल्कि एक खास

काम से आया हूं। अगर आप मुझे कहने कि इजाजत दें तो मैं अर्ज करूं।”

“कहो! मेरे बेटे!” देव-राजा ने कहा।

“कई वर्ष पहले आपके सैनिकों ने मेरी जन्मभूमि की लूटखसोट की और हमारे गाय-भेड़ और घोड़ों के झुंडों को छीन लिया। माएअडकान नामक हमारा ‘बहादुर’ सोते समय सतर्क न था, इसलिए वह आपके सैनिकों द्वारा पकड़ा गया। मैं इस बहादुर माएअडकान को बचाने यहां आया हूं। यह मेरा पहला काम है। दूसरा काम है, एक दिन मैं भेड़ें चरा रहा था कि अचानक छह कलहंस मेरे सिर पर मंडराने लगे। इनमें से एक कलहंस का सोने का जूता मेरे हाथ लगा। कहा जाता है कि यह जूता आपके राज्य की ही चीज है, इसलिए मैं इसके मालिक को देने आया हूं।” यह कहते हुए गादवाई ने जूता देव-राजा को दे दिया।

देव-राजा ने कहा, “मेरे बेटे! मेरे हुक्म पर ही तुम्हारे गांव के गाय-भेड़ और घोड़ों के झुंडों को छीना और आपके बहादुर को पकड़ा गया। आपके बहादुर माएअडकान और उसकी पत्नी हमारे यहां हैं। माएअडकान जेल में बंद है। मैंने उससे कहा, ‘अगर तुम मेरे लिए काम करोगे तो मैं तुम्हें रिहा कर दूंगा।’ मगर वह एक ऐसा बहादुर है, जिसने सिर झुकाना नहीं सीखा। उसने कहा, ‘मैं दुश्मन के लिए किसी भी तरह का काम करने को तैयार नहीं।’ अगर मैं उसे रिहा करूं तो हमसे बदला वह अवश्य लेगा। वह इतना अटल आदमी है।

“आपका नाम हमने पहले ही सुना था और हम आपको निमंत्रण देना चाहते थे, ताकि आप उस अजीब सुमुलूअड पक्षी, जिसने हमारे बछेड़ों को चौपट किया है, का नाश कर सकें। मैं खुद आपको ढूंढ़ने गया। लेकिन आप मुझे न मिले। इसलिए मैंने जानबूझकर अपने सैनिकों को भेजकर आपके गांव में लूटखसोट करवाई और आपके बहादुर को पकड़वाया। मैंने मन ही मन सोचा कि अगर आप बहादुर हैं, तो जरूर उसे छुड़ाने यहां आएंगे। दो वर्ष बीत गए लेकिन आप नहीं आए, इसलिए मेरी छह बेटियां आपको ढूंढ़ने चली गईं। यह सोने का जूता मेरी छठी बेटी का है।

से देखती रही तथा उससे कहा, “आपने इतना लंबा रास्ता तय किया है। आप थक गए होंगे, कृपया मेरे घर आकर जरा आराम कीजिए!”

यह युवती के वेश में एक टोनहाई थी।

“हां बहुत थक गया हूं, इसलिए मुझे आराम करने में कोई एतराज नहीं। तुम मुझे साथ ले चलो!” गादवाई ने कहा।

युवती आगे चली जा रही थी। वह कुछ कहने ही वाली थी कि गादवाई ने हीरे से बनी तलवार से उसका सिर काट डाला। पलभर में ही तलवार से एक तेज प्रकाश निकला, फिर आकाश में घने बादल और कोहरा छा गए। कुछ समय बाद बादल और कोहरा छंट गए। जहां से वह युवती गुजरी थी वहां टोनहाई की लाश दो हिस्सों में कटी हुई पड़ी थी। गादवाई ने उसका सिर काटकर अपनी थैली में रख लिया।

“इस जगह टोनहाई का राज था, इसलिए कोई भी पक्षी या जानवर यहां से गुजर नहीं सकता था। अभी टोनहाई की हत्या के बारे में किसी को मालूम नहीं है। इसलिए वह ‘सुमुलूअड’ पक्षी यहां नहीं आ सकता। हम यहां चार दिनों तक आराम कर सकते हैं,” खरखूला घोड़े ने कहा।

इस प्रकार गादवाई ने वहां चार दिनों तक आराम किया। उसने टोनहाई की मूल्यवान चीजें ले लीं और वह सोने की नांद अपने घोड़े की पीठ पर रखकर सुनहरी पूंछों वाले सभी बछेड़ों को लेकर देव-राजा के पास सकुशल पहुंच गया।

देव-राजा को बेहद खुशी हुई और उसके स्वागत-सत्कार के लिए एक शानदार दावत दी गई। दावत के दौरान देव-राजा के दो बेटे खाली हाथ लौट आए, उन्हें कोई भी चीज नहीं मिली। वे दोनों थककर चूर हो गए थे।

देव-राजा ने गादवाई से उसके नाम और परिवार के बारे में पूछा तो गादवाई ने जवाब दिया कि “मैं देव-राजा नहीं हूं। मैं मनुष्यलोक का एक बेटा हूं। मेरा नाम गादवाई है। सब लोग मुझे खरखूला घोड़े का मालिक गादवाई कहकर पुकारते हैं। मैं यहां पर्यटन करने नहीं बल्कि एक खास

काम से आया हूं। अगर आप मुझे कहने कि इजाजत दें तो मैं अर्ज करूं।”

“कहो! मेरे बेटे!” देव-राजा ने कहा।

“कई वर्ष पहले आपके सैनिकों ने मेरी जन्मभूमि की लूटखसोट की और हमारे गाय-भेड़ें और घोड़ों के झुंडों को छीन लिया। माएअडकान नामक हमारा ‘बहादुर’ सोते समय सतर्क न था, इसलिए वह आपके सैनिकों द्वारा पकड़ा गया। मैं इस बहादुर माएअडकान को वचाने यहां आया हूं। यह मेरा पहला काम है। दूसरा काम है, एक दिन मैं भेड़ें चरा रहा था कि अचानक छह कलहंस मेरे सिर पर मंडराने लगे। इनमें से एक कलहंस का सोने का जूता मेरे हाथ लगा। कहा जाता है कि यह जूता आपके राज्य की ही चीज है, इसलिए मैं इसके मालिक को देने आया हूं।” यह कहते हुए गादवाई ने जूता देव-राजा को दे दिया।

देव-राजा ने कहा, “मेरे बेटे! मेरे हुक्म पर ही तुम्हारे गांव के गाय-भेड़ और घोड़ों के झुंडों को छीना और आपके बहादुर को पकड़ा गया। आपके बहादुर माएअडकान और उसकी पत्नी हमारे यहां हैं। माएअडकान जेल में बंद है। मैंने उससे कहा, ‘अगर तुम मेरे लिए काम करोगे तो मैं तुम्हें रिहा कर दूंगा।’ मगर वह एक ऐसा बहादुर है, जिसने सिर झुकाना नहीं सीखा। उसने कहा, ‘मैं दुश्मन के लिए किसी भी तरह का काम करने को तैयार नहीं।’ अगर मैं उसे रिहा करूं तो हमसे बदला वह अवश्य लेगा। वह इतना अटल आदमी है।

“आपका नाम हमने पहले ही सुना था और हम आपको निमंत्रण देना चाहते थे, ताकि आप उस अजीब सुमुलूअड पक्षी, जिसने हमारे बछेड़ों को चौपट किया है, का नाश कर सकें। मैं खुद आपको ढूंढ़ने गया। लेकिन आप मुझे न मिले। इसलिए मैंने जानबूझकर अपने सैनिकों को भेजकर आपके गांव में लूटखसोट करवाई और आपके बहादुर को पकड़वाया। मैंने मन ही मन सोचा कि अगर आप बहादुर हैं, तो जरूर उसे छुड़ाने यहां आएंगे। दो वर्ष बीत गए लेकिन आप नहीं आए, इसलिए मेरी छह बेटियां आपको ढूंढ़ने चली गईं। यह सोने का जूता मेरी छठी बेटी का है।

अब मैं आपके सामने यह शर्त रखता हूँ कि दुनिया में सात सिरों वाले पिशाच, सफेद शेर और एक टोनहाई मौजूद हैं। आप जाओ, उनकी हत्या करो, उनके सिर काटकर यहां लाओ। अगर आप ये काम कर सके तो मैं आपके बहादुर माएअडकान को रिहा कर दूंगा तथा आपके गांव के मवेशी भी लौटा दूंगा। साथ ही अपनी छोटी बेटी की शादी आपसे कर दूंगा।”

यह सुनकर गादवाई ने घोड़े की पीठ पर रखी थैली में से सफेद शेर के दांत, टोनहाई का सिर और सात सिरों वाले पिशाच की आंखें देव-राजा के सामने पेश कीं। देव-राजा यह देखकर फूले अंग न समाया और गादवाई को बहुत धन्यवाद दिया। अंत में उसने माएअडकान दंपति व पकड़े गए सभी लोगों को रिहा किया, अपहृत मवेशी लौटा दिए और अपनी छोटी बेटी की शादी गादवाई से की। साथ ही एक भव्य विवाह-समारोह का आयोजन किया गया। अंत में उसने गादवाई को बहुत धन-दौलत दी और उसे अपने घर पर पहुंचाया। गादवाई ने इन मवेशियों को उनके मालिकों को लौटा दिया।

गांववासी गादवाई को देखकर बहुत खुश हुए। उन्होंने उसकी वापसी की खुशी में एक शानदार भोज दिया। जब तक गादवाई जीवित था तब तक किसी भी दुश्मन में उसकी जन्मभूमि पर आक्रमण करने का दुस्साहस न हुआ।

लंबे बालों वाली बहन

(तुड़ जाति की लोककथा)

ऊंचे पर्वत की ढलान पर एक बड़ा झरना बहता था - ऐसा लगता था जैसे किसी सुंदर महिला ने अपने लंबे सफेद बाल फैला रखे हों। इस झरने के निकलने के बारे में भी एक लंबे बालों वाली बहन की कहानी प्रचलित होने की वजह से स्थानीय लोग इसे "सफेद बालों वाला झरना" कहते थे।

बहुत पहले की बात है कि उस ऊंचे पर्वत के आसपास पानी नहीं था। स्थानीय लोगों को पीने और सिंचाई के पानी के लिए वर्षा पर निर्भर करना पड़ता था। बारिश न होने पर तीन मील के फासले पर एक छोटी सी नदी से पानी लाना पड़ता था। इसलिए यहां पानी तेल की ही तरह कीमती था।

ऊंचे पर्वत के नजदीक एक गांव था। वहां एक सुंदर युवती रहती थी। उसके काले और लंबे बाल पैरों को छूते थे। इसलिए लोग उसे "लंबे बालों वाली बहन" कहकर पुकारते थे।

उस युवती के घर में मां के अलावा और कोई नहीं था। उसे भी लकवे की वजह से चारपाई पर लेटे रहना पड़ता था। युवती के सूअर पालने से ही गुजारा चलता था।



वह युवती हररोज तीन मील दूर से पानी लाती और उसे सूअरों के चारे के लिए जंगली सब्जियां इकट्ठा करने के लिए ऊंचे पर्वत पर चढ़ना पड़ता था। वह सुबह से शाम तक इसी तरह व्यस्त रहती थी।

एक दिन वह बांस की टोकरी लेकर जंगली सब्जियां बटोरने के लिए ऊंचे पर्वत पर चढ़ रही थी। रास्ते में उसने एक खड़ी चट्टान पार की तो उसे वहां शलगम का एक पौधा दिखाई दिया। उसकी पत्तियां इतनी हरी-भरी थीं कि वह सुंदर बालों वाली युवती को पसंद आ गया। उसके मन में आया कि वह उसे उखाड़कर घर ले जाए तो उबालकर खाने में

बहुत मजा आएगा। इसलिए उसने उसे जोर से खींचा। प्याले जितना बड़ा एक लाल शलगम उखड़कर उसके हाथ में आ गया, और चट्टान में एक गोलाकार गढ़ा बन गया और उसमें साफ पानी उमड़ने लगा। अचानक “सर्र” की आवाज के साथ शलगम उसके हाथ से निकल गया। फिर “सर्र” की आवाज हुई और शलगम ने उस गढ़े को बंद कर दिया। इस तरह पानी बाहर न निकल सका।

लंबे बालों वाली बहन को बहुत प्यास लगी थी। इसलिए उसने फिर शलगम उखाड़ा और गढ़े के पास अपना मुंह ले जाकर काफी पानी पिया। वह पानी नाशपाती के रस की तरह बहुत मीठा था। उसने गढ़े के पास से अपना मुंह हटाया तो “सर्र” की आवाज के साथ शलगम उसके हाथ से निकला और फिर उस गढ़े को बंद कर और उसे भर दिया।

लंबे बालों वाली बहन चट्टान को गौर से देखती रही। अचानक जबरदस्त झंझावात आया और उसे उड़ाकर एक गुफा में ले गया।

गुफा में चबूतरे पर एक आदमी बैठा था। उसका सारा शरीर पीले रोंधों से भरा हुआ था। उसने गुस्से में कहा, “तुम्हें इस पहाड़ी पानी का पता चल गया है। तुम किसी को यह न बताना। अगर तुमने किसी को बताया और दूसरे लोग यहां पानी लेने आए तो मैं तुम्हें मार डालूंगा। मैं पर्वत-दानव हूं। मेरी यह बात तुम याद रखना!”

फिर एक झंझावात ने उसे तलहटी में पहुंचा दिया। लंबे बालों वाली बहन चुपचाप घर पहुंची। उसमें पहाड़ पर मिले पानी के बारे में दूसरों को तो क्या, अपनी मां को भी बताने की हिम्मत नहीं थी।

बाद में उसने देखा कि खेत सूखते जा रहे हैं और उनकी सिंचाई करने के लिए लोगों को हररोज बाल्टियों में पानी लाने तीन मील दूर जाना पड़ता है। वे इतनी मेहनत करने से पसीने से तर-ब-तर हो जाते और थकावट की वजह से उनकी सांस भी फूलने लगती। इस पर उसने मन ही मन सोचा, “अगर मैं गांव वालों को पहाड़ से पानी हासिल करने के लिए शलगम का पौधा उखाड़ने से वहां बनने वाले गढ़े को खोदकर बड़ा करने से झरना

वहने की बात बता दूं तो कैसा रहेगा ?” लेकिन निर्दयी पीले रोयों वाले पर्वत-दानव की याद आते ही उसने खामोश रहना ही बेहतर समझा ।

लेकिन वह उनके इस दुख के गम में खा-पी या सो भी नहीं पाती थी । वह गुमसुम रहने लगी । उसकी आंखों की चमक गायब हो गई, खूबसूरत गुलाबी चेहरा पीला पड़ने लगा और बाल भी पकने शुरू हो गए ।

एक दिन लंबे वालों वाली वहन की मां ने उसके हाथ थामकर पूछा, “बेटी, तुम्हारी यह क्या हालत बन गई है ? क्या तुम बीमार हो ?” लेकिन वह जवाब में सिर्फ अपने होंठ चवाते हुए खामोश रही ।

वह हमेशा उदास रहने लगी । धीरे धीरे उसके बाल पूरी तरह सफेद हो गए । बाल संवारने में भी मन नहीं लगता था । उसके बाल पूरे शरीर पर इधर-उधर बिखरे रहते । “कितनी अजीब बात है ! इतनी नौजवान लड़की के बाल क्यों सफेद हो गए हैं !” लोग दबी जवान से बातचीत करते ।

वह चुपचाप अपने दरवाजे पर खड़ी आने-जाने वालों को देखती रहती । एक दिन वह धीमी आवाज में बोली, “ऊंचे पर्वत पर...” इतना ही कहने के बाद वह दांतों से अपने होंठ काटने लगी ।

फिर एक दिन दरवाजे पर खड़ी युवती ने एक सफेद दाढ़ी वाले बुजुर्ग को देखा । वह नदी से पानी से भरी दो बाल्टियां उठाए लड़खड़ाते हुए चले आ रहे थे । अचानक एक पत्थर से ठोकर खाकर वह जमीन पर गिर पड़े । इससे सारा पानी वह गया और बाल्टियां भी खराब हो गईं । उनके पैर में चोट लगी और खून बहने लगा ।

लंबे वालों वाली वहन ने फौरन उस बुजुर्ग को खड़ा होने में सहारा दिया । साथ ही उसने अपना कपड़ा फाड़कर उनकी मरहमपट्टी भी की । बुजुर्ग आहें भर रहे थे तो उसने गौर से उन्हें देखा — दर्द से उनकी आंखें भिंची जा रही थीं और झुर्रियों से भरा हुआ उनका चेहरा पीला हो गया ।

लंबे वालों वाली वहन ने अपने आपसे कहा, “लंबे वालों वाली वहन, तुम मौत से इतना क्यों डरती हो ? तुम्हारे मौत से डरने की वजह से

खेत सूख गए हैं, सूखे से फसलें मारी गई हैं। सारे गांव के लोगों में पानी के लिए त्राहि त्राहि मची हुई है। इसके अलावा बुजुर्ग के गिरने से उनके चोट भी लगी है। तुम पर्वत पर पानी होने का रहस्य क्यों छिपा रही हो?"

उससे चुप न रहा गया। एकाएक उसने बुलंद आवाज में बुजुर्ग से कहा, "दादा, ऊंचे पर्वत पर पानी है! शलगम का पौधा उखाड़कर फिर उसके टुकड़े टुकड़े कर दें और उसके गढ़े के मुंह को खोदकर बड़ा करने की ही जरूरत है। तभी झरना पर्वत के नीचे बहने लगेगा। सच! मैंने खुद अपनी आंखों से देखा है।"

बुजुर्ग ने अभी इस बात का कोई जवाब भी नहीं दिया था कि वह गांव में इधर-उधर दौड़ते हुए जोर जोर से चिल्लाने लगी, "ऊंचे पर्वत पर पानी है! सब लोग जल्दी वहां चलें!" इस तरह उसने पानी का पता लगाने की घटना लोगों को सुनाई, लेकिन पर्वत-दानव की बात फिर भी छिपाए रखी।

गांव में लंबे बालों वाली बहन नेक लड़की मानी जाती थी। इसलिए सब लोगों ने उसकी बात पर विश्वास किया और चाकू व इस्पाती छेनियां लेकर उसके साथ ऊंचे पर्वत पर चढ़ गए और खड़ी चट्टान भी पार की। लंबे बालों वाली बहन ने दोनों हाथों से शलगम का पौधा उखाड़कर पत्थर पर पटका और बोली, "झटपट इसके टुकड़े टुकड़े कर दो।"

लोगों ने शलगम का कीमा बना दिया। पौधे के गढ़े से पानी निकलने लगा। मगर गढ़ा प्याले जितना छोटा था, इसलिए ज्यादा पानी नहीं बह पाया।

लंबे बालों वाली बहन ने फिर कहा, "जल्दी से छेनियों से खोदो! इस गढ़े को खोदकर बड़ा करो! जल्दी करो!"

इस्पाती छेनियों से खोद-खोदकर उस गढ़े को बाल्टी या मिट्टी के मटके जितना बड़ा बना दिया गया। झरने का उमड़ता पानी कलकल करता पर्वत की ढलान से तलहटी की ओर बहने लगा। गांव वाले फूले न समाए।

ठीक उसी समय अचानक झंझावात आया और लंबे वालों वाली वहन गायब हो गई। सब लोग झरने का पानी देखकर खुश हो रहे थे, इसलिए उन्होंने युवती गायब होने पर कोई ध्यान न दिया। बाद में किसी ने पूछा, “लंबे वालों वाली वहन कहां है?” कुछ लोगों ने जवाब दिया, “वह पहले घर लौट गई होगी। शायद वह अपनी बीमार मां को यह खुशखबरी बताने चली गई है!”

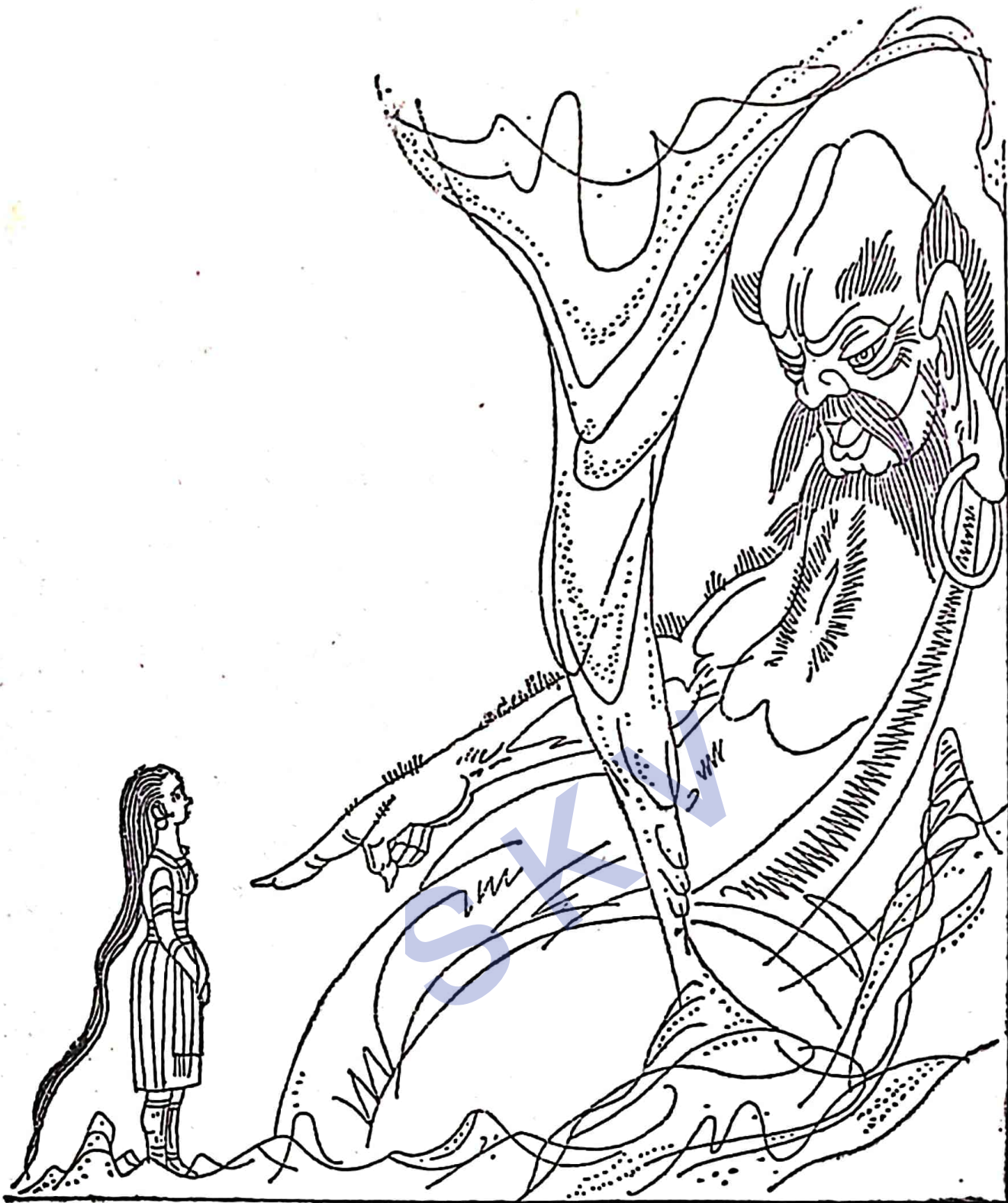
सब लोग खुशी से खड़ी चट्टान को पारकर पर्वत की तलहटी की ओर चले गए। मगर लंबे वालों वाली वहन घर नहीं लौटी। दरअसल, पर्वत-दानव ने उसे पकड़ लिया था। वह गरजता हुआ बोला, “तुम्हें पहले ही चेतावनी दी थी कि किसी को यहां पानी होने की बात न बताना। तुमने लोगों के साथ मिलकर शलगम का कीमा बनाकर गढ़े के मुंह को खोदकर बड़ा क्यों किया? अब मैं तुम्हें मार डालूंगा!”

लंबे वालों वाली वहन ने भावशून्य मुद्रा में जवाब दिया, “मैं अपने गांव वालों के सुखी जीवन के लिए मरने को तैयार हूं!”

यह सुनकर पर्वत-दानव बौखलाहट में बोला, “अच्छा, तो तुम मरने से नहीं डरती हो? मैं तुम्हें यातनाएं दे-देकर मारूंगा! तुम्हें बड़ी खड़ी चट्टान पर लिटाकर, झरने की तेज धाराओं को तुम्हारे शरीर पर थपेड़े लगाने दूंगा। और यह लंबे अरसे तक जारी रखूंगा।”

लंबे वालों वाली वहन ने कहा, “सब लोगों की खातिर मैं यातनाएं सहने के लिए तैयार हूं। लेकिन सिर्फ एक अनुरोध है कि मुझे एक बार घर लौटने दें ताकि अपनी बीमार मां की देखभाल करने और सूअर पालने का काम किसी दूसरे को सौंप सकूं।”

पर्वत-दानव ने सोच-विचार करके कहा, “अच्छा, मैं तुम्हें घर जाने देता हूं। अगर तुम वापस न आई, तो मैं झरने के मुंह को बंद कर दूंगा और सारे गांववालों को मार डालूंगा! तुम आते ही फौरन खड़ी चट्टान पर लेट जाना। तेज जल-धाराएं तुम्हारे शरीर पर से बहेंगी तो बाद में तुम मुझे कष्ट नहीं दे पाओगी!”



लंबे बालों वाली बहन ने सिर हिलाते हुए यह शर्त स्वीकार की। फिर अचानक एक झंझावात आया और उसे लपेटकर पर्वत की तलहटी में पहुंचा गया।

युवती ने देखा कि पर्वत से झरने का पानी कलकल करके नीचे बह रहा है और खेतों की सिंचाई होने से फसलें हरी-भरी हो गई हैं। यह उसके लिए भी खुशी की बात थी!

वह घर पहुंची लेकिन उसमें मां को सच्ची बात बताने का साहस न था। उसने कहा, “अम्मा, ऊंचे पर्वत से पानी नीचे की ओर बहने लगा है। अब हमारे गांव वाले कभी पानी के लिए त्राहि त्राहि नहीं करेंगे।” फिर उसने आगे कहा, “अम्मा, वगल के गांव की सहेलियों ने मुझे बुलाया है। मैं कुछ दिनों के लिए उनके साथ घूमने बाहर जाऊंगी। आपकी देखभाल और सूअर पालने का काम मैं पड़ोस की एक चाची को सौंप देना चाहती हूँ।”

उसकी मां ने मुस्कराते हुए उसकी बात मान ली।

फिर वह युवती पड़ोस की एक चाची से मिलने गई और उसने अपने घर का कामकाज उन्हें सौंप दिया। फिर घर लौटकर अपनी मां से कहा, “अम्मा, मैं शायद लगभग दस दिनों के लिए घूमने जा रही हूँ! आप...”

उसकी मां ने कहा, “तुम खुशी से घूमने जाओ! पड़ोस की चाची नेक औरत हैं, वह मेरी देखभाल कर सकेंगी।” युवती अपनी मां के हाथों तथा चेहरे को पलос रही थी तो उसकी आंखें डबडबाने लगीं।

फिर वह सूअरों के बाड़े में गई और उसने छोटे सूअर के सिर और उसकी पूंछ पर हाथ फेरा। तभी उसकी आंखें भर आईं।

उसने दरवाजे से ही कहा, “अम्मा, मैं जा रही हूँ!” उसकी मां अभी उत्तर भी नहीं दे पाई थी कि वह ऊंचे पर्वत की ओर बढ़ने लगी।

रास्ते में सघन पत्तों वाला एक बड़ा बरगद नजर आया। फिर उसने पेड़ के तने पर हाथ फेरते हुए कहा, “बरगद साहब, बाद में मैं आपके नीचे हवाखोरी नहीं कर सकूंगी!”

अचानक बड़े बरगद के पीछे से एक ऊंचे कद वाले बुजुर्ग आए। उनके वालों और दाढ़ी का रंग हरा था और उन्होंने हरे कपड़े पहने हुए थे। उन्होंने कहा, “लंबे वालों वाली बहन, तुम कहां जा रही हो?” युवती की आह निकली और वह अपना सिर नीचा करके खामोश ही रही।

बुजुर्ग ने कहा, “मुझे तुम्हारे बारे में सब मालूम हो गया है। तुम नेक लड़की हो। मैं तुम्हें बचाने के लिए तैयार हूँ, इसलिए मैंने तुम्हारी शक्ल

जैसी एक प्रस्तरमूर्ति तराशी है। तुम बरगद के पीछे जाकर देखो !”

लंबे बालों वाली वहन ने बरगद के पीछे जाकर देखा कि उस जैसे ही रूप-रंग वाली एक प्रस्तरमूर्ति तराशी हुई है लेकिन उसके सिर पर बाल नहीं हैं। यह देखकर वह अवाक रह गई।

बुजुर्ग ने कहा, “पर्वत-दानव तुम्हें खड़ी चट्टान पर लिटाकर जल-धाराओं के थपेड़ों से यातनाएं देगा। तुम ये यातनाएं कैसे सह पाओगी ? मैं इस प्रस्तरमूर्ति को खड़ी चट्टान पर ले जाऊंगा और वह तुम्हारी जगह यातनाएं भोगेगी। लेकिन उसके सिर पर सफेद बालों की कमी है। बेटी, तुम्हारे सफेद बाल काटकर इस प्रस्तरमूर्ति के सिर पर चिपका दें। इससे पर्वत-दानव को शक न होगा।” बुजुर्ग ने यह कहकर फौरन युवती के सफेद बाल काटकर प्रस्तरमूर्ति के सिर पर चिपका दिए। अजीब बात यह थी कि ये बाल बड़ी अच्छी तरह उसके सिर पर लग गए। लंबे बालों वाली वहन का सिर गंजा हो गया, पर प्रस्तरमूर्ति के सिर पर लंबे सफेद बाल उगने लगे।

बुजुर्ग ने मुस्कराते हुए कहा, “बेटी, तुम घर लौट जाओ। अब गांव के खेतों की सिंचाई के लिए पानी है। तुम गांव वालों के साथ मेहनत से काम करो ! बाद में गांव के लोगों का जीवन धीरे धीरे बेहतर हो जाएगा।” यह कहकर वह प्रस्तरमूर्ति उठाकर तेजी से ऊंचे पर्वत की ओर चले गए। उन्होंने उस मूर्ति को खड़ी चट्टान पर रखा, जल-धाराएं उसके शरीर से होकर उसके बालों के सहारे पर्वत से नीचे बहती रहीं।

लंबे बालों वाली वहन बरगद के सहारे हैरान सी खड़ी रही। उसे सिर पर खुजलाहट महसूस हुई। उसने हाथ से सिर सहलाया और पाया कि उसके सिर पर बाल उग आए हैं। और फिर ये बाल बहुत लंबे भी थे। उन्हें गौर से देखा तो वे एकदम काले थे। वह खुशी के मारे उछल पड़ी।

वह बरगद के नीचे काफी अरसे तक हरे कपड़े पहने हुए बुजुर्ग का इंतजार करती रही, लेकिन उनका साया तक भी नजर नहीं आ रहा

था। अचानक मंद वयार चलने लगी। वरगद की झूमती हुई टहनियों से आवाज निकली, “लंबे वालों वाली वहन, पर्वत-दानव धोखा खा गया है। तुम घर लौट जाओ!”

लंबे वालों वाली वहन को ऊंचे पर्वत से नीचे की ओर वहता झरना, पर्वत की तलहटी में हरी-भरी फसलें, खेतों में खुश लोग और हरियाले वरगद को देखकर बहुत खुशी हुई। वह अपने सुंदर और काले बाल कंधे पर फैलाए हुए उछलती हुई घर लौट गई।

मोला

(यूगुर जाति की लोककथा)

बहुत समय पहले यूगुर जाति के लोग अपने गाय-बैलों, भेड़-बकरियों और ऊंटों के साथ दलदली और घास के मैदानों वाले गोबी रेगिस्तान से गुजरकर दूरदराज शिनच्याङ से कानसू प्रांत की छील्येन पर्वतमाला की तलहटी में पहुंचे।

छील्येन पर्वतमाला की तलहटी में विशाल चरागाह फैला हुआ था। वहां हट्टे-कट्टे मवेशी इधर-उधर चरते और चरवाहे सुखी जीवन बिताते थे। लेकिन तलहटी में एक बड़ी हिमगुफा थी और उसमें एक हिमदानव रहता था। वह अक्सर उत्पात मचाता और चरागाह के लोगों के लिए मुसीबतें खड़ी करता रहता था।

हिमदानव को गुस्सा आता तो हिमगुफा से सफेद कोहरा निकलने लगता और उसके बाद एक घंटे में ही ऐसा बर्फीला तूफान आता जो दस या पंद्रह दिन तक थमने का नाम न लेता। इसी तरह के एक तूफान की वजह से चरागाह वर्ष की मोटी परतों से ढका हुआ था, ईंधन की लकड़ियां नहीं थीं, मवेशियों के लिए घास नहीं थी और कड़ाके की सर्दी में मेमने और वछड़े ठिठुरकर मर गए!

लोगों ने हिमदानव की बहुत पूजा की, लेकिन उस पर कोई असर न पड़ा। यह देखकर मोला नामक एक लड़के को बहुत गुस्सा आया। एक दिन उसने अपने दादा से पूछा, “दादा जी, हिमदानव इतना खूंखार है, तो उसे किसी ने मारा क्यों नहीं?”

दादा ने सिर हिलाकर कहा, “मोला, हिमदानव बहुत भयानक है। उसे मारने की किसी में हिम्मत नहीं है!”

“दुनिया में उसे हराने वाली कोई ताकत नहीं है क्या?”

“सिर्फ सूर्यदेव उसको हरा सकते हैं। लेकिन वह पूर्व सागर में रहते हैं। इतनी दूर सूर्यदेव से दानव को हराने का उपाय पूछने के लिए कौन जाएगा?”

दादा की बात सुनकर मोला अपनी छाती ठोकते हुए दृढ़ता से बोला, “सूर्यदेव के बताए तरीके से हिमदानव को हराया जा सकता है तो मैं हर तरह की कठिनाइयों का सामना करके जरूर उनसे मिलने जाऊंगा।”

चरागाह के लोगों ने मोला के सूर्यदेव से मिलने जाने की बात सुनी तो वे उसे विदा करने आए। नदी के पूर्वी किनारे के एक बूढ़े चरवाहे ने उसे एक जादुई घोड़ा भेंट किया। वह एक दिन में दस हजार ली तय कर सकता था। पश्चिमी किनारे की एक बूढ़ी दादी ने मोला को एक जादुई कपड़ा दिया। वह पानी से बचा सकता था। दक्षिणी पहाड़ के एक शिकारी ने जादुई तीरों का एक बंडल मोला को दिया। उत्तरी पहाड़ की एक ग्वालिन ने अपना एक चाबुक उसे प्रदान किया। लोगों की हर्षध्वनि में बहादुर मोला ने जादुई तीरों का बंडल पीठ पर बांधा, जादुई कपड़ा संभाला और चाबुक लेकर जादुई घोड़े की पीठ पर सवार होकर पूर्व की ओर रवाना हो गया।

मोला ने हजार ली लंबे चरागाह से गुजरने के बाद हजारों बर्फीले पहाड़ों को पार किया। दौड़ते दौड़ते अचानक सामने एक सीधी चट्टान नजर आई। उसने रास्ता रोक दिया था। यह चट्टान “नुकीली चट्टान” कहलाती थी। चट्टान का निचला भाग जमीन में घुसा हुआ और ऊपरी

भाग वादलों को छूता था। जादुई घोड़ा चट्टान के इस ओर चक्कर लगाता रहा लेकिन आगे नहीं बढ़ पाया। कोई उपाय न सूझ रहा होने से मोला बहुत परेशान था। उसी समय आकाश में उड़ रहा एक चंडूल चहचहाने लगा :

मोला भैया, मोला भैया !

उड़ सकता है जादुई घोड़ा आकाश में,
इस्तेमाल करो चाबुक थोड़ा।

मोला ने जोर से चाबुक फटकारा। वज्रपात जैसी आवाज के साथ चाबुक का एक सिरा लंबा खिंचकर वादलों में घुस गया और घोड़े पर बैठा मोला भी आकाश में पहुंच गया।

मोला जादुई घोड़े पर पूर्व की ओर आगे बढ़ने लगा। पता नहीं उसने कितना रास्ता तय किया? चलते चलते उसके सामने एक बड़ा जंगल दिखाई देने लगा। इस जंगल का नाम “हेडू जंगल” (काला बाघ जंगल) था। वहां एक काला बाघदानव रहता था। बाघदानव अजनबी आदमी को देखते ही गरजकर मोला की ओर लपक पड़ा। जादुई घोड़ा चौंका और मुड़कर पश्चिम की ओर दौड़ने लगा। बाघदानव ने तेजी से उसका पीछा करना शुरू कर दिया। देखते देखते वह दानव मोला के नजदीक पहुंच गया। इस नाजुक घड़ी में वह चंडूल फिर चहचहाने लगा :

मोला भैया, मोला भैया !

बाघदानव बहादुर को घायल नहीं कर सकता।

तुम तीर इस्तेमाल क्यों नहीं करते ?

मोला ने बाघदानव को निशाना बनाकर जादुई तीर छोड़ा और वह गरजते हुए जमीन पर गिरकर मर गया।

मोला फिर पूर्व की ओर आगे बढ़ने लगा। लंबा रास्ता तय करने के बाद अंत में पूर्व सागर के तट पर पहुंच गया। काफी दूरी पर लाल रोशनी में सूर्यदेव का महल जगमगा रहा था। लेकिन सागर बहुत बड़ा और लहरें तेज थीं। जादुई घोड़ा उसको पार नहीं कर पा रहा था। मोला

परेशान था। अचानक चंडूल फिर उसके सिर के ऊपर चहचहाने लगा :
मोला भैया, मोला भैया !

वहादुर नाजुक घड़ी में परेशान नहीं होते,
तुम जादुई कपड़ा इस्तमाल क्यों नहीं करते ?

मोला जादुई कपड़ा ओढ़कर चाबुक हिलाते हुए घोड़े समेत सागर में कूद पड़ा। सागर में कूदते ही उसका पानी दो भागों में बंट गया और बीच में एक रास्ता बन गया। पानी की लहरें भी पीछे हट गईं। जादुई घोड़ा सीधे सूर्यदेव के महल के फाटक पर पहुंच गया। फाटक पर एक देवी पहरा दे रही थी। वह सूर्यदेव की शिष्या थी। बहुत कम उम्र वाली देवी ने रंगीन कपड़े पहने हुए थे और वह बहुत खूबसूरत भी थी। उसने दूर से एक अजनबी आदमी को घोड़े पर सवार होकर छिछले पानी में से तेजी से महल के फाटक की ओर आते देखा तो वह बड़ी ऊंची आवाज में चिल्लाई, “हाए ! अंधाधुंध न बढ़ो ! जादू देखो !” यह कहकर उसने एक वाज छोड़ दिया। वह वाज मोला पर झपटना चाहता था। मोला ने तीर चलाकर उसे मार डाला। जादुई घोड़ा उछलकर सीधे फाटक की ओर लपका। वह देवी चौंककर बचाव के लिए फाटक के अंदर भाग गई और फाटक बंद कर लिया। मोला घोड़े की पीठ पर से उतरकर मुक्के से फाटक पर जोर से दस्तक देते हुए ऊंची आवाज में चिल्लाया :

सूर्यदेव ! फाटक खोलिए !

चरागाह की जनता मुसीबत में है !

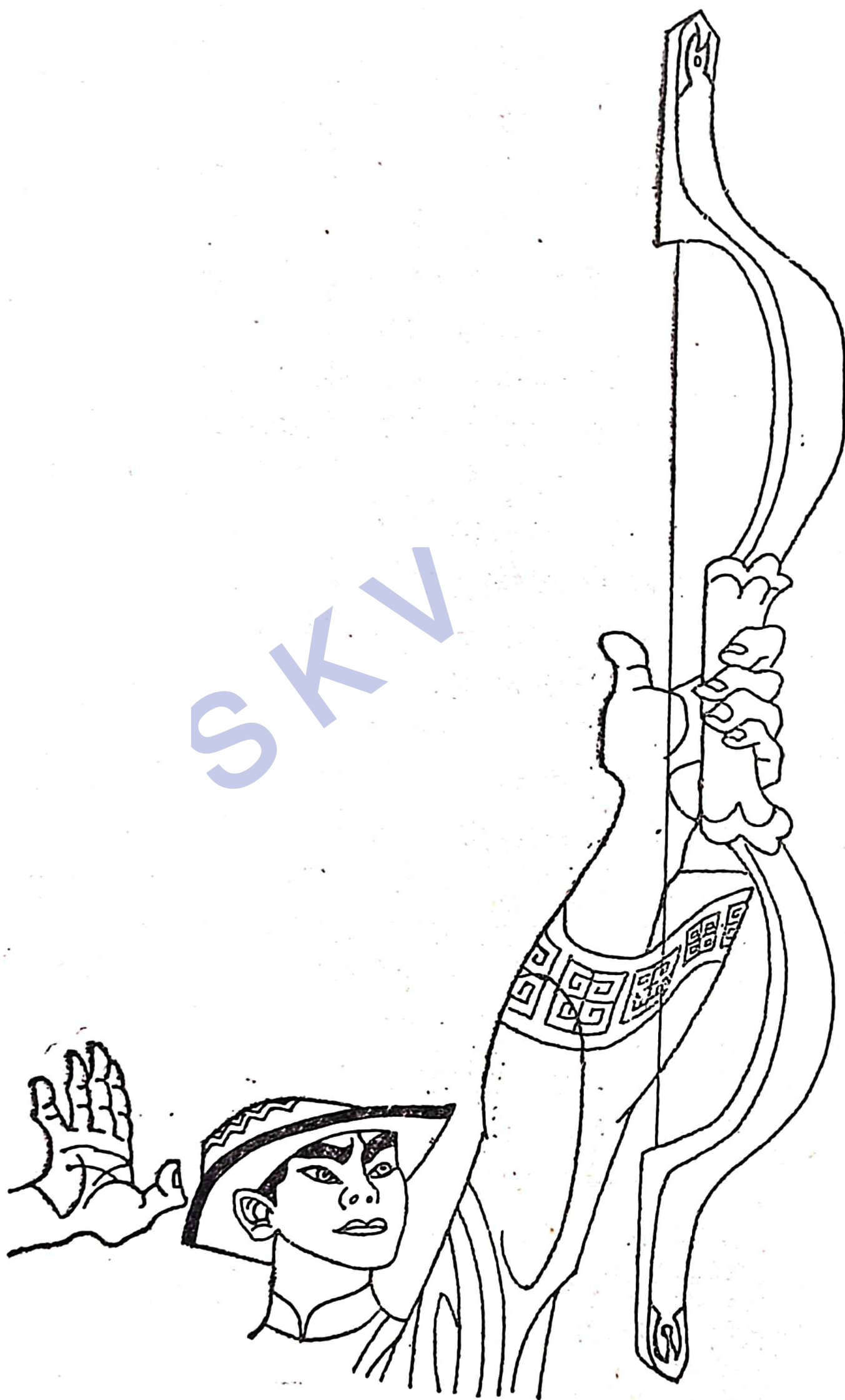
दानव को पराजित करने के जादू की प्रार्थना करने आया हूं !

वह तीन दिन तीन रात तक जोर से फाटक खटखटाता और चिल्लाता रहा। उसके हाथ पर चोट लगी और खून बह निकला। चिल्लाने की वजह से उसका गला भी बैठ गया। अंत में सूर्यदेव प्रभावित हो गए। उन्होंने फाटक पर पहरा दे रही देवी को मोला को अंदर आने देने का हुक्म दिया। देवी ने फाटक खोल दिया और उसे सूर्यदेव के पास ले गई। सूर्यदेव ने लाल गाउन पहना और सोने का मुकुट लगाया हुआ था। वह

सोने के पंखे से हवा कर रहे थे और उनके शरीर से सुनहरी जगमगाती किरणें निकल रही थीं। उनका प्रकाश इतना तेज था कि आंखें नहीं खुल पा रही थीं। उन्होंने एक मीटर लंबी लाल दाढ़ी थामते हुए मुस्कराकर कहा, “बहादुर लड़के ! तुम्हारे आने का उद्देश्य मैं समझ गया। अब मैं तुम्हें एक जादुई तूंबड़ी उधार देता हूँ और उसे छोड़ने व लौटाने का मंत्र फूंकना सिखाया जाएगा। तुम हिमदानव को पराजित करने के बाद तूंबड़ी मुझे वापस कर देना ! फिर मैं तुम्हें शिष्य के तौर पर अपने पास रखूंगा।” यह कहकर उन्होंने अपनी कमर पर बंधी एक चमचमाती लाल तूंबड़ी मोला को दी और मंत्र सिखाने के लिए फाटक पर पहरा देने वाली देवी को हुक्म दिया। मोला सूर्यदेव को धन्यवाद देकर देवी के साथ फाटक पर आया। फाटक पर बंधा उसका जादुई घोड़ा बिलकुल सफेद हो चुका था। उसे बहुत ताज्जुब हुआ और उसने पूछा कि इसका क्या कारण है। देवी बोली, “यहां का एक दिन मनुष्यलोक के एक साल के बराबर है। तुम्हें यहां आए चार दिन हो गए। इसलिए तुम्हारा घोड़ा भी बूढ़ा हो गया है।”

मोला यह सुनकर बहुत परेशान हुआ। उसने देवी से जल्दी जल्दी मंत्र सिखाने की प्रार्थना की। वह मंत्र लंबा तो नहीं था लेकिन याद करने में बहुत मुश्किल था। तूंबड़ी छोड़ने का मंत्र अस्सी बार बोलने के बाद मोला उसे याद कर पाया। इसके बाद देवी ने तूंबड़ी लौटाने का मंत्र मोला को सिखाया। लेकिन मोला बहुत परेशान दिख रहा था। वह यह सोचकर परेशान था कि उसे अपनी जन्मभूमि छोड़े कई साल हो गए और इस बीच पता नहीं हिमदानव ने चरागाह को कितनी बड़ी मुसीबतों में डाला होगा। उसे खत्म करने के लिए वह फौरन वापस जाना चाहता था। इसलिए उसने तूंबड़ी लौटाने का मंत्र भी प्रयत्न से सीख लिया और उसे चालीस बार बोलकर याद कर लिया। वह फिर देवी से विदा लेकर घोड़े पर सवार होकर चल पड़ा।

हिमदानव को खत्म करने का जादू हासिल करने के लिए मोला के



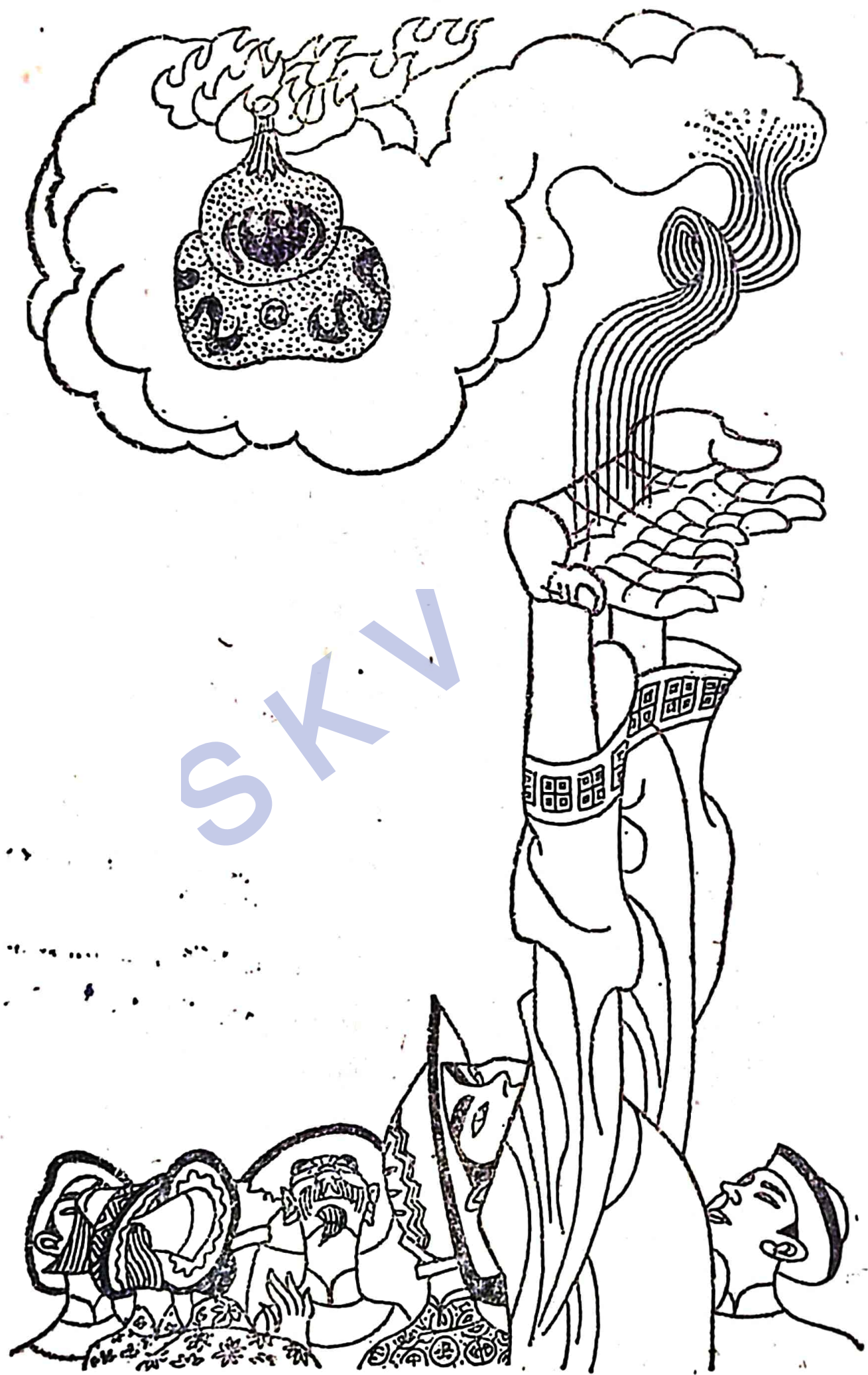
जाने के बाद गांववासी दिन-रात उसके लौटने का इंतजार करते रहे। लेकिन कई साल बीतने पर भी वह नहीं लौटा। इसलिए लोग निराश होकर बोले, “हाय ! शायद बेचारा मोला अब कभी नहीं लौट सकेगा !”

आठ साल बाद जाड़ों में मोला धूल-धूसर शरीर के साथ बड़ी मुश्किल से कदम उठाते हुए अपने गांव लौट आया। उसका घोड़ा बुढ़ापे और थकावट की वजह से रास्ते में ही मर गया था। बहादुर मोला ऊंचे पर्वत और लंबे फासले की परवाह न करके पैदल ही चलते हुए लौटा था।

मोला के अपनी जन्मभूमि लौटने के दूसरे ही दिन हिमदानव ने गुफा के अंदर से सफेद कोहरे का फव्वारा छोड़ा। इससे तूफान चलने लगा। मोला ने फौरन मंत्र पढ़ा और हाथ में जादुई तूंबड़ी लेकर तूफान का सामना करते हुए छील्येन पर्वतमाला की तलहटी की ओर चल पड़ा। गांववासी ढोल और घड़ियाल बजाते हुए उसके पीछे पीछे हौसला बढ़ाते हुए चल रहे थे।

मोला लंबे कदमों से पर्वत की तलहटी में पहुंचा और मंत्र जपते हुए जोर से चिल्लाया, “उठान !” फिर जादुई तूंबड़ी को आसमान की ओर छोड़ दिया। तूंबड़ी लाल रोशनी फेंककर आग के गोले की तरह हिमदानव की गुफा में घुस गई। पलभर में उस हिमगुफा में भीषण आग लग गई। वह खूंखार हिमदानव गुफा में जलकर राख हो गया।

हिमदानव मरने के बाद भी उस गुफा में आग भभकती रही। मोला ने मंत्र पढ़कर तूंबड़ी को लौटाना चाहा, तो वह दूसरा मंत्र भूल गया। गुफा में आग तीन दिन तीन रात तक धधकती रही। मोला बेहद परेशान था। उसे डर था कि आग फैलकर जंगल और चरागाह को जला डालेगी और गांववासियों के लिए नई मुसीबतें खड़ी हो जाएंगी। इसलिए वह पक्का इरादा करके तूंबड़ी को निकालने के लिए भभकती आग में कूद पड़ा। उसने आग बरसा रही तूंबड़ी का मुंह बंद कर दिया। आग धीरे धीरे बुझ गई। लेकिन बहादुर मोला आग में झुलसने से लाल पत्थर का पहाड़ बनकर चरागाह के छोर पर खड़ा रहा। यह पहाड़ हमेशा गरम रहता।



तत्कालीन नगर परिषद
गाँव, महु जिला-इन्दौर, (म.प्र.)

उस पर पेड़ या घास नहीं उगती थी। लेकिन उसकी गरमी से आसपास के कई वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में बर्फ पिघल गई। इसकी वजह से लाल पाण्याड नदी में पानी बढ़ गया। चरागाह में घास और ज्यादा भरपूर होने लगी। गाय-बैल और भेड़-बकरियाँ भी हूँट-पुँट थे। युगूर जाति की जनता सुखमय जीवन विताने लगी। शिकारी पहाड़ में शिकार करते और चरवाहे मवेशी चराते समय लाल पत्थर का पहाड़ देखकर दयालुता की भावना से ओतप्रोत होकर मोला को सलाम करते हैं !

ACCN-250

दान से प्राप्त

क्रमांक ... 28379

मा. श्री अ. के पु. इन्दौर

SKN

神 鸟

—中国民间故事选

丁 聪 蔡 荣 朱延令
沙更士 曾佑琯 何佩珠 插图
张世彦 张大羽

*

外文出版社出版

(中国北京百万庄路24号)

外文印刷厂印刷

中国国际图书贸易总公司

(中国国际书店) 发行

北京399信箱

1988年(大32开) 第一版

(印地)

ISBN 7-119-00529-4/I.60(外)

00520

10—H—1769 P

चीन से हिन्दी में
प्रकाशित
साहित्यिक रचनाएं

माओ त्सेतुङ की कविताएं
आशिमा (कविता)

वसन्त के रेशम के कीड़े माओ तुन
तूफान छाओ य्वी
फसल ये चि

टो हाउस (तीन अंकों का नाटक)
लाओ श

लाल ध्वजा के नीचे

— आत्मकथात्मक उपन्यास

लाओ श

समकालीन चीनी लेखिकाओं की
रचनाएं

गुलदाउदी आत्मा

(ल्याओचाए के चुने हुए किस्से)

फू सुङलिङ

महान स्वतंत्रता सेनानी

— डा० कोटनिस की स्मृति में

शङ श्येनकुङ तथा अन्य

लम्बे अभियान में अध्यक्ष माओ के
साथ (संस्मरण) छन छाङफङ

लम्बे अभियान में उपाध्यक्ष चओ
ऐन-लाइ के साथ (संस्मरण)

वेइ क्वोलू

विचित्र पंछी

चीन की लोककथाएं

(भाग 7)

चीन की हान, तिब्बती, मंगोल, उइगुर, कजाख, ह्वेइ, यूगुर, नाशी और तुङ नौ जातियों की तेरह लोककथाओं के इस संकलन में तिब्बती जाति की “शंखवाला” सोनावाला, चांदीवाला और शंखवाला तीन ऐसी बहनों के बारे में है जो अपने लिए वर हासिल करना चाहती हैं। सोनावाला एक भारतीय राजकुमार, चांदीवाला भीतरी प्रदेश के किसी राजकुमार और शंखवाला किसी नेक इंसान से शादी करना चाहती हैं। इस तरह शंखवाला भिखारी दिखने वाले एक नेकदिल आदमी को चुन लेती है लेकिन बाद में पता चलता है कि वह असल में एक राजकुमार ही है।

विदेशी भाषा प्रकाशन-गृह, पेइचिङ

ISBN 7-119-00529-4

C
8